दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय-चेतना

DIVIK RAMESH KRIT KAVYA NATAK KHAND-KHAND AGNI ME MITHKIYA CHETNA

SUBMITTED TO

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

IN partial fulfillment of the requirements for the award of degree of

MASTER OF PHILOSOPHY (M.PHIL.) IN HINDi

SUBMITTED BY

Baljinder Kaur

Regd.No.11512573

Department of Hindi

Lovely Professional University

SUPERVISED BY

Dr. Vinod Kumar

Department of Hindi

Lovely Professional University

FACULTY OF ARTS AND LANGUAGES

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PUNJAB

2016

घोषणा-पत्र

मैं बलजिंदर कौर घोषणा करता/ करती हूँ कि मैने 'दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय चेतना' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध डॉ. विनोद कुमार, असिस्टेंट प्रोफ़ैसर, स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है तथा यह मेरा मैलिक कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करता / करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत्त यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

दिनांक. 28-11-2016

नाम. बलजिंदर कौर
रजि. 11512573
एम. फ़िल. (हिन्दी)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/ श्री. बलजिंदर कौर ने 'दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय चेतना' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है। तथा जो इनका मैलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध को एम. फ़िल.(हिन्दी) की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत्त करने की संतुति प्रदान करता हूँ।

दिनांक. 28-11-2016

डॉ. विनोद कुमार (17203)
असिस्टेंट प्रोफ़ैसर,
स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़,
लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्राक्कथन

दुनिया के हर एक समाज का अपना-अलग इतिहास होता है। प्रत्येक समाज में अनेक प्रकार की घटनाएं घटित होती हैं। इन घटनाओं का मनुष्य के जीवन पर प्रभाव अवश्य पड़ता है, इन घटनाओं से ही मिथकों का जन्म होता है। मिथकों का उद्भव मनुष्य के उद्भव के साथ हुआ है। आज के युग में विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है, फिर भी आज का साहित्यकार अपने साहित्य में प्राचीन मिथकों का प्रयोग नवीन दृष्टि से करता है। मिथक का मतलब है- जो साधारण से विशिष्ट हो। मिथक वह होते हैं, जिन्हें इतिहास नहीं मानता। मिथकीय घटनाओं में समय का वर्णन नहीं किया होता। सभी घटनाएँ मिथकीय नहीं होती, केवल वह घटना ही मिथक होती है, जिसमें अतिप्राकृत गुण हो।

मिथकों का मानव-जाति के साथ गहरा सम्बन्ध है। मिथक मानव जाति के जीवन का एक विशिष्ट अंग है। मिथकों का प्रचलन तो प्राचीन काल से होता रहा है। चाहे आज हमनें बहुत उन्नति कर ली है, लेकिन यह बात कदापि नहीं कही जा सकती कि आज के संदर्भ में मिथकों का प्रयोग नहीं होता। आज भी हम अपनी बात को कोई ठोस आधार देने के लिए मिथकों का प्रयोग करते हैं, जैसे आज के स्त्री-पुरुष के प्रेम का वर्णन करना हो तो राधा-कृष्ण के प्रेम का मिथक उत्तम उदाहरण है। मिथकों का हमारी संस्कृति के साथ गहरा सम्बन्ध है। जब से सृष्टि का आरंभ हुआ है, तभी से मिथकों की सरंचना हुई है। मिथकों का उपयोग मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में होता है। मिथकों के उद्भव से मानव के मस्तिष्क का विकास होता है। मिथकों का उद्भव विचारों से होता है और विचार सबसे पहले हमारे मस्तिष्क में ही विकसित होते हैं। इसी प्रकार मिथक भी एक प्रकार का विचार ही है। आज के साहित्यकार अपने साहित्य में मिथकों का प्रयोग अपने साहित्य में प्रतीकों के रूप में करते हैं।

मिथकों के साथ मानव-जाति का गहरा लगाव होता है। मनुष्य मिथकों का सम्बन्ध आज की घटना के साथ जोड़कर मिथकों को यथार्थवादी रूप प्रदान करता है। किसी भी समाज के सांस्कृतिक व्यवहार को जानने का साहित्य उत्तम साधन है। इस साहित्य के माध्यम से हम उस समाज के लोगों का रहन-सहन, खान-पान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अगर हम किसी भी देश के लोगों के सांस्कृतिक व्यवहार को जानना चाहते हैं, तो साहित्य सबसे बड़ा साधन है। अगर कहें कि साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। समाज होगा तभी साहित्य का निर्माण होगा, क्योंकि साहित्यकार तो समाज में जो भी घटित होता है, उसको अपने साहित्य के माध्यम से प्रदर्शित करता है। साहित्यकार जिस प्रकार के वातावरण में रहता है, उस वातावरण का प्रभाव साहित्य पर अवश्य पड़ता है।

एक साहित्यकार अपने साहित्य द्वारा समाज के लोगों का कल्याण करना चाहता है। कोई भी रचना हो वह समाज के हित के लिए ही होती है। रामायण, महाभारत आदि की कथाओं में अनेक प्रकार के मिथक हैं और उन मिथकों को आज नवीन अर्थों में अभिव्यक्त किया जाता है। मिथक और साहित्य का आपस में गहरा रिश्ता है। साहित्य में बहुत सारे प्राचीन मिथक होते हैं अगर साहित्य न हो तो हमें मिथकों के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होगी। साहित्य के माध्यम से आज मिथकों को एक नया रूप मिला है। कोई भी

साहित्यिक विधा हो, जैसे कविता, कहानी, नाटक आदि में मिथकों का प्रयोग जरूर होता है। बहुत सारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मिथकों का प्रयोग किया है। जैसे- मोहन राकेश, जगदीश माथुर, सुरेन्द वर्मा, मणि मधुकर, नरेंद्र कोहली, लक्ष्मीनारायण लाल, दयाप्रकाश सिन्हा, रेवती शरण शर्मा, दूधनाथ सिंह, भीष्म साहनी, डॉ.विनय, गिरिराज किशोर, प्रभाकर श्रोत्रिय आदि।

इन्हीं साहित्यकारों में से एक साहित्यकार दिविक रमेश है, जिन पर यह शोध-कार्य प्रस्तुत किया गया है। इस लघू शोध-प्रबंध का विषय है- दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय चेतना। प्रस्तुत कृति की मूल प्रेरणा बाल्मीकि कृत रामायण का प्रसंग विशेष है। इस काव्य नाटक में कुल 17 पात्र है। उद्घोषणा, सन्नाटा, अग्नि, जन-समूह, राम, हर्ष, सूचना, सीता, हनुमान, सरमा, विश्वास, लक्ष्मण, सुग्रीव, उतरदायित्व, संदेह, उत्सुकता, पृथ्वी। राम, सीता, सरमा, हनुमान, लक्ष्मण, सुग्रीव, को छोड़कर अन्य सभी आदृश्य पात्र हैं। इस काव्य नाटक के माध्यम से दिविक रमेश ने मिथकों के रूपों को उजागर किया है और मिथकों का आश्रय लेते हुए यह बात प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि एक औरत का मर्द के समक्ष क्या अस्तित्व है। एक मर्द की औरत के प्रति क्या सोच है? यह बात हमें इस काव्य नाटक से पता चलती है, जिसे मिथक के आधार पर अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से अभिव्यंजित किया गया है। इस काव्य नाटक के माध्यम से सर्जनकर्ता अपने ईष्टार्थ को प्रस्तुत्त करने के लिए मिथकों का सफलता पूर्वक एवं सार्थक प्रयोग में सफल हुए हैं।

प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में बांटा गया है। 'प्रथम अध्याय' को 'सैद्धांतिक पृष्ठभूमि' के अंतर्गत सर्व प्रथम समस्या कथन और समस्या की औचित्य की चर्चा की गई है। तत्पश्चात् शोध के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए प्रस्तुत शोध की परिकल्पना पर दृष्टिपात किया गया है। इसके पश्चात् लघू शोध-प्रबंध में प्रयुक्त शोध प्रविधि का उल्लेख करते हुए पूर्व सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन किया गया है। प्रथम अध्याय के द्वितीय सोपान में मिथक के सैद्धांतिक स्वरूप की व्याख्या की गई है। मिथक के भेंदों की चर्चा करते हुए मिथक के ऐतिहास का अवलोकन किया गया है। प्रथम अध्याय के तृतीय एवंम अंतम सोपान में दिविक रमेश के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टि डाली गई है तथा उनके साहित्यक योगदान की संक्षिप्त चर्चा की गई है।

प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध के 'द्वितीय अध्याय' 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथकों के अंतर्गत 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रयुक्त प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक एवं प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथकों का अनुसंधानत्मक विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध के 'तृतीय अध्याय' 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रतीकात्मक मिथक में 'खण्ड-खण्ड अग्नि' के आधार पर अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक तथा प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथकों का अनुसंधान किया गया है।

प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध के को 'चतुर्थ अध्याय' 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में सामाजिक मिथक के माध्यम से स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक तथा प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक का अनुसंधानात्मक मिथक अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया है।

विषयनुक्रमणिका

प्राक्कथन 3-5

प्रथम अध्याय: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि 1-37

1.1 समस्या कथन

1.2 समस्या का औचित्य

1.3 शोध का उद्देश्य

1.4 परिकल्पना

1.5 शोध प्रविधि

1.6 पूर्व सम्बन्धित साहित्यावलोकन

1.7 मिथक का सैद्धांतिक पक्ष

1.7.1 मिथक का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, आधारभूत तत्व

1.7.2 मिथक के प्रकार

1.7.3 मिथक का इतिहास

1.8 दिविक रमेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.8.1 जन्म, शिक्षा एवं व्यवसाय

1.8.2 साहित्यक योगदान

द्वितीय अध्याय: 38-53

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक

2.1 प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक

2.2 प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक

तृतीय अध्याय: 54-68

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रतीकात्मक मिथक

3.1 अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक

3.2 प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक

चतुर्थ अध्याय: 69-83

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में सामाजिक मिथक

4.1 स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक

4.2 प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक

उपसंहार 84-89

परिशिष्ट 90-95

संदर्भ ग्रंथ सूची 96-100

प्रथम अध्याय

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

समस्या कथन

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय-चेतना

इस काव्य नाटक का मूल बिन्दु मिथक है और इस काव्य नाटक की कथा को प्रस्तुत करने का प्रयास दिविक रमेश ने मिथकों के माध्यम से किया है। प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध में जिस समस्या को उठाया गया है वह समस्या है मिथक। इसी समस्या को लेकर इस शोध-कार्य को आगे बढ़ाया गया है। इस शोध-कार्य में मिथक का अर्थ बताते हुए, यह बताया गया है कि आज के युग में जब कोई व्यक्ति अपनी बात को किसी दूसरे को बढ़िया ढंग से समझाना चाहता है तब वह व्यक्ति या साहित्यकार मिथक सम्बन्धी समस्या का प्रयोग करता है। दिविक रमेश ने अपने इस काव्य नाटक को आज के संदर्भ से जोड़ने के लिए मिथकों के धार्मिक एवं प्राकृतिक, प्रतीकात्मक और सामाजिक रूपों को बहुत ही बढ़िया ढंग से चित्रित किया है। इसी समस्या को लेकर इस काव्य नाटक पर आधारित शोध-कार्य को आगे बढ़ाया गया है।

समस्या का औचित्य

प्रस्तुत्त शोध-कार्य दिविक रमेश कृत 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकीय चेतना की औचित्यता है, क्योंकि मिथक साहित्यकार की कसौटी का मापदंड होता है। आज के बहुत सारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मिथकों का प्रयोग किया है, लेकिन मिथक का प्रयोग करना कोई सरल बात नहीं। इस प्रकार प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध में इस बात का मूल्यांकन किया जाएगा कि दिविक रमेश मिथकों का प्रयोग करने में कहाँ तक सक्षम रहे हैं।

शोध का उद्देश्य

जब भी हम कोई कार्य प्रारंभ करते हैं, तो उस कार्य के उद्देश्य पहले अवश्य निर्धारित करते हैं। उन उद्देश्यों के आधार पर ही अपने कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। कोई भी कार्य बिना उद्देश्य के सफल नहीं माना जाता। उद्देश्य कार्य के लिए एक सीढ़ी का कार्य करते हैं। उस सीढ़ी पर चढ़कर ही हम अपनी मंज़िल पर पहुँच सकते हैं। इसी प्रकार प्रस्तुत शोध-कार्य को सफलतापूर्वक बनाने के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं, जिनके आधार पर शोध-कार्य किया गया है, वह उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(i) साहित्य और मिथक का सम्बन्ध प्रस्तुत करना-

समाज एक से अधिक लोगों के समुदाय को कहते हैं, जिसमें सभी व्यक्ति मिल-जुल कर रहते हैं और अपने मानवीय क्रिया-कलाप करते हैं। मिथक और समाज का अन्यन्त गहरा सम्बन्ध होता है। यदि हमारे जीवन में कोई आम सी घटना घटित होती है, तो उस घटना को हम अधिक समय तक याद नहीं रखते, लेकिन अगर कोई चमत्कारपूर्ण पूर्ण घटना घटित हो, तो वह हमें नहीं भूलती। जो मिथकीय घटनाएँ होती हैं, उनका सम्बन्ध लोगों की भावनाओं से होता है, क्योंकि लोगों का रामायण, महाभारत की कथाओं में गहरा विश्वास है।

यह माना जाता है कि मिथक आदिम समाज की चीज है, परंतु इसमें यह भी दिखाई देता है कि महानगरों के आधुनिक सामाजिक जीवन में भी उनका अस्तित्व है। मिथक संस्कृति के वाहक हैं। राम, कृष्ण, शिव, पार्वती जैसे मिथक आज भी लोकप्रिय हैं। मिथक और साहित्य का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए श्री भानुदास आगेड़कर जी का मत है- "मिथक और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्य के माध्यम से पुरातन मिथकों को नई अर्थवता प्राप्त होती है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं में मिथक की परिकल्पना को साकार करने का प्रयास साहित्यकारों ने किया है। आज-कल प्राचीन मिथकों का प्रयोग साहित्यकार अपने साहित्य में आधुनिक जीवन संदर्भ के रूप में ज्यादा करते हैं।"[1] इस प्रकार साहित्यकार पुराने मिथकों को नयी अर्थवत्ता में अभिव्यकत करता है। साहित्य और मिथक के सम्बन्ध को समक्ष लाना ही इस शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

(ii) साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए पौराणिक मिथकीय नारी पात्रों के आधार पर नारी की स्थिति को स्पष्ट करना-

साहित्यकारों द्वारा रचित साहित्य जिसमें मिथकीय कथाएँ जैसे रामायण, महाभारत, इला आदि में जो पौराणिक मिथकीय स्त्री पात्र प्रयोग किए गए हैं, उन पौराणिक मिथकीय पात्रों के आधार पर आज की नारी की स्थिति को पेश करना इस शोध-कार्य का उद्देश्य है। रामायण, महाभारत, इला आदि रचनाओं में स्त्री की जैसी स्थिति थी, उस स्थिति के माध्यम से आज की नारी की स्थिति को पेश किया गया है। पौराणिक मिथकीय पात्रों के माध्यम से आज की नारी की स्थिति को मिथकों के माध्यम से बहुत अच्छे ढंग से उजागर किया गया है। इस काव्य नाटक में मिथकों के जो रूप दिविक रमेश ने प्रयोग किए हैं, उन रूपों के माध्यम से औरत का समाज में क्या स्थान है, यह बताना ही इस शोध-कार्य का प्रयास है। नारी और पुरुष एक गाड़ी के दो पहिये हैं। जिस प्रकार गाड़ी पहियों के बिना अधूरी होती है, ठीक उसी प्रकार नारी और पुरुष एक-दूसरे के बिना नहीं चल सकते हैं। पहले नारी को घर की चारदीवारी में कैद करके रखा जाता था, वह कैदियों की तरह अपना जीवन व्यतीत करती थी, नारी को शिक्षा का भी कोई अधिकार नहीं था, लेकिन अब हमारे समाज में नारियों की अव्यस्था में थोड़ा सुधार आया है। आज की नारी को शिक्षा का अधिकार मिलने के कारण वह अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित हुई है। आज वह अपनी सुरक्षा के लिए किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहती है, लेकिन आज के युग में नारी के लिए संविधान में इतने कानून बने हैं, लेकिन नारी फिर भी असुरक्षित ही है। इस काव्य नाटक में मिथकों के माध्यम से स्त्री की इसी स्थिति को प्रस्तुत करना इस शोध-कार्य का उद्देश्य है।

(iii) प्राचीन पीड़ित मिथकीय नारी पात्रों के माध्यम से आज की नारी-पीड़ा के कारणों को अभिव्यक्त करना-

नारी की स्थिति को जानने के बाद नारी की इस स्थिति के पीछे पीड़ा के क्या कारण हैं, उन कारणों को जानना इस शोध-कार्य का उद्देश्य है। मिथकों के धार्मिक एवं प्राकृतिक, प्रतीकात्मक और सामाजिक रूपों का प्रयोग करते हुए नारी-पीड़ा के कारणों को इस शोध-कार्य में प्रस्तुत किया गया है। मिथकों का आश्रय लेते हुए इस काव्य नाटक में नारी की पीड़ा का पहला कारण है, एक मर्द का अपनी स्त्री पर विश्वास न करना। यह नारी की पीड़ा का सबसे बड़ा कारण है, क्योंकि अगर एक पति को अपनी पत्नी पर ही विश्वास नहीं है, तो वह पत्नी कैसे अपने पति के साथ जीवन व्यतीत कर सकेगी। नारी-पीड़ा का दूसरा कारण है, एक पुरुष चाहता है कि उसकी पत्नी उसके अधीन रहकर अपना जीवन व्यतीत करे, उसको पूछे बिना कहीं भी न जाए। क्या एक नारी का अपनी खुद की ज़िंदगी पर भी कोई अधिकार नहीं। नारी-

पीड़ा का तीसरा कारण है अगर नारी के साथ कोई ऐसी घटना हो जाए तो उसे अपने-आप को सही साबित करने के लिए परीक्षा देने को कहा जाता है, क्या मर्द ने कभी अपने-आप को सही साबित करने के लिए परीक्षा दी है। इस प्रकार इन सभी कारणों को मिथकों के आधार पर ही इस शोध-कार्य को आगे बढ़ाया गया है।

(iv) मिथकों का आश्रय लेते हुए नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति का वर्णन करना-

मनोविज्ञान का अर्थ है- मन की स्थिति के बारे में जानना। इस काव्य नाटक में मिथकों का प्रयोग करते हुए मिथकीय पात्र सीता के माध्यम से आज के युग की सीता के मन की स्थिति का वर्णन किया गया है। जब एक पति अपनी पत्नी पर अविश्वास प्रकट करने लग जाता है, तो उस समय एक पत्नी के मन की स्थिति क्या होती है। जब एक पति अपने वंश को समाज के लोगों की बदनामी से बचाने के लिए यह जानते हुए भी कि उसकी पत्नी सही है, उसे घर से निकाल दे, तो उस समय जो औरत के मन की दशा जो होती है, उस दशा को पेश करना इस शोध-कार्य का उद्देश्य है।

इस प्रकार प्रस्तुत इस शोध-कार्य का उद्देश्य मिथक के उन रूपों को हमारे समक्ष लाना है, जिन रूपों का प्रयोग दिविक जी ने अपने इस काव्य नाटक में वर्णन किया है। इस काव्य नाटक में प्रधान तो मिथक ही है, लेकिन इस काव्य नाटक की जो कथा है, वह स्त्री से सम्बन्धित है, इसलिए मिथकों को प्रस्तुत करने के लिए इस काव्य नाटक की स्त्री सम्बन्धी कथा का आश्रय लिया गया है।

परिकल्पना

मिथकों के माध्यम से नारी की स्थिति का प्रस्तुतीकरण।

शोध पद्धति

जब भी हम कोई शोध-कार्य करते हैं, तो उस कार्य के लिए कोई-न-कोई पद्धति तो प्रयोग करते हैं, क्योंकि कोई भी शोध-कार्य किसी भी पद्धति के बिना पूरा नहीं हो सकता। इस शोध-कार्य को करने के लिए जिन पद्धतियों का प्रयोग किया गया है, वह निम्नलिखित हैं-

- **आलोचनात्मक पद्धति**
- **मनोवैज्ञानिक पद्धति**
- **समाजशास्त्रीय पद्धति**
- **तुलनात्मक पद्धति**

(i) आलोचनात्मक पद्धति

बैजनाथ सिंहल के अनुसार, "आलोचना शब्द अंग्रेजी शब्द 'क्रिटिसिज्म' से निर्मित हुआ है। एक प्रकार से शोध आलोचना का ऋणी भी है, क्योंकि यदि आलोचना का हमारे यहाँ विकास न हुआ होता तो कदाचित् ही शोध अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर पाता। बोलचाल में तो आलोचना को निंदा के अर्थ में ही ग्रहण किया जाता है। साहित्यिक संदर्भ में आलोचना का अर्थ इतना संकुचित नहीं होता, बल्कि यहाँ गुण-दोष विवेचन के पीछे साभिप्राय दृष्टि रहती है। आलोचना शब्द के मूल में संस्कृत की 'लोच' या 'लुच' धातु है जिसका अर्थ देखना, प्रत्यक्षानुभव करना आदि।"[2] आलोचना शब्द का अर्थ किसी रचना के गुणों-दोषों की जाँच करनी। हम जब भी किसी रचना का निर्माण करते हैं तो उस रचना पर अन्य साहित्यकारों ने क्या विचार प्रस्तुत किए हैं, इसका निरीक्षण अवश्य करते हैं, इसे ही आलोचना कहा जाता है। प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध में आलोचनात्मक पद्धति इस लिए प्रयोग की गई है, क्योंकि इस लघू शोध-प्रबंध में जो मिथकीय चेतना सम्बन्धी विषय लिया गया है, उस विषय के दीर्घ अध्ययन के लिए यह पद्धति अति-आवश्यक थी, क्योंकि इस पद्धति के माध्यम से ही यह जाना जा सकता है कि अन्य साहित्यकारों ने मिथक के सम्बन्ध में क्या विचार प्रस्तुत किए हैं। किसी भी लघू शोध-प्रबंध के लिए एक साहित्यकार के विचार ही बहुत नहीं होते बल्कि उस लघू शोध-प्रबंध का जो विषय निर्धारित किया जाता है, उसके सम्बन्ध में अलग-अलग साहित्यकारों के विचार जानना बहुत जरूरी होता है। आलोचना के बिना शोध-कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध-कार्य में आलोचनात्मक पद्धति इसलिए प्रयोग की गई है, क्योंकि जब भी कोई शोधार्थी किसी भी शोध-कार्य का प्रारंभ करता है तो वह एक प्रकार से आलोचना ही करता है, क्योंकि वह जिस भी किसी विषय का चयन करता है उस विषय में गुण-दोषों की जाँच करता है। इस प्रकार इस पद्धति के माध्यम से इस लघू शोध-प्रबंध में यह जानने की कोशिश की गई है कि दिविक रमेश मिथकों के रूपों का प्रयोग करने में सफल हुए हैं या नहीं।

(ii) मनोवैज्ञानिक पद्धति

बैजनाथ सिंहल के अनुसार, "मनोविज्ञान अंग्रेजी के 'साइकोलॉजी' शब्द का हिन्दी रुपांतर है। इस शब्द की व्युत्पति ग्रीक भाषा के 'साइके', (साइ) अर्थात् 'मन' और 'लोगोस' अर्थात् 'नियम' शब्द से मिलकर होती है। इस प्रकार 'साइकोलॉजी' अर्थात् मनोविज्ञान मन, मन की संरचना, क्रिया और व्यवहार का अध्येता विज्ञान है।"[3] इस प्रकार मनोविज्ञान का अर्थ है- मन की स्थिति का अध्ययन करना। मनोविज्ञान के माध्यम से हम किसी भी व्यक्ति के मन की भावनाओं से अच्छे ढंग से साक्षात्कार हो सकते हैं। प्रस्तुत लघू शोध-प्रबंध में दिविक रमेश ने मिथकों का प्रयोग करते हुए एक स्त्री के मन की अवस्था को बताने के लिए एक आदृश्य पात्र सन्नाटा को स्त्री के मन की स्थिति को बताने के लिए प्रयोग किया है। मनोविज्ञान ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दूसरे व्यक्ति के मन को समझ सकते हैं कि उसके मन में क्या चल रहा है। मन का अध्ययन करने के लिए यह पद्धति अति-आवश्यक थी।

(iii) समाजशास्त्रीय पद्धति

बैजनाथ सिंहल के अनुसार, "जब भी किसी क्षेत्र-विशेष के अध्ययन के लिए कुछ सिद्धांत निश्चित हो जाते हैं, तब इस प्रकार की पद्धति को उस क्षेत्र विशेष के लिए प्रयोग किया जाता है। अत: 'समाजशास्त्र' से स्वत: ही यह अर्थ ध्वनित होता है कि यह वह शास्त्र है, जिसमें ऐसी सिद्धांतावली रहती है, जिसके आधार पर समाज का अध्ययन किया जा सकता है। हिन्दी का 'समाजशास्त्र' शब्द अंग्रेजी के 'सोशलॉजी' का हिन्दी रूपांतरण है। 'सोशलॉजी' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के 'सोशियस' और ग्रीक के 'लागस' शब्दों से मिलकर हुई है, जिनका अर्थ है, 'समाज' और 'अध्ययन' अथवा विज्ञान।"[4] समाजशास्त्रीय पद्धति के अधीन सामाजिक जीवन की सभी इकाइयों का अध्ययन किया जाता है, जैसे परिवार, समाज के लोगों का रहन-सहन, एक-दूसरे के प्रति उनका व्यवहार आदि यह सब सामाजिक इकाइयाँ के अधीन आता है। इसलिए कहा जा सकता है कि साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन बहुत जरूरी है। साहित्य में व्यक्ति, परिवार, समुदाय आदि का वर्णन किया जाता है। हमारे जीवन में कोई भी घटना होती है तो उस घटना का हमारे समाज के साथ सम्बन्ध अवश्य होता है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस काव्य नाटक में मिथकों के रूपों का प्रयोग करते हुए सामाजिक बिंदुओं को उठाया गया है। आज भी एक औरत के व्यक्तित्व पर प्रश्न उठते हैं अगर आज कोई लड़की पूरी स्वच्छंदता से घूमती है, तो समाज के लोग उसे गलत समझते हैं। युग बदला है, लेकिन पुरुष की सोच में बहुत कम बदलाव आया है। सामाजिक बिंदुओं को उजागर करने के लिए यह पद्धति बहुत सहायक है। इस लघू शोध-प्रबंध में यह पद्धति इसलिए प्रयोग की गई है, क्योंकि मिथकीय घटनाएँ समाज से ही जन्म लेती हैं।

(iv) तुलनात्मक पद्धति

बैजनाथ सिंहल के अनुसार, "तुलनात्मक पद्धति में दो कृतियों, आंदोलनों, कवियों, पात्रों आदि की तुलना की जाती है। तुलना करने के लिए तुलनीय ग्रन्थों के सभी तत्वों को अलग-अलग करना होता है। कथावस्तु, पात्र, दर्शन, धर्म और मनोविज्ञान आदि तत्वों को अलग-अलग लेकर साम्य व वैषम्य की तुलना करनी चाहिए।"[5] इस पद्धति का अर्थ है कि हम जब भी शोध-कार्य करते हैं तो यह अवश्य देखते हैं कि जो बात हम अपने शोध-कार्य में कर रहे हैं, उस बात के बारे में अन्य साहित्यकारों के क्या विचार है, इसी को ही तुलना करना कहा जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-कार्य में भी दूसरे साहित्यकारों की रचनाओं से तुलना की गई है और देखा गया है दिविक जी मिथक के रूपों का प्रयोग करने में कितने सक्षम रहे हैं।

पूर्व सम्बन्धित साहित्यावलोकन

जब भी कोई शोध-कार्य प्रारंभ किया जाता है, तो शोध-कार्य प्रारंभ करने से पहले उस शोध से सम्बन्धित अन्य साहित्यकारों के क्या विचार हैं, उसको भी देखना जरूरी होता है, क्योंकि कोई भी शोध दूसरे साहित्यकारों द्वारा किए गए कार्य के बिना अधूरा होता है, इसलिए अगर हम अपने शोध-कार्य को सफल बनाना चाहते हैं तो हमें शोध-कार्य से पूर्व सम्बन्धित साहित्यावलोकन करना अति आवश्यक होता है।

- **मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना समकालीन संदर्भ, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशक, प्रकाशन 2007.**

  संपूर्ण कृति सात अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में स्वांतत्र्योत्तर कथा-साहित्य की प्रवृत्तियों पर दृष्टि निक्षेप किया गया है। द्वितीय अध्याय में राम और कृष्ण पर केन्द्रित कथा वृतियों की पृष्ठभूमि की ऐतिहासिक पड़ताल की गई है। तृतीय अध्याय पौराणिक कथा-साहित्य में काल और मिथक चेतना के अंत:सम्बन्ध को उद्घाटित करता है। चतुर्थ अध्याय में राम-कथा और कृष्ण-कथा पर आधारित कथा-साहित्य के वैशिष्टय को प्रकाश में लाने का एक प्रयास है। पंचम अध्याय नरेंद्र कोहली के राम-कथा-साहित्य 'अभ्युदय-(दो खंड)' के वैशिष्टय का विवेचन करता है। षष्ठम अध्याय में स्वांतत्र्योत्तर कथा-साहित्य में राम और कृष्ण का स्वरूप वैशिष्टय का दिशा-निर्धारण किया गया है। सप्तम् अध्याय समापन की ओर अग्रसर होता है।

- **डॉक्टर रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक-काव्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशक, प्रकाशन 2000.**

इस पुस्तक में मिथक के नए विनियोग और उसकी नयी अर्थवत्ता का विषद विवेचन है। इसमें हिन्दी के आधुनिक युग के कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों को चुना गया है। इन काव्यों के मिथकीय वैशिष्टय के परीक्षण के साथ-साथ श्री नरेश मेहता, स्व.श्री धर्मवीर भारती, श्री दुष्यंत कुमार, श्री देवराज और श्री जगदीश गुप्त, श्री कुंवरनारायण और श्री विनय की प्रतिभा के उन्मेष का विशद विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है।

- **डॉक्टर उषा पुरी विद्यावाचस्पति, मिथक साहित्य: विविध संदर्भ, दिल्ली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स प्रकाश्क, प्रकाशन 1984.**

इस पुस्तक में मिथक के संदर्भ में अलग-अलग साहित्यकारों ने क्या संदर्भ दिए हैं, उन साहित्यकारों के मिथक के सम्बन्ध में क्या विचार है, उनका वर्णन किया गया है।

- **डॉक्टर शंभुनाथ, मिथक और भाषा, कलकत्ता, दिलीप कुमार मुखर्जी आशुतोष बिल्डिंग प्रकाशक, प्रकाशन 1981.**

इस पुस्तक में मिथकों की भाषा का वर्णन किया गया है।

- **डॉक्टर उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथकों में प्रतीकात्मकता, नई दिल्ली, सार्थक प्रकाशन 100 ए, गौतम नगर प्रकाशक, प्रकाशन 1997.**

इस पुस्तक में मिथकों का किस-किस प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया जाता है, उसके बारे में वर्णन किया गया है।

- **डॉक्टर शेखर शर्मा, समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक, दिल्ली, भावना प्रकाशक, प्रकाशन 1988.**

प्रस्तुत पुस्तक की समग्र विषय सामग्री को दो खंडों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है। पहला भाग संवेदना: 'स्वरूप-विश्लेषण' है, इसके अन्तर्गत संवेदना की निर्माण-प्रक्रिया की चर्चा की गई है। दूसरा भाग 'समकालीन संवेदना: एक नवोदय' है। सर्व-प्रथम समकालीनता की अवधारनाओं को विस्तार के साथ विश्लेषण किया गया है। तीसरा भाग सन् 1950 ई॰ पूर्व की हिन्दी नाटक 'परिवर्तित जीवन मूल्य और संवेदना संदर्भ' है।

- **धर्मवीर भारती, अंधायुग, इलाहाबाद, किताब महल प्रकाशक, प्रकाशन 1973.**

इस पुस्तक में युद्धों की विभीषिकाओं तथा उनके परवर्ती दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए इन युद्धों को जन्म देने वाले कारणों से अवगत करवाने वाली एवं आधुनिकता-बोध को गहरी संवेदना के स्तर पर अभिव्यक्ति किया गया है।

- **मीनाक्षी स्वामी, अस्मिता की अग्नि परीक्षा, इंडिया, नेशनल बुक ट्रस्ट प्रकाशक, प्रकाशन फरवरी 8, 2009.**

इस पुस्तक में बलात्कार की शिकार स्त्री की हर स्तर पर होने वाली प्रताड़ना का वर्णन किया गया है।

- **मनु शर्मा, द्रौपदी की आत्मकथा, दिल्ली, प्रभात प्रकाशक, प्रकाशन जनवरी 1, 2011.**

इस पुस्तक में द्रौपदी के माध्यम से आज की नारी की पीड़ा का वर्णन किया गया है।

- **राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशक, प्रकाशन 2015.**

इस पुस्तक में यह बताया गया है कि एक आदमी की निगाह में औरत क्या है, उसके बारे में वर्णन किया गया है।

- **प्रेम जनमेजय, दिविक रमेश आलोचना की दहलीज पर, दिल्ली, संजना प्रकाशक, प्रकाशन 2015.**

इस पुस्तक में अलग-अलग रचनाकारों ने दिविक रमेश के कविता-संग्रह पर जो आलोचना की है, उसका वर्णन किया गया है।

- **डॉ. प्रभु वी. उपासे, समकालीन हिन्दी काव्य प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में दिविक रमेश की रचनाओं का अध्ययन, बंगलोर यूनिवर्सिटी, पीएच.डी की उपाधि के लिए, 2016.**

इस शोध-प्रबंध में समकालीन हिन्दी काव्य प्रवृतियों के साथ दिविक रमेश की रचनाओं की तुलना की गई है।

- **डॉ. शकुंतला कालरा, डॉ. दिविक रमेश और उनका बाल-साहित्य, दिल्ली, यश पब्लिकेशन्स, 2012.**

इस शोध-प्रबंध में दिविक रमेश के बाल-साहित्य पर अध्ययन किया गया है।

- **प्रो. कविता घनानन्द शर्मा, हिन्दी के स्वांतन्त्र्योत्तर मिथकीय खंड-काव्य, गुजरात यूनिवर्सिटी, पीएच-डी. की उपाधि हेतु, 1994.**

इस शोध-प्रबंध में मिथक का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि बताने के बाद वैदिक और पौराणिक खंड काव्यों का अध्ययन किया गया है।

- **पी.अम्पिली, हिन्दी के आधुनिक मिथकीय नाटक: एक अध्ययन, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, पीएच-डी. की उपाधि हेतु, 2003.**

इस शोध-प्रबंध में मिथक का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, मिथक का मनोविज्ञान के साथ, समाजशास्त्र के साथ, मिथक का स्वप्न के साथ क्या सम्बन्ध है, बताने के बाद हिन्दी के आधुनिक मिथकीय नाटकों में मिथकों का प्रयोग किस प्रकार हुआ है, बताया गया है।

- **प्रदीप कुमार, कुँवरनारायण की कविता: मिथक और यथार्थ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, पीएच-डी॰की उपाधि हेतु, 2008.**

इस शोध-प्रबंध में मिथकों की निर्मिति के बारे में, मिथक और यथार्थ का अंतर सम्बन्ध और कुँवरनारायण की कविताओं में मिथकों का प्रयोग और मिथक और यथार्थ का आपसी सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है।

- **श्रीकला वी.आर., समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ, कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइन्स एंड टेक्नालजी, पीएच-डी. की उपाधि हेतु, 2009.**

इस शोध-प्रबंध में मिथकों की उत्पत्ति सम्बन्धी, मिथकों के प्रयोग की दिशाएँ आदि का उल्लेख करने के बाद हिन्दी के समकालीन मिथकीय नाटकों में मिथक और यथार्थ के अंतर सम्बन्ध को उद्घाटित किया गया है।

- **पारुल ठा. चौधरी, सठोत्तर हिन्दी नाटकों का मिथकीय अनुशीलन, गुजरात विद्यापीठ, (पीएच-डी.) की उपाधि हेतु, 2012.**

इस शोध-प्रबंध में मिथकों का स्वरूप, मिथकों की अवधारणा, मिथकों के प्रकार, तत्व और पाश्चात्य और भारतीय नाटककारों का मिथकीय चिंतन और सठोत्तर हिन्दी के जो नाटककार हुए हैं, उनके नाटकों का मिथकीय चिंतन आदि को प्रस्तुत किया गया है।

मिथक का सैद्धांतिक पक्ष-

हम जब भी कोई शोध-कार्य करते हैं और उस लघू शोध-प्रबंध में जिस भी किसी विषय का चुनाव करते हैं तो हमें उस विषय का सिद्धांत अवश्य मालूम होना चाहिए। हम जिस विषय को आधार बनाकर अपना शोध-कार्य आरंभ करते हैं, हमें उस विषय का अर्थ उस विषय से सम्बन्धित अलग-अलग विचारकों की परिभाषाएँ और हमें उस विषय का स्वरूप और तत्वों की जानकारी होना अति आवश्यक है। इस प्रकार अगर हम अपने विषय के सिद्धांत को अच्छे ढंग से समझ लेगें तो हमें आगे अपने शोध-कार्य में कोई कठिनाई नहीं आएगी। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-कार्य में मिथक जो विषय के रूप में लिया गया है, उसके सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन इस प्रकार है-

मिथक का अर्थ

हमारा पूरा इतिहास मिथकों से भरा पड़ा है। आज नवीनता का युग है और जो हमारी आज साइन्स और तकनीकी ज्ञान है, उसने आज प्रत्येक क्षेत्र में बहुत प्रगति कर ली है। इस नवीनता के युग में भी मिथकों की जरूरत पड़ती है। मिथक हमारी बात को मजबूती प्रदान करते हैं। जब हम अपनी बात को सही ढंग से किसी के समक्ष प्रस्तुत नहीं कर पाते तो हम प्राचीन मिथकों को आज की घटना से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। मिथक के माध्यम से हम अपने भावों को बढ़िया ढंग से पेश कर सकते हैं। मिथक एक प्रकार की कथा होते हैं, क्योंकि हमारे इतिहास में जो भी घटनाएँ घटित हुई होती है, वह बाद में कथा का ही रूप धारण कर लेती हैं। मिथक एक प्रकार की कल्पित कथा ही होते हैं। कल्पना का अर्थ होता है, जिसके बारे में अनुमान ही लगाया जा सके। जो कल्पित कथाएँ होती हैं, उनकी कोई समय, तिथि नहीं दी होती। मिथक को कल्पित इसलिए कहा जाता है, क्योंकि मिथकों का भी समय, तिथि नहीं दिया होता। जो हमारे इतिहासकार हैं, वह मिथक को नहीं मानते, क्योंकि इतिहासकार किसी भी बात को तभी सत्य मानते हैं, जब उस बात का सही समय, तिथि दी गई हो। डॉ. रश्मि कुमार अनुसार, "मिथक शब्द 'मिथ्-इ' से मिलकर बना है।"[6] डॉ. उषापुरी विद्यावाचस्पति के अनुसार, "मिथक संस्कृत के 'मिथ' शब्द के साथ कर्तावाचक 'क' प्रत्यय जुड़ने से बना है।"[7]

कु॰दीपमाला के अनुसार, "हिन्दी साहित्य में मिथक शब्द से तात्पर्य 'मिथ' के अनुरूप ही अर्थ देने वाले शब्द से लगाया जाता है। इसलिए मिथ शब्द का अर्थ जो भाव प्रकट करता है, उसी को मिथक के अर्थ की भी आवश्यकता माना जाता है। वस्तुत: 'मिथ' का मूल अर्थ केवल कथा से है। बल्कि ग्रीक विद्धान व दार्शनिक अरस्तू ने भी मिथ का आधार तथा अर्थ कथातत्व, कथानक, कथाबन्ध, गल्पकथा आदि को ही स्वीकार किया है।"[8] मिथक हमारे अतीत का ख़जाना होते हैं और यह ख़जाना आज हमारे लिए बहुत लाभदायिक है। हमारे आस-पास जितनी भी घटनाएँ घटित होती हैं, सभी मिथक तो नहीं हो सकती सिर्फ वह घटना ही मिथक होगी जो दूसरी घटना से अद्भुत होगी, उसी घटना को ही मिथक कहा जाएगा। मिथक वह होते हैं, जो आज की घटनाओं से सम्बन्धित होकर नए अर्थ का वहन करते हैं, अर्थात हम मिथकीय घटना को आज के युग की चल रही घटना के साथ जोड़कर दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

मनोरमा मिश्र के अनुसार, "मिथक शब्द का स्वरूप अंग्रेजी के 'मिथ' शब्द से निर्मित हुआ है, जिसका अर्थ है- पुराण कथा, कल्पित कथा एवं गप्प। इसी मिथ से अंग्रेजी में 'माईथालॉजी' बना और हिन्दी में 'मिथक'। मनोरमा मिश्र के अनुसार, हिन्दी में 'मिथक' का अर्थ है- "प्राचीन पुराकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ का वहन करे।"[9] जो मिथकीय कथाएँ होती हैं, पहले उन्हें देवताओं सम्बन्धी कथाएँ माना जाता था। लोग इन कथाओं में बहुत विश्वास करते थे। देवताओं सम्बन्धी कथाएँ वह है, जिनमें आलौकिक शक्ति हो। मिथ का अर्थ- मिथ्या अर्थात् जिसके बारे में मिथ्या ही जाए जैसे रामायण में सीता का धरती में चले जाना यह सिर्फ एक प्राचीन समय से चली आ रही कथा है, जिसके बारे में हम केवल अंदाजा ही लगा सकते हैं। रामायण की घटना का कोई समय नहीं दिया गया।

कु॰ दीपमाला के अनुसार, "अंग्रेजी भाषा के मिथ शब्द की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के 'मिथास' से हुई है, जिसका अर्थ है- मौखिक कथा अर्थात् एक ऐसी कथा जिसे कहने और सुनने वाले इसे सृष्टि या ब्रह्मांड सम्बन्धी तथ्य समझते हैं। मिथ शब्द का विपरीतार्थक शब्द 'लोगोस' (तर्क) को माना गया है। मिथक संस्कृत का प्रमाणित शब्द नहीं है। मिथक संस्कृत का संस्कृत के 'मिथ' शब्द के साथ कर्त्तावाचक 'क' प्रत्यय को जोड़ने से ही इसकी निर्मिति हुई है। संस्कृत में 'मिथक' शब्द के समीपवर्ती शब्दों के रूप में दो ही शब्दों का प्राधान्य रहा है। प्रथम है- 'मिथस' अथवा 'मिथ' जिसका अर्थ है- 'परस्पर सम्मिलन तथा द्वितीय है- 'मिथ्या' जिसका अर्थ है- झूठ तथा असत्य।"[10] मिथ्या को झूठ तथा असत्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि अगर मिथ्या असत्य होता तो आज इनकी जरूरत न पड़ती। हम किसी भी घटना को झूठ नहीं कह सकते, जब तक उस घटना के बारे में हम विचार न कर लें। किसी भी घटना को जानने से पहले हम उसके सत्य तथा असत्य का निर्णय नहीं कर सकते, हो सकता है जिसे हम असत्य समझ रहे हो, वह सत्य हो। ठीक इसी प्रकार मिथ्या को भी बिना जाने असत्य नहीं कहा जा सकता।

डॉ. शंभुनाथ के अनुसार,"मिथ्या वेदांतदर्शन का परिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ असत्य नहीं, क्योंकि जो असत्य है, अर्थात् है ही नहीं उसकी प्रतीति किसी को नहीं हो सकती, जैसे आकाश, कुसुम। मिथ्या प्रतीतिक सत्य को कहते हैं, जो प्रतीत तो होता है, परंतु विचार करने पर असत्य सिद्ध होता है।"[11] हमारे भारतीय हिन्दी साहित्य में रामायण, महाभारत और वेदों में जितनी भी थेरी गाथाएँ हैं अर्थात प्राचीन कथाएँ हैं, उन गाथाओं में भारतीय लोगों का अटूट विश्वास है। रामायण, महाभारत की कथा को लोग सत्य समझते हैं। लोगों का मानना है कि जो कथाएँ उन के धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित है, वह कभी असत्य हो ही नहीं सकती। प्राचीन काल से ही लोगों का धर्म के साथ गहरा रिश्ता रहा है। मनुष्य ने अपने प्रत्येक कार्य का मूल आधार धर्म को स्वीकार किया है। जो रामायण, महाभारत आदि की कथाएँ हैं, इन्हें पुराण कथा भी कहा जाता है। पुराण कथा का मतलब है, जो प्राचीन कथाएँ हैं, उन्हें पुराण कथा कहा जाता है। मिथकों का प्रयोग प्रतीकों के रूप में भी किया जाता है। जब हम अपनी किसी बात के लिए मिथक का प्रयोग करते हैं, तो हम उस मिथक को प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि मिथक और अंधविश्वास एक ही है, लेकिन इनमें अंतर है। जो मिथकीय घटनाएँ होती है, वह समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। जो अंधविश्वास होते हैं, यह स्थायी होते हैं। अंधविश्वास का विचार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है, लेकिन मिथक हमारी संस्कृति से सम्बन्धित होते हैं।

मनोरमा मिश्र के अनुसार, "हिन्दी साहित्य में मिथक को असत्य अथवा असत्य के आस-पास की कोई वस्तु या तत्व नहीं माना जा सकता। हमारी मान्यताओं और परम्पराओं के अनुसार जो कुछ भी हमारे शास्त्रों, धर्मग्रन्थों अथवा दर्शनग्रन्थों में वर्णित है, वह न केवल सत्य है, वर्ण सशक्त भी है, इसीलिए हिन्दी साहित्य में मिथक को पुराणकथा कहते हैं। वास्तविकता यह भी है कि अंग्रेजी शब्द

'मिथ' और हिन्दी के 'मिथक' की कोई ऐसी नपी-तुली परिभाषा देना, जो उस विचार को उसकी सम्पूर्णता में व्यक्त कर सके, अन्यन्त कठिन है। संस्कृत में मिथक के लिए पुराण शब्द है। 'पौराणिक कथा' अथवा 'पुराकथा' के लिए निरुकत में कहा गया है- "पुरा नवम् करोति इति पुराणम्" अर्थात् जो पुरानी कथाओं को नए ढंग से प्रस्तुत करें, वह पुराण है। मिथकीय अवधारणाएँ दो स्वरूपों में देखी जा सकती है।

1. अंधविश्वास के रूप में **2.** प्रतीक के रूप में। पुराण अथवा मिथक सत्य के मूल तक पहुँचने का प्रभावशाली उपक्रम है।"[12] जब से मनुष्य ने इस सृष्टि में आगमन किया है, तभी से ही मिथकों का उद्भव हुआ।

डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति अनुसार, "भारतीय साहित्य में प्रयुक्त 'मिथक' शब्द पाश्चात्य मिथ अथवा माईथालॉजी का प्राय नहीं है। मिथक के आविर्भाव के विषय में विद्धानों में मतभेद है, तथापि यह निश्चित है कि इसके मूल में संस्कृत का 'मिथ' शब्द विद्यमान है, अंग्रेजी का नहीं। पाश्चात्य देशों में मिथ अथवा माइथालॉजी काल्पनिक कथाओं पर आधारित होती है, किन्तु संस्कृत में 'मिथ' धातु का अभिप्राय प्रत्यक्ष दर्शन भी है। मूलत: भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का योग मिथकों का मूल आधार है। हिन्दी साहित्य में मिथक शब्द स्व. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की देन है। उनकी मान्यता है कि मिथक शब्द का आविर्भाव वाणी के श्रीगणेश के साथ ही हुआ होगा।"[13] मिथकों को देव कथाओं के कारण बहुत सारे नामों से जाना जाता है।

कु॰दीपमाला के अनुसार, "प्रारम्भ से ही हिन्दी साहित्य के विद्धानों ने मिथकों को साधारणतया किवदंती, दंतकथा, कथागाथा, देवकथा, धर्मगाथा, कल्पकथा, पुरावृत्त, पुराण आदि अनेकों ऐसे शब्दों से ही सम्बोधित किया है।"[14] पुरावृत्त शब्द का अर्थ है – प्राचीन घटनाएँ। यह प्राचीन घटनाएँ हमें बहुत सारी जानकारी उपलब्ध कराती हैं। आज हम अपनी बात को विस्तृत करने के लिए इन प्राचीन घटनाओं का आश्रय लेते हैं। हम उन प्राचीन घटनाओं का प्रयोग इसलिए करते हैं, क्योंकि उन प्राचीन घटनाओं से हमें प्रत्येक शब्द का अर्थ पता चलता है। यह प्राचीन घटनाएँ आज की घटनाओं के संकेतों की ओर इशारा करती हैं। यह प्राचीन घटनाएँ ही मिथक होती हैं।

पुरावृत्त शब्द के परिप्रेक्ष्य में डॉ. राम अवध द्विवेदी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "पुरावृत्त शब्द का प्रयोक्ता स्वयं कहता है- हम नहीं कह सकते हैं कि पुरावृत्त मूलत: सम्पूर्ण अर्थ का बोध कराने में सक्षम है, किन्तु विषय निरूपण के लिए हम यह मान लेते हैं कि उसमें सभी अर्थों और संकेतों का संग्रह है, जो आधुनिक काल में मिथ से सम्बन्ध माने जाते हैं।"[15] जगदीश प्रसाद अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि, "पुरा के योग से बने शब्दों में अर्थ का फैलाव आवश्यकता से अधिक हो जाता है और उनकी परिधि में लोककथा और लोकाख्यान भी आ जाते हैं, जो मिथकों से सम्बन्ध होने पर भी स्वयं मिथक नहीं कहे जा सकते। इन्हीं सीमाओं को दिखाते हुए मिथ से मिथक का विकास कर दिया गया और अब हिन्दी में यह व्यापक रूप से स्वीकृत हो चुका है।"[16] मिथकों का जो रूप होता है, वह

विकासशील होता है, अर्थात् यह समाज में लगातार विकास करते रहते हैं। जो प्राचीन मिथक होते हैं, यह आज के संदर्भ में बहुत लाभदायिक होते हैं। आज भी यह कहा जाता है कि पुत्र हो तो श्रवण कुमार जैसा, पत्नी हो सीता जैसी। मिथकों का कभी अंत नहीं हो सकता जैसे-जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे मिथकों का प्रयोग नित-नवीन रूपों में हो रहा है। समाज के सभी अमीर-गरीब लोग मिथकों का प्रयोग अपनी आवश्यकता अनुसार करते हैं। एक मिथक का एक अर्थ नहीं होता, बल्कि अनेक अर्थ होते हैं, मिथकों के संदर्भ बदलते रहते हैं।

➢ मिथक की परिभाषाएँ

मिथक शब्द अपने आप में बहुत विस्तृत है, इसलिए इसको परिभाषा में बाँधना काफी कठिन है। कोई भी ऐसी परिभाषा जो मिथक के सभी रूपों को व्यक्त कर सके आसम्भव है। मिथक की जो अलग-अलग विद्धानों ने परिभाषाएँ दी हैं, वह निम्नलिखित हैं-

- Oxford English dictionary के अनुसार, “A purely fictious narrative usually involving supernatural persons, actions, or events and embodying some popular idea concerning natural or historical phenomema.”[17]
- Websters dictionary के अनुसार, “A traditional story of unknown authorship ostensibly with a historical basis, but serving usually to explain some phenomenon of nature the origin of man or the customs, institutions, religious rights etc of people myths usually involve the exploits of gods and heroes.”[18]
- फ्रेंच शब्दकोश में मिथ का अर्थ बतलाया गया है, “जिसका यथार्थत: अस्तित्व नहीं है।”[19]
- ‘एनसाइक्लोपिडिया ऑफ सोशल साइंसिज’ में कहा गया है, “मिथक लोक-साहित्य के समान जातीय आकांक्षाओं (धारणाओं, आर्दशों) का एक सुस्पष्ट माध्यम है। यहाँ भी मिथक को लोक-कथाओं के समान प्रधानत: औपन्यासिक कहानियाँ ही माना गया है। इन दोनों में मूलभूत अंतर यह बताया गया है कि मिथक अलौकिक संसार की कहानियाँ हैं और इस प्रकार उनमें स्वभावत: ही धार्मिक तत्वों का समावेश हो जाता है। इस मत के आधार पर मिथक में दो तत्व ही प्रमुख रूप से शामिल होते हैं- प्रथम उसका कथात्मक स्वरूप और दूसरा उसका धार्मिक तथा लोकोत्तर वातवरण।”[20]
- लेवीज स्पेन्स के अनुसार मिथक, “किसी देवता अथवा पराप्राकृत सत्ता का एक विवरण होता है। इसे साधारणतया आदिम विचारों की शैली में लाक्षणिकता से अभिव्यक्ति मिलती है। यह वह प्रयत्न है, जिसके द्वारा मनुष्य की विश्व से सम्बन्ध-गाथा समझी जाती है और जो इसे दुहराते हैं, उनके लिए प्रमुखत: धार्मिक महत्व रखता है अथवा इसका जन्म किसी सामाजिक संस्था, रीति-रिवाज अथवा

परिस्थितियों की किसी विशेषता की व्याख्या करने के निमित होता है। इस स्वरूप-विवेचना में आदिम मानस, धार्मिक पक्ष, अतिप्राकृतिक तत्व तथा सामाजिकता के पक्ष का कथन हुआ है।"[21]

- डॉ. विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार, "मिथक तत्व माया की भांति ही मनुष्य की निश्चित सर्जना शक्ति का विलास है। यह ऊपर से देखने में असत्य या अंधविश्वास भले ही प्रतीत हो, किन्तु गंभीरतापूर्वक विचार करने पर उसमें किसी प्रच्छत्र या परोक्ष सत्य को पा लेना कठिन नहीं है।"[22]
- डॉ. लक्ष्मी नारायण वर्मा ने अपनी शोध पुस्तक 'पुराख्यान और कविता' में "मिथक का अर्थ- वाणी का विषय उद्धत किया है, जिससे तात्पर्य है कि एक कहानी, एक आख्यान जो प्राचीन काल में सत्य माने जाते थे और जो कुछ रहस्यमय तथा गोपनीय अर्थ भी देते थे।"[23]
- 'जर्मन विद्धान उसनेर गौटरमैन 'माइथोलॉजी इज द साइंस आफ मिथ' में कहते हुए " मिथक को धार्मिक विचारों के विज्ञान से अभिहित करते हैं।'[24]
- प्रोफेसर गिल्बर्ट मरे तथा मोड बोडकिन के अनुसार, "कवि मिथक के माध्यम से जो जातीय कल्पना से उद्‌भुत होते हैं, केवल अपने अनुभवों को ही वाणी नहीं देता वर्ण समस्त जातीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देता है। इस प्रकार मिथक मानव जाति के वैयक्तिक और सामाजिक भावों और विचारों, आस्था और विश्वास का वाहक बनकर अभिव्यक्ति पाता है।"[25]
- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, "मिथक का अर्थ है- ऐसी परंपरागत कथा जिसका सम्बन्ध अतिप्राकृत घटनाओं और भावों से होता है, मिथक मूलत: आदिम मानव के समष्टि-मन की सृष्टि है, जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है।"[26]
- डॉ. विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार, "मिथक रचनाकार की कल्पना का वह मूर्त रूप है, जो उसके व्यापक क्षेत्र को व्यक्त करने के लिए अतीत के उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो, जिसके लिए पुरा कथा का आधार लिया गया है।"[27]

उपर्युक्त परिभाषाओं में विद्धानों के अपने विचार व अपने तर्क हैं। एक व्यक्ति जिसके कार्यों और प्रत्यनों में अतिप्राकृत शक्ति हो, वही व्यक्ति मिथक का रूप धारण करता है, जैसे राम, सीता आदि। एक ऐसी कहानी जो हमारी जातीय संस्कृति से सम्बन्धित हो, जिस कहानी में कोई अतिप्राकृत शक्ति का गुण हो, वही कथा मिथक का आधार होती है। मिथक हमारी आकांक्षाओं को व्यक्त करने का माध्यम होते हैं, मिथक अलौकिक संसार की कथाएँ हैं अर्थात जिस कथा में कुदरती शक्ति हो वह कथा बाद में मिथक का रूप ले लेती है। लोग उस कथा में धर्म के समान विश्वास करने लगते हैं। मिथकों का सम्बन्ध आदिम मनुष्यों से है। आज भी मिथकों को बार-बार इस लिए दुहराया जाता है, क्योंकि मिथकों में लोगों की धार्मिक आस्था विद्यमान होती है। मिथक ऊपर से असत्य ही दिखते हैं, लेकिन इन पर गहराई से विचार करने पर यह हमें बहुत सारी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। मिथक उस समय जन्म लेते हैं,

जब कोई घटना अतिप्राकृत होती है और वह घटना मनुष्य द्वारा ही जन्म लेती है। मिथक वह है, जो प्राचीन काल में सत्य माने जाते थे।

आदिम मनुष्य की धर्म में बहुत गहरी आस्था थी। मिथक को एक प्राचीन परंपरा माना गया है और यह परंपरा आज भी चली आ रही है। जो विज्ञानी है, वह मिथक को नहीं मानते , क्योंकि जो वैज्ञानिक होते हैं, वह किसी भी सत्य तक पहुँचने के लिए सबूत खोजते हैं, फिर जाकर किसी घटना को सत्य मानते हैं।

कु॰दीपमाला के अनुसार, "मिथक एक ऐसा आख्यान है, जो प्राचीन काल का सत्य है, रहस्यमय है, गोपनीय है और जिसमें इतिवृत्तात्मकता है। वह सभी पौराणिक चरित्र, प्रसंग एवं घटनाएँ जिनके भले ही कोई ऐतिहासिक प्रमाण न हो, लेकिन जो नये अर्थ से युक्त होकर काव्य में प्रयुक्त होते हैं, वह मिथक कहलाते हैं। सामान्यत: ऐसी प्रचलित कथाएँ, घटनाएँ अथवा मान्यताएँ जिनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता संदिग्ध हो, किन्तु जो जन-सामान्य के संस्कारों में एकदम प्रामाणिक रूप से विद्यमान हों, मिथक कहलाते हैं।"[28]

➢ मिथकों का स्वरूप

मिथक वह होते हैं, जिन्हें आज की घटनाओं से जोड़कर नया आकार प्रदान किया जाता है। हम किसी भी घटना को मिथक नहीं कह सकते। वह घटना ही मिथक होती है, जिसमें कोई खास गुण हो। मिथक ही ऐसा माध्यम होते हैं, जिनके माध्यम से कोई भी रचनाकर अपनी बात को पाठकों के समक्ष अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। जब से इस सृष्टि की रचना हुई है, तभी से मानव की रचना हुई है और तभी से ही मिथकों की रचना हुई मानी जाती है। मनुष्य के जीवन में घटनाएँ घटित होती रहती हैं। कुछ घटनाएँ अतीत में हुई होती है और कुछ वर्तमान में होती हैं, इन्हीं घटनाओं से मनुष्य अपने जीवन का विकास करता है।

डॉ. शंभुनाथ के अनुसार, "मिथक शब्द अंग्रेजी के 'मिथ' का पर्याय है। मिथक के लिए हिन्दी में दंत कथा, पुरावृत्त, पुराख्यान, मिथक आदि कई शब्द प्रचलित हैं। इसमें मिथक ही सर्वाधिक मान्य हो रहा है, क्योंकि यह शब्द अंग्रेजी 'मिथ' से अधिक निकट प्रतीत होता है। 'मिथक'शब्द के अर्थ को समझने के लिए 'मिथ' के मूल अर्थ की व्याख्या करनी पड़ती है। सामान्य भाषा में इसका अर्थ काल्पनिक कथाओं से है। 'मिथक' शब्द का मूल स्त्रोत ग्रीक 'मुथोस' और लैटिन का 'मिथास' है, जिसका अर्थ होता है- शब्द, कथा या

कहानी। 'लोगोस' और संगतियुक्त वक्तव्य से भिन्न अर्थ में 'मुथोस' का इस्तेमाल किया जाता था। साहित्यिक आलोचना के अंतर्गत इसे कथानक के अर्थ में भी ग्रहण किया गया।"[29] मिथक को अगर लोग समूह में मान्यता प्रदान न करते तो आज मिथक का प्रयोग कभी नहीं होना था।

डॉ. अश्विनी पराशर अनुसार, "मिथक शब्द का सम्बन्ध संस्कृत के 'मिथस' या 'मिथ्या' से है, लेकिन डॉ. नगेन्द्र ने संस्कृत शब्दों के समानान्तर मिथक को 'मिथ्या' या असत्य नहीं मानते। उनका मत है कि मिथक संस्कृत का सिद्ध शब्द नहीं है। संस्कृत में इसके निकटवर्ती दो शब्द हैं- (1) मिथस या मिथ जिसका अर्थ है- परस्पर और (2) मिथ्या, जो असत्य वाचक है। यदि मिथक का सम्बन्ध मिथ से स्थापित किया जाए तो इसका अर्थ हो सकता है- सत्य और कल्पना का परस्पर अभिन्न सम्बन्ध। मिथ्या से सम्बन्ध जोड़ने पर 'मिथक' का अर्थ कपोलकथा बन सकता है। वास्तव में 'मिथ' के पर्याय के रूप में मिथक शब्द के निर्माण में अर्थ साम्य की अपेक्षा ध्वनि साम्य की प्रेरणा ही अधिक रही है, अर्थात् समानर्थक की अपेक्षा समान-ध्वन्यात्मक शब्द ही अधिक है।"[30] मिथक गप्प नहीं अगर गप्प होता तो लोग इसमें कदापि विश्वास न करते। मिथकों में कोई खास विशेषता है, जिसके कारण आज भी लोगों की मिथकों के साथ आस्था जुड़ी हुई है। दिविक रमेश अनुसार मिथ या मिथक के संदर्भ में, "मिथ इज द रियाल्टी ऑफ इट्स टाइम, अर्थात् मिथ अपने समय का यथार्थ होता है, अर्थात् मिथ को केवल उसके रंग-रूप या उसकी मिथकीय छवि के आधार पर नहीं बल्कि उसके मूल में छिपे यथार्थ को समझने के रूप में भी ग्रहण करना चाहिए। मिथ और मिथक अपनी अर्थगत संकल्पनाओं में समान नहीं हैं। मिथ प्राय: तर्क के विपरीत कोरा कल्पनाधर्मी अधिक माना जाता रहा है, जबकि मिथक अलौकिकता का पुट रखते हुए भी लोकानुभूति का वाहक होता है। मिथक को भारतीय संदर्भ में आदिम युग के वास्तविक विश्वासों की अभिव्यक्ति माना गया है, जो आख्यानपरक भी है, और प्रतीकवत भी। मिथ या मिथक कोरी कल्पना या गप्पबाजी न होकर, कल्पना के खोल में अपने समय का एक सामाजिक यथार्थ होता है। सत्रहवीं-अठाहरवीं शताब्दियों में कपोल-कल्पना समझा जाने वाला मिथ मनोविज्ञान और विज्ञान के नवोन्मेष के साथ अपना अर्थ बदलने लगा। मिथक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम हो सकता है। मिथक आधुनिक जीवन के सत्य को प्रखर एवं गहरी व्यंजना देने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।"[31] कु॰ दीपमाला के अनुसार , "मिथकों का शुरू में जो स्वरूप था वह धार्मिक एवं प्राकृतिक था, वैज्ञानिक, घटना प्रधान, सामाजिक, प्रतीकात्मक आदि था।"[32]

➢ मिथक के आधारभूत तत्व

आधारभूत तत्व का अर्थ होता है, किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के तत्व या गुण। इन्हीं तत्वों के आधार पर किसी व्यक्ति,वस्तु के गुणों की पहचान होती है। इसी प्रकार मिथक के भी कुछ तत्व होते हैं, जिनके आधार पर मिथकों को पहचाना जाता है। मिथक का नाम लेते ही हमें पुरानी कथाओं का संस्मरण होने लगता है। साहित्य में सबसे पहले मिथकों का प्रयोग कब और कैसे हुआ यह प्रश्न कठिन सा प्रतीत होता है। मिथकों के माध्यम से साहित्यकार अपने साहित्य को आकर्षक बना सकता है। जब कोई गंदी चीज़ होती है, तो उसको हम अपने घर में नहीं रखना चाहते, लेकिन जब वही वस्तु सुंदर दिखने लग जाती है, तो हम उसे अपने घर में रख लेते हैं। ठीक वैसे ही मिथक होते हैं, जिनके माध्यम से रचना को सुंदर बनाया जाता है।

डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति अनुसार, "जब कलाकार की आत्मा व्याकरण की शक्ति पद, पदार्थों में बंधी हुई बाह्य जगत की व्यवस्था के ढांचे में नहीं अट पायी तो मिथक-तत्व का आविर्भाव हुआ। मिथक तत्व कलाकार के हाथ में ऐसे रंग की पेटी और कूची दे देता है, जिसके द्वारा वह रेखांकित गधे को भी आकर्षक बनाकर जीवनोपयोगी दिखा देता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहते थे, कि गधे को कोई भला आदमी ड्राइंग रूम में घुसाना पसंद नहीं करेगा, पर रेखांकित गधे को शौक से ड्राइंग रूम में सजाने में नहीं हिचकेगा।"[33] जब मनुष्य ने इस धरती पर जन्म लिया तो उसने अपनी सुरक्षा के लिए बहुत सारी क्रियाएँ की होंगी। इन क्रियाओं को करते हुए उसे बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके जीवन में इस दौरान बहुत सारी घटनाएँ हुई, यही घटनाएँ मिथकों के रूप में परवर्तित हो गई। इन्हीं घटनाओं से ही मिथकों की उत्पत्ति होती है और यह घटनाएँ मनुष्य द्वारा ही घटित होती है, इसलिए मिथकों को मनुष्य द्वारा ही अभिव्यक्ति मिलती है।

श्रीकला वी.आर के अनुसार, "मिथक निर्माण का प्रमुख तत्व मानव मन की अनुभूतियाँ एवं बाह्य संसार है। मानव अपनी अनुभूतियों के प्रत्यक्षीकरण के लिए किसी उपादान या विषय वस्तु का आधार होना आवश्यक है। बाह्य तत्व में प्रकृति, अनुष्ठान, ऐतिहासिक घटनाएँ आदि आते हैं और आंतरिक तत्व में कल्पना, जिज्ञासा, भय तथा आनंद आदि मानवीय वृत्तियाँ सहायक सिद्ध होती हैं। कथात्मकता, धार्मिकता, यथार्थता, नवीन दृष्टिकोण, प्रतीक-प्रधानता, समूहगत भावों का अभिव्यक्त रूप आदि मिथकों को जीवंत बनाए रखने वाले तत्व हैं। मानव का आंतरिक जगत मिथक निर्माण के तत्वों में प्रमुख है। इसके आंतरिक जगत ने ही इन बाह्य तत्वों की सृष्टि की है।"[34] जब हम आज भी अपने साहित्य में मिथकों का प्रयोग करते हैं, तो ऐसा करने से हम अपने इतिहास का पुन: अध्ययन करते हैं। मिथकों के तत्व निम्नलिखित हैं-

- **व्याख्यात्मकता**

- **धार्मिकता**
- **यथार्थता**
- **नवीन दृष्टिकोण**
- **प्रतीक प्रधानता**
- **समूहगत भावों का अभिव्यक्त रूप**

➢ व्याख्यात्मकता

व्याख्यात्मकता को कथात्मकता भी कहा जाता है। कथात्मकता मिथकों की महत्वपूर्ण विशेषता है, क्योंकि मिथक कथा प्रधान होते हैं। अगर कोई कथा होगी तभी उसमें मिथकों का निर्माण होगा। मिथकों का कथा प्रधान होना बहुत जरूरी है। मिथकों में जो कथा कही गई होती है, उससे स्पष्ट होने वाले सत्य को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। रचनाकार जो भी रचना रचता है, वह अपनी रचना को समाज के तत्वों के आधार पर प्रस्तुत करता है, उसका उद्देश्य होता है कि वह लोगों को अपनी रचना के माध्यम से कोई संदेश दे सके। रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से समाज की सच्चाई को पेश करता है। जिस रचना से समाज के लोगों को लाभ मिलता हो, रचना तो वही सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस सम्बन्ध में अश्विनी पराशर ने लिखा है, "रचना में प्रयुक्त किसी मिथक के अंतर्गत कथा तत्व विद्यमान तो रहता है, किन्तु उसका महत्व गौण हो जाता है।"[35]

इन कथाओं का उद्देश्य समय के अनुसार नवीन मूल्यों की स्थापना करना। आज श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, शिव, पार्वती आदि मिथकीय पात्रों को नवीन संदर्भों में अभिव्यक्त किया जाता है। इन कथाओं में यह नहीं देखा जाता कि विषय कैसा है, बल्कि उस कथा से जो भावनाएँ व्यक्त होती हैं, उनको महत्व दिया जाता है। इसलिए व्याख्यात्मकता मिथकों का महत्वपूर्ण तत्व है। कथात्मकता मिथक की आत्मा है। जैसे आत्मा के बिना शरीर कुछ नहीं क्योंकि आत्मा ही शरीर में जान डालती है, अन्यथा शरीर मिट्टी का पुतला है, वैसे ही कथा के बिना मिथकों का कोई अस्तित्व नहीं है। मिथकीय कथाओं को नवीन आधार प्रदान करना चाहिए।

➢ धार्मिकता

मिथक को शुरू से ही धर्म के साथ जोड़कर देखा गया है अलग नहीं। जब भी कोई ऐसी घटना हो जाती थी जो हैरान करने वाली होती थी अर्थात जो जादू की तरह प्रतीत होती थी, उसको ही मिथक माना जाता था। बहुत सारे विद्वानों ने भी मिथक का आधार धार्मिक कथाओं को माना है। मिथकों का आधार चाहे धार्मिक कथाएँ हों, लेकिन इन कथाओं में लोगों का अटूट विश्वास है, क्योंकि शुरू से ही मानव का ईश्वर में बहुत विश्वास रहा है। इन मिथकीय कथाओं में समाज के हित की भावना छुपी हुई होती है। लोग ईश्वर की आराधना इसलिए करते हैं, क्योंकि लोगों को विश्वास होता है कि हर अच्छे-बुरे समय में ईश्वर उनके साथ है। इसलिए इन मिथकीय कथाओं के पीछे लोगों का विश्वास झलकता है। लोग ईश्वर की इतनी आराधना करते हैं, तभी तो समाज में धर्म को इतना सम्मान दिया जाता है। जैसे श्रीराम और श्रीकृष्ण आज भी पूजनीय माने जाते हैं। डॉ. नगेन्द्र का मत है, "इनमें एक विशेष प्रकार की कथाओं का प्रचलन है, जिनको धार्मिक माना जाता है और जिनका सम्बन्ध कर्मकांड, नैतिक आचार और समाज-व्यवस्था के साथ होता है। इनका उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है। लोग इन्हें आदिम बृहत्तर और अधिक सार्थक सत्य के रूप में ग्रहण करते हैं, जिससे कर्मकांड तथा नैतिक कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिलती है और साथ ही उन्हें सम्पन्न करने के विधि-विधान का ज्ञान भी प्राप्त होता है।"[36] जो पहले से हमारे धार्मिक विश्वास प्रचलित होते हैं, उन धार्मिक विश्वासों को भी मिथक के रूप में लिया जा सकता है।

श्रीकला वी.आर के अनुसार, "मिथकों को धार्मिक विश्वासों में रुढ़ करना संगत नहीं है। मिथक को केवल धर्म के संदर्भ में रखकर व्याख्या करना इसकी विकासशीलता को अवरुद्ध कर देने के समान है। प्रागैतिहासिक युग में समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए जिन नियमों का पालन किया गया, कालांतर में वह ही नियम धर्म में रूपायित हुए। भारतीय चिंतनधारा में धर्म को कर्तव्य के साथ जोड़ दिया गया है और मानवकल्याण के लिए खड़े रहना धर्म का प्रथम कर्तव्य है। भारत के प्रत्येक मिथकीय पात्र में मानवीय कल्याण की यह भावना देखी जा सकती है। मिथक में धर्म केवल तत्वों के रूप में ही आते हैं।"[37]

➢ यथार्थता

मिथकों का महत्वपूर्ण तत्व उसमें निहित यथार्थता है। मिथकीय कथाओं के बारे में केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि ऐसा हुआ होगा। मान लिया जाए कि मिथकीय कथाएँ सत्य नहीं तो भी इन कथाओं को आज के संदर्भ में प्रयोग करके हम अपनी समस्याओं का निराकर्ण करते हैं। यह मिथकों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। यही विशेषता मिथकों का प्रतीकों के साथ सम्बन्ध जोड़ती है। यथार्थ को परिभाषित करते हुए डॉ. रमेश गौतम का कथन है, "यथार्थ बनता है, उस जीवन दृष्टि से जो मानव समाज के ऐतिहासिक विकास को देखती है, स्वीकारती है और जो मनुष्य जाति की उन सनातन समस्याओं को पहचानती है, जिससे जीवन का ह्रास हुआ है और रेखांकित करती है। उन कमियों व अभावों को जिसके चलते मनुष्य पीड़ित है और स्वप्नों को भी, जो मनुष्य सुख शक्ति की खोज में देखता रहता है।"[38] आज भी

सीता को पतिव्रता पत्नी के प्रतीक के रूप में जाना जाता है और राम को अच्छाई के प्रतीक के रूप में जाना जाता है।

➢ नवीन दृष्टिकोण

जैसे कि पीछे भी कहा जा चुका है कि मिथकीय कथाएँ उद्देश्य प्रधान होती हैं अर्थात आज भी मिथकीय कथाएँ हमें नवीन रास्ता दिखाती हैं। यह हमारे जीवन को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। आज भी मिथकों का प्रयोग नवीन संदर्भों के रूप में किया जाता है। किसी भी कथा में जिसमें मिथक हो, उस मिथक में कोई न कोई उद्देश्य तो अवश्य होता है, कोई भी मिथकीय कथा उद्देश्यहीन नहीं होती। हम जो भी मिथकीय कथा का प्रयोग करते हैं, उस कथा का अपने अनुसार प्रयोग करते हैं कि उस मिथकीय कथा के माध्यम से हम क्या कहना चाहते हैं। मनुष्य समाज का महत्वपूर्ण अंग है। समाज में अनेक प्रकार की घटनाएँ होती हैं। इन घटनाओं को मनुष्य मिथक के रूप में देखता है। यही घटनाएँ मनुष्य के लिए प्रेरणादायिक बनती है। व्यक्ति के बीत चुके कल और आज में कई प्रकार की घटनाएँ होती हैं, यही घटनाएँ उसके कार्य का आधार बनती हैं, इन्हीं घटनाओं से मनुष्य अपने आने वाले कल को अच्छा बनाता है। जो मिथकीय कथाएँ होती हैं, यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं, हम इन कथाओं को संस्कारों के रूप में ग्रहण करते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंप देते हैं। प्रत्येक युग में मिथक नवीन दृष्टिकोण लेकर प्रकट होते हैं।

➢ प्रतीक प्रधानता

प्रतीक मिथक की शक्ति होते हैं। इसलिए यह मिथकों की महत्वपूर्ण विशेषता है। मिथक प्रतीकों से भरे पड़े होते हैं। प्रतीकों के माध्यम से मिथकों को रूप मिलता है। हम जिस भी मिथक का प्रयोग करते हैं, उसको प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। जैसे समय बदलता है, वैसे ही प्रतीक भी बदलते हैं। सूर्य गर्मी का और रोशनी का प्रतीक है। इस सम्बन्ध में डॉ. शंभुनाथ का मत है, "मिथक और प्रतीक का आंतरिक सम्बन्ध निरंतर विकासशील है। प्रतीक और मिथक दोनों जातीय सांस्कृतिक चेतना की निर्मितियाँ हैं। सामयिक परिस्थितियों के अनुरोध वश मिथकों में निहित प्रतीक बदलते रहते हैं और भावधारा का विकास करते रहते हैं।"[39] प्रतीकों की सर्जना आदिमानव ने की, क्योंकि आदिमानव शिक्षित नहीं था, इसलिए उसे भाषा का ज्ञान नहीं था। जब भी वह कोई घटना देखता था तो भाषा का ज्ञान न होने के कारण उस घटना को प्रतीकों के माध्यम से समझाता था। इन्हीं प्रतीकों से मिथक विकसित हुए। प्रतीकों के

माध्यम से हम अपने मन के भावों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। मिथक का प्रतीक के साथ एक कभी न टूटने वाला सम्बन्ध है। मिथक प्रतीकों के माध्यम से सच्चाई को पेश करते हैं। मिथकीय पात्र प्रतीकों के रूप में ही लोगों के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। प्रतीक मिथक की शक्ति को दुगना करते हैं। एक प्रयोगकरता मिथकों का प्रयोग अपने मुताबिक करता है और मिथकों में नए प्रतीकों का निर्माण करता है। इसलिए मिथक युग-युगों से प्रयोग होते आ रहे हैं। भारत में माता सरस्वती को विद्या का प्रतीक माना गया है।

➢ समूहगत भावों का अभिव्यक्त रूप

समूह का अर्थ है- बहुत सारे व्यक्ति और व्यक्तिगत का अर्थ है, एक व्यक्ति का मत। जब कोई एक व्यक्ति किसी बात को सत्य मानता है तो वह बात सत्य नहीं मानी जाती, अगर उसी बात को लोग समूह के रूप में स्वीकार करें, तो वह सत्य मानी जाती है। मिथक भी इसी प्रकार है, मिथकों को समाज के सभी लोग समूह रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। समाज को नियंत्रित करने के लिए धार्मिक व्यवस्था का निर्माण किया गया था जिससे सभी लोग मिल-जुलकर रह सके। फिर आगे चलकर धार्मिक व्यवस्था के तहत लोगों को वर्णों के आधार पर अलग-अलग कर दिया गया। इस वर्ण-व्यवस्था के आधार पर चार जातियाँ बनाई गई, जिन के आधार पर लोगों को अलग किया गया। जैसे सिक्ख धर्म को मानने वाले सिक्ख धर्म में और ईसाई धर्म को मानने वाले ईसाई धर्म में। इसी धार्मिक व्यवस्था के आधार पर जातियों को बांटा गया। धर्म को मानव कल्याण के भले के रूप में जाना जाता है। जो हमारे समाज में वर्ण-व्यवस्था की गई है, यह आगे चलकर बहुत भयानक रूप धारण करती जा रही है, जो कि हमारे लिए चिंता का विषय है। हमारे देश के जो नेता है, वह अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए इस समस्या को और बढ़ावा दे रहे हैं। मिथक सामूहिक होते हैं, इसलिए समाज में इन्हें मान्यता प्राप्त है। मिथकों का निर्माण कोई एक व्यक्ति नहीं करता और न ही एक दिन में होता है। मिथकों को इसलिए सामूहिक कहा गया है, क्योंकि मिथकों का निर्माण बहुत सारे व्यक्तियों के सहयोग से होता है। मिथक लोक विश्वासों पर आधारित होते हैं।

श्रीकला वी. आर के अनुसार, "मिथक मनुष्य की सामूहिक आस्थाओं, विश्वासों एवं भावनाओं का ऐसा संयोजन है, जो समयावधि के प्रवाह में शनै: शनै: रूप ग्रहण करता हुआ संपूर्ण जाति अथवा मानव समाज की चेतना को प्रभावित करता है।"[40]

अंत में मिथक के तत्वों से यही स्पष्ट होता है कि मिथक प्राचीन कथा का आधार लेकर, धर्म को दर्शाते हुए, वास्तविकता को प्रस्तुत करते हुए, नवीन संदर्भों का आश्रय लेकर, प्रतीकों के सहारे, समूहगत भावों को अभिव्यक्त करते हैं।

मिथकों के प्रकार

मिथकों का मानव जीवन के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। मिथकों ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। मिथकों का प्रयोग समाज के सभी क्षेत्रों में हुआ है, जैसे- सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि। मिथकों के प्रकार अलग-अलग विद्धानों ने निम्नलिखित निर्धारित किए हैं-

ए.जी. गार्डनर ने, "मिथकों को बारह श्रेणियों में विभाजित किया है-

1. ऋतु-परिवर्तन तथा प्राकृतिक परिवर्तनों से सम्बन्धित मिथक:

ऋतुओं, दिन-रात, मास, वर्ष आदि का क्रम। सूर्य, इन्द्र, पृथ्वी आदि की गतिशीलता, परिक्रमा, स्थिति आदि की कथाएँ। उदाहरणत: सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के सम्बन्ध में राहू का मिथक लिया जा सकता है।

2. अन्य प्राकृतिक तत्वों के मिथक:

अग्नि, जल, वायु, पर्वत, सरिता आदि के जन्म से सम्बन्धित रहस्यमयी कथाएँ। यथा विष्णु के चरणों से होती हुई, शिव की जटाओं तक पहुंची गंगा की यात्रा का मिथक।

3. विशिष्ट या आसामान्य प्रकृति-तत्वों के मिथक:

भूकम्प, प्रलय, ज्वालामुखी आदि की कथाएँ। यथा-मनु द्वारा जल प्रलय के समय हुए चहुमुखी विनाश को देखकर चिंतातुर होने का मिथक।

4. सृष्टि के उद्भव से सम्बन्धित मिथक:

मनु आदि की कथाएँ। यथा-ब्रहमा के सृष्टि निर्माता का मिथक।

5. देवों के जन्म, महत्व और स्वरूप से सम्बन्धित मिथक:

यथा- लक्ष्मी, सरस्वती के जन्म सम्बन्धी मिथक और सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा का क्रमश: विद्या की देवी, धन की देवी और शक्ति की देवी के मिथक।

6. मनुष्य एवं पशुओं के जन्म सम्बन्धी विवरण देने वाले मिथक:

यथा-भारतीय परम्परा में मनु और श्रद्धा से मानव की उत्पत्ति का मिथक तथा ग्रीक परम्परा में 'आदिम' और 'हव्वा' से सृष्टि-उत्पत्ति का मिथक।

7. जीव के आवागमन के मिथक:

मृत्यु के बाद के जीवन की व्याख्या। यथा-जीव की चौरासी लाख योनियों का मिथक।

8. वीर नायक, परिवारों और राष्ट्रों से सम्बन्धित मिथक:

महापुरुष, वंश, कबीले आदि का उदय। यथा-राम, कृष्ण की वीर नायकों के रूप में मान्यता, कर्ण महादानी के रूप में मिथक।

9.सामाजिक क्रिया-कलापों तथा संस्थाओं से सम्बन्धित मिथक:

विवाह लोक विवरण पर आधारित एक सामाजिक संस्था जिसके अनेक मिथक उपलब्ध है। यथा-शिव-पार्वती के विवाह का मिथक।

10. मृत्यु के पश्चात् आत्मा की स्थिति:

स्वर्ग-नरक आदि से सम्बन्धित मिथक।

11. दैत्यों और दानवों की गाथाओं के मिथक:

यथा-देवासुर संग्राम में दैत्यों के मिथक।

12. ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित मिथक:

यथा-शिवा जी, महात्मा गांधी आदि के मिथक।"[41]

दिविक रमेश के काव्य-नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में जो मिथकों के प्रकार निर्धारित हुए हैं , वह निम्नलिखित हैं-

- **धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक**

- **प्रतीकात्मक मिथक**
- **सामाजिक मिथक**

➢ धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक:

मनुष्य के इस पृथ्वी पर प्रस्थान के साथ ही मिथकों का जन्म माना जाता है। मनुष्य ने जब से प्राकृतिक घटनाओं को देखना शुरू किया है, यह प्राकृतिक घटनाएँ मिथकों में परिवर्तित हो गई। मिथकों का जो शुरू में स्वरूप प्रचलित हुआ था, वह धार्मिक एवं प्राकृतिक ही था। जिस भी किसी प्रकृति की वस्तु से मनुष्य को फ़ायदा होता था, उस प्रकृति वस्तु को मनुष्य धर्म के रूप में पूजने लग जाता था। जैसे सूर्य को लोग सुबह पानी इस लिए देते हैं, क्योंकि ऐसे करने से उनकी आँखों की रोशनी ठीक रहती है। इस प्रकार अग्नि द्वारा यज्ञ किए जाते हैं। इसलिए मनुष्य ने इन प्राकृतिक वस्तुओं को धार्मिक रूप में पूजना शुरू कर दिया। जैसे- अग्नि को अग्निदेव, सूर्य को सूर्य देवता आदि कहना शुरू कर दिया। जिस भी किसी चीज़ से मनुष्य को सहायता मिलती है, मनुष्य उस चीज़ का सत्कार करने लग जाता है। प्राकृतिक और धार्मिक मिथक को अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि मनुष्य प्राकृतिक सत्ताओं को भी धार्मिक रूप में देखता है। अगर प्राकृतिक वस्तुएँ न होती तो यह दुनिया भी न होती। अगर वृक्ष न होते तो हम भी जीवित न होते। बिना किसी डर के मनुष्य ईश्वर की पूजा नहीं करता। जिस धरती पर हम रहते हैं, उस धरती को भी माता के समान पूज्य माना जाता है।

➢ प्रतीकात्मक मिथक:

मिथकों में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है। अगर प्रतीक को मिथक की आत्मा कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रतीकों के माध्यम से मिथक अभिव्यक्ति पाते हैं। प्रतीक के माध्यम से हम किसी भी मिथक को अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रतीक मिथक की शक्ति को दो-गुना करते हैं। प्रतीकों के माध्यम से मिथकों के संदर्भ बदलते रहते हैं। एक साहित्यकार अपने साहित्य में अपनी रचना के अनुसार मिथकों को प्रतीकों के रूप में प्रयोग करता है। इसी से मिथक नवीन बने रहते हैं। जैसे समय परिवर्तनशील होता है, वैसे ही मिथक समय के अनुसार अपने संदर्भ बदलते हैं और मानव को सच्चाई से जागृत कराते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. रमेश गौतम का विचार है, " प्रतीक मिथक की शक्ति को दूगुणित करके उद्भासित करते हैं, वे मिथक को नित्य नवीन बनाएँ रखते हैं, क्योंकि प्रयोग के धरातल पर रचनाकर अपने युग और कथा के अनुसार उनमें संशोधन करके मिथक में नवीन प्रतीकात्मक का संधान करते हैं। इसी से मिथक सर्वयुगीन

बने रहते हैं, युग सत्य के अनुरूप अपना रूप परिवर्तित करके सत्य से साक्षात्कार करते हैं।"[42] प्रतीक और मिथक का शरीर और आत्मा का रिश्ता होता है। प्रतीक और मिथक दोनों हमारी संस्कृति द्वारा निर्मित हुए हैं। परिस्थितियों के अनुसार मिथकों में जो प्रतीक निहित होते हैं, बदल जाते हैं। जैसे मेघ खुशी के और उदासी के प्रतीक है। इसका अर्थ यह हुआ कि जैसा समय होता है, वैसे मिथकों में प्रतीकों का उपयोग होता है।

➢ सामाजिक मिथक:

मनुष्य समाज का अभिन्न अंग होता है। समाज एक से अधिक व्यक्तियों के समूह से निर्मित होता है। समाज के बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है और न ही समाज का व्यक्तियों के बिना निर्माण हो सकता है। समाज और व्यक्ति दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आवश्यकताएँ होती हैं। कोई भी व्यक्ति अपनी सभी जरूरतें अकेले पूरी नहीं कर सकता, उसे दूसरे व्यक्तियों की जरूरत

अवश्य पड़ती है। अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए वह दूसरें मनुष्यों से सम्बन्ध स्थापित करता है, इन्हीं सम्बन्धों से समाज का निर्माण होता है। समाज स्थिर नहीं है, यह समय के अनुसार बदलता रहता है। समाज में अनेक प्रकार की घटनाएँ घटित होती रहती है, जो मनुष्य के जीवन को परिवर्तित करती रहती हैं। कुछ घटनाएँ साधाराण होती है और कुछ असाधारण। असाधारण घटनाओं का अर्थ है- चमत्कारपूर्ण घटनाएँ अर्थात जिन घटनाओं में कुदरती करिश्मा हो वह घटनाएँ असाधारण होती है। इन्हीं चमत्कारपूर्ण घटनाओं से मिथकों का जन्म होता है। मिथकीय घटनाएँ चिरस्थायी होती हैं, इन का अस्तित्व कभी नहीं मिट सकता। इस प्रकार समाज में ऐसी कई घटनाएँ होती हैं, जो अविश्वसनीय होती हैं। यही घटनाएँ मिथकों का रूप धारण करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाज मिथकों से भरा पड़ा है। इन घटनाओं में स्त्री सम्बन्धी भी अनेक मिथक मिलते हैं। समाज में शुरू से ही स्त्रियों की स्थिति सोचनीय रही है। आज भी पुरुष स्त्री को साधन मात्र समझता है, आज भी वह चाहता है कि वह अग्नि परीक्षा दे। आज भी पुरुष में अहं की भावना है। आज की स्त्री की स्थिति बताने के लिए हम प्राचीन मिथकों का आज के संदर्भ में आश्रय ले सकते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज से ही मिथकों का जन्म होता है। मिथक नहीं बदलते बस इसके संदर्भ बदलते हैं। समाज में अनेक तरह के मिथक देखे जा सकते हैं। आज का युग आधुनिकता का युग है, लेकिन आज भी मिथक विद्यमान है।

मिथक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अतीत के बारे में ज्ञान प्राप्त करना ही मिथक है। आज भी साहित्य की बहुत सारी रचनाओं में मिथकों का प्रयोग हो रहा है। सभी समाज के लोगों ने मिथकों का प्रयोग अपनी जरूरत अनुसार किया है। आज आविष्कार का युग है, फिर भी मिथकों का प्रयोग जारी है। मिथकों के माध्यम से हम अपने केवल इतिहास की ही जानकारी प्राप्त नहीं करते, बल्कि अपने वर्तमान जीवन को भी मिथकों के आधार पर विकसित करते हैं। साहित्य का विकास करने में मिथक सहायक होते हैं। डॉ. शंभुनाथ के अनुसार, " मिथक अतीत की घटनाओं से जुड़े होने पर भी वर्तमान के सामूहिक राष्ट्रीय जीवन के संदर्भ में नई अर्थवता की तलाश करते हैं।"[43] किसी भी मनुष्य के सहने की सीमा होती है, जब उसको कोई बार-बार परेशान करता है, तो वह ज्वालामुखी के समान फट पड़ता है।

डॉ. उषा पुरी विद्यावचस्पति के अनुसार, " मिथकों का अव्यक्त रूप आदिम स्मृति के रूप में मानव के अन्तर्मन में विद्यमान रहता है। इनका उदय न सर्वथा चेतन स्तर पर होता है और न सर्वथा अचेतन स्तर पर। इसीलिए इन्हें कल्पना और यथार्थ संगत और असंगत की सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। सीता की कथा में धरती माता का मिथक अंतर्निहित है। वह धरती से प्रकट होती है, धरती के समान कष्ट सहन करती है, पति भक्ति की सभी परीक्षाएँ दे चुकने के बाद भी जब उनसे अपने सतीत्व को प्रमाणित करने की मांग की जाती है, तो धरती फटती है और वह उसमें समा जाती है। धरती की सहनशीलता की भी एक सीमा है और जब उसका अतिक्रमण होता है, तो वह फट पड़ती है। यह जीवन का एक बड़ा सत्य है और यह भी मिथकों द्वारा पुष्ट है।"[44] मिथक अति प्राचीन है, इसलिए जब से इस सृष्टि का उदय हुआ है, तभी से मिथकों को जानने के प्रयास किए जा रहे हैं। अगर यह कहा जाए कि मिथकों का असली विकास तो आधुनिक काल में ही हुआ तो इसमें कोई गलत बात नहीं।

डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति के अनुसार, "मिथक की प्रकृति को समझने और समझाने के यत्न तो प्राचीन यूनान में शुरू हो चुके थे। ईसा की प्रथम शताब्दी तक मिथक की अन्योक्तिगत व्याख्या काफी

प्रमुखता हासिल कर चुकी थी परंतु इसके ज्ञानमूलक अध्ययन विश्लेषण का प्रारम्भ वास्तव में आधुनिक काल में ही हुआ है।"[45] मिथकों का उद्भव भाषा से हुआ है। मिथकों का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है।

डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति अनुसार, "हिन्दी साहित्य में मिथक शब्द स्व. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की देन है। उनकी मान्यता है कि मिथक शब्द का आविर्भाव वाणी के श्रीगणेश के साथ हुआ होगा। भारतीय मिथक परंपरा का श्रीगणेश ऋग्वेद से हुआ।"[46] सबसे पहले आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य में मिथकों का प्रयोग किया।

डॉ.रश्मि कुमार के अनुसार, "आचार्य द्विवेदी की दृष्टि विशेषत: 'मिथ्' धातु और उसमें लगे 'कन्' प्रत्यय पर टिकी थी। संस्कृत में मिथ्+कन् द्वारा मिथक शब्द की प्राप्ति होती है। 'मिथ्' धातु अनेकार्थी होता है। यहाँ इसका अर्थ प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, सहकारी बनना, एकत्र मिलना या समझना होता है, वहीं चोट पंहुचाना, प्रहार करना या वध करना भी होता है। इसी प्रकार 'कन्' प्रत्यय 'स्वार्थो' और 'अल्पर्थो' दोनों दशाओं में प्रयुक्त होता है। मिथक से सम्बन्धित एक पुराण कथा भी प्रचलित है। पुराण- कथा राजा 'मिथि' और उनके पिता 'निमि' से सम्बन्धित है। कथा इस प्रकार है- "बहुत दिनों तक महाराज निमि को कोई पुत्र नहीं पैदा हुआ। पुत्रोत्पत्ति की सारी संभावनाएँ समाप्त हो गई। सामाजिक व्यवस्था के जिम्मेदार मुनि-वर्ग को अराजकता फैल जाने का भय लगने लगा। वह सामूहिक रूप से 'निमि' के यहाँ गए और निवेदन किया कि 'महाराज' आपके मरने के बाद पूरे राज्य में अव्यवस्था फैल जाएगी। इसलिए आप हमें अनुमति दीजिए कि हम समवेत मुनि लोग आपके शरीर का मंथन करें और आपके लिए पुत्र-रत्न प्राप्त करें।

निमि द्वारा मुनियों का प्रस्ताव स्वीकार कर लेने के बाद मुनियों ने निमि की देह का अरणी द्वारा मंथन किया। मंथन सफल हुआ और अरणी-मंथन के फलस्वरूप 'मिथि' का जन्म हुआ जो कालांतर में विदेह और जनक कहलाए। जिस स्थान पर अरणी-मंथन हुआ था, वह 'मिथिल' कहलाया जो बाद में मिथिला नगर बना। अगर इस कथा के प्रतीकों पर विचार किया जाए तो अस्पष्ट नहीं रह जाएगा कि 'निमि' शब्द काल का प्रतीक, 'मुनि' समाज के विचार-वेताओं का प्रतीक, 'अरणी' प्रज्ञत्यात्मक ज्ञान का प्रतीक और 'मिथि' उद्भव का प्रतीक है। अगर पुराण कथा का अर्थ प्रतीकों के माध्यम से किया जाए तो कहना पड़ेगा कि जब मननशील विचार-वेताओं द्वारा काल (इतिहास) का मंथन अनुभवात्मक ज्ञान के सहारे घटित होता है, तब 'मिथि' (मिथ्-इ) जन्म लेता है, जिसमें 'जनकत्व' का अभाव नहीं होता। 'मिथि' 'मिथ्' की अवस्था होती है। अर्थात वह सामाजिक अवस्था जिसमें सृजन और नवोद्भव के क्रम चलते रहते हैं। अगर वर्तमान मिथक का सम्बन्ध पुराण (महाभारत) की मिथि कथा से जोड़ा जाए तो इसे न कल्पना-विलास कहा जा सकता है और न दूर की कौड़ी खेलने की ललक। भारतीय मिथकों की संभावना मिथि-कथा से ही की जानी चाहिए।"[47]

दिविक रमेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

20 वीं शताब्दी के आठवें दशक में अपने पहले ही कविता-संग्रह 'रास्ते के बीच' से चर्चित हो जाने वाले आज के सुप्रतिष्ठित हिन्दी-कवि प्रोफेसर दिविक

रमेश(वास्तविक नाम: रमेश शर्मा) बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। 38 वर्ष की आयु में ही 'रास्ते के बीच' और 'खुली आँखों में आकाश' जैसी अपनी मौलिक साहित्यिक कृतियों पर 'सोवियत लैंड नेहरू एवार्ड' जैसा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाले ये पहले कवि हैं। 17-18 वर्ष तक दूरदर्शन के विविध कार्यक्रमों का संचालन किया। 1994 से 1997 में भारत सरकार की ओर से दक्षिण कोरिया में अतिथि आचार्य के रूप में भेजे गए यहाँ इन्होंने साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कितने ही कीर्तिमान स्थापित किए। वहाँ के जन-जीवन और वहाँ की संस्कृति और साहित्य का गहरा परिचय लेने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप ऐतिहासिक रूप में, कोरियाई भाषा में अनुदित-प्रकाशित हिन्दी कविता के पहले संग्रह के रूप में इनकी अपनी कविताओं का संग्रह 'से दल आइ ग्योल हान' अर्थात चिड़िया का ब्याह है। इसी प्रकार साहित्य अकादमी के द्वारा प्रकाशित इनके द्वारा चयनित और हिन्दी में अनूदित कोरियाई प्राचीन और आधुनिक कविताओं का संग्रह 'कोरियाई कविता-यात्रा' भी ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी ही नहीं किसी भी भारतीय भाषा में अपने ढंग का पहला संग्रह है। साथ ही इन्हीं के द्वारा तैयार किए गए कोरियाई बाल कविताओं और कोरियाई लोक कथाओं के संग्रह भी ऐतिहासिक दृष्टि से पहले हैं।

➢ जन्म एवं शिक्षा:

दिविक रमेश मूल रूप से दिल्ली के हैं। इनका जन्म दिल्ली के एक गाँव किराड़ी(नांगलोई) में 28 अगस्त, 1946(दस्तावेजों में: 6 फरवरी, 1946) को हुआ था। इनके पिता पं॰ चंद्रभान का लोक गायन और संगीत में अद्भुत शौक था। दिविक रमेश की प्रारम्भिक शिक्षा (प्राइमरी तक) गाँव में हुई और शेष अपने ननिहाल क्रोलबाग में रहते हुए 11वीं तक देवनगर, दिल्ली स्थित स्कूल में और एम.ए. हिन्दी, पीएच.डी. तक दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई। इनके नाना हिन्दी के परम हितैषी और सक्रिय सेवक थे।

➢ व्यवसाय:

दिविक रमेश की कर्मस्थली अब तक दिल्ली रही है। दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम.ए. हिन्दी करने के बाद सन 1970 से ये दिल्ली विश्वविद्यालय के मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए, सन 2000 से इसी महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर कार्य करने और 65 वर्ष के हो जाने पर, 28 फरवरी, 2011 को सेवानिवृत्त हो गए। अपने लंबे सेवाकाल में दिविक रमेश ने न केवल स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाने का व्यापक अनुभव लिया है, बल्कि अपने निर्देशन में पीएच.डी. की उपाधि के लिए शोध भी कराते हैं। इसके अतिरिक्त विदेशियों को हिन्दी के अध्यापन का एक लंबा अनुभव तो उनके पास है ही जिसके लिए उन्हें विशेष रूप से सराहा गया है। वर्धा स्थित

'महात्मागांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' में विदेशी हिन्दी विद्यार्थियों को समय-समय पर हिन्दी पढ़ाने के कार्य से जुड़े रहे हैं।

➢ वर्तमान में:

सदस्य, परीक्षा तुल्यता समिति, महात्मा गांधी हिन्दी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा।

➢ पुरस्कार-सम्मान:

दिविक रमेश को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार के सम्मानों से सम्मानित किया गया है। दिल्ली की हिन्दी अकादमी ने तो इन्हें समय-समय पर प्रतिष्ठित साहित्यकार सम्मान सहित तीन-तीन पुरस्कारों-सम्मानों से सम्मानित किया है। हिन्दी अकादमी, साहित्य-अकादमी, केंद्रीय हिन्दी संस्थान और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने इन्हें अपनी-अपनी विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा है। एक लंबे समय तक रूसी सांस्कृतिक केंद्र, दिल्ली के 'लिटरेरी क्लब' के महासचिव भी रहे हैं। यह अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सक्रिय रूप में जुड़े हैं। पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है- **1.** दिल्ली हिन्दी अकादमी का साहित्यिक कृति पुरस्कार, 1983 **2.** सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 1984 **3.** गिरिजा कुमार माथुर स्मृति पुरस्कार, 1997 **4.** एन. सी. ई आरटी का राष्ट्रीय बाल-साहित्य पुरस्कार, 1988 **5.** दिल्ली हिन्दी अकादमी का बाल-साहित्य पुरस्कार, 1990 **6.** अखिल भारतीय बाल-कल्याण संस्थान, कानपुर का सम्मान, 1995 **7.** राष्ट्रीय नेहरू बाल-साहित्य अवार्ड, बालकन-जी-बारी इंटरनेशनल, 1992 **8.** इंडो-एशियन लिटरेरी क्लब, नई दिल्ली का सम्मान, 1995 **9.** प्रकाशवीर शास्त्री सम्मान, 2002 **10.** कोरियाई दूतावास से प्रशंसा-पत्र, 2001 **11.** भारतीय विद्या संस्थान, ट्रिनिडाड एंड टोबेगो द्वारा गौरव सम्मान,2002 **12.** दिल्ली हिन्दी अकादमी का साहित्यिक सम्मान, 2003।

➢ प्रकाशित कृतियाँ (कविता संग्रह):

दिविक रमेश ने अपने कविता-संग्रह में कुल 13 कविताएं लिखी हैं, वह निम्नलिखित हैं-

- **कविता:**

'रास्ते के बीच', 1977 और 2003, 'खुली आँखों में आकाश', 1983, 1987, 1989 'हल्दी-चावल और अन्य कविताएं',1992, 'छोटा-सा हस्तक्षेप', 2000, 'फूल तब भी खिला होता', (खुली आँखों में आकाश और हल्दी-चावल और अन्य कविताएं), 2004 'गेहूं घर आया है', (चुनी हुई कविताएं), 2009, 'वह भी आदमी तो होता है', 2010, 'बाँचो लिखी इबारत', 2012, 'माँ गाँव में है', 2015। (कविता-संग्रह)। 'खण्ड-खण्ड अग्नि' (काव्य-नाटक), 1994। 'फेदर' (अंग्रेजी में अनुदित कविताएं), 1983, 1994।'से दल आइ ग्योल होन' (कोरियाई भाषा में अनुदित कविताएं), 1997। 'अष्टावक्र' (मराठी में अनुदित कविताएं), 1988।

- **आलोचना:**

दिविक रमेश ने जो आलोचनात्मक कार्य किया है, उनकी गिनती कुल पाँच है, वे इस प्रकार हैं-

1. 'कविता के बीच से', किताबघर, नई दिल्ली, 1992, **2.** 'नये कवियों के काव्य-शिल्प सिद्धांत', अभिरुचि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, 1991 **3.** 'साक्षात् त्रिलोचन', सिद्धार्थ प्रकाशन, नई दिल्ली,1990, **4.** 'संवाद भी विवाद भी', ग्रंथलोक, शाहदरा, दिल्ली, 2008, समझा परखा, किताबवाले, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015 **5.** 'हिन्दी बाल-साहित्य: कुछ पड़ाव', प्रकाशन विभाग, (भारत सरकार), नई दिल्ली, 2015।

- **संपादित:**

दिविक रमेश द्वारा जो संपादित कार्य हुआ है, उनकी गिनती दस है, जो निम्नलिखित है-

1. 'निषेध के बाद' (आठवें दशक की कविता), विक्रांत प्रेस, दिल्ली, 1999, **2.** 'हिन्दी कहानी का समकालीन परिवेश', 1980 और 2006, ग्रंथलोक, शाहदरा, दिल्ली, **3.** 'आन्सम्बल' (कविताएं एवं

रेखा-चित्र), विक्रांत प्रेस, दिल्ली, 1992, **4.** 'दूसरा दिविक' (कविता), 1973, विक्रांत प्रेस, नई दिल्ली, **5.** 'दिशा बोध' (पत्रिका), विक्रांत प्रेस, दिल्ली, 1978, 1980, **6.** 'बालकृष्ण भट्ट', वाणी प्रकाशन, 2009, **7.** 'प्रताप नारायण मिश्र', वाणी प्रकाशन, 2012। (कहानियाँ और लेख), बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, कथा-पड़ाव, (कहानियाँ एवं उन पर समीक्षात्मक लेख), 'आंसांबल' (कविताएं, उनके अंग्रेजी अनुवाद और ग्राफीक्स), 'दूसरा दिविक' आदि का संपादन।

- **अनुवाद:**

दिविक रमेश ने जो अनुवाद कार्य किया है, उनकी गिनती पाँच है, वे इस प्रकार हैं-

1. 'कोरियाई कविता-यात्रा' (कोरियाई कविताएं), साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1992, **2.** (टिमोथी वांगुसा की कविताएं) 'सुनो अफ्रीका', साहित्य अकादमी, दिल्ली, **3.** 'कोरियाई बाल कविताएं', नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2001, **4.** 'द डे ब्रक्स ओ इंडिया' (श्रीमति किम यांग शिक की कविताओं का हिन्दी अनुवाद), अजंता बुक्स इंटरनेशनल, दिल्ली, 1999 आदि। उपर्युक्त के अतिरिक्त बल्गारियाई, रूसी, चीनी आदि भाषाओं के साहित्य का समय-समय पर अनुवाद और उनका प्रकाशन।

- **बाल-साहित्य:**

दिविक रमेश ने बच्चों के लिए भी बाल-साहित्य लिखा है, उसमें कविता-संग्रह की गिनती 14 है और कहानी-संग्रह की गिनती 16 है।

कविता-संग्रह:

1. 'जोकर मुझे बना दो जी', 1980, **2.** 'हंस जानवर हो', 1987, **3.** 'कबूतरों की रेल', 1988, **4.** 'छतरी से गपशप', 1989, **5.** 'अगर खेलता हाथी होली', 2004, **6.** 'तस्वीर और मुन्ना', 1997, मधुर गीत भाग-3 और भाग-4, 1999, **7.** 'अगर पेड़ भी चलते होते', 2003, **8.** 'मेघ हंसेंगे ज़ोर-ज़ोर से', 2003, **9.** 'खुशी लौटाते हैं त्योहार', 2003, **10.** '101 बाल-कविताएं', 2008, 2012, **11.** 'खूब ज़ोर से आई बारिश', 2009, **12.** 'समझदार हाथी: समझदार चींटी', 2014, 2015, **13.** 'बंदर मामा', 2014, 2015, **14.** 'छुट्कल-मुट्कल बाल कविताएं', 2016। **कहानी-संग्रह:** **1.** 'सबसे बड़ा दानी',1992, **2.** 'शेर की पीठ पर', 2003, **3.** 'बादलों के दरवाजे', 2003, **4.** 'घमंड की हार', 2003, **5.** 'ओह पापा', 2003, **6.** 'बोलती डिबिया', 2003 (ग्रंथलोक), 'बोलती डिबिया', 2010 (नेशनल बुक ट्रस्ट) **7.** 'ज्ञान परी', 2003, **8.** 'धूर्त साधू और किसान', 1984, **9.** 'गोपाल भांड के किस्से', 2008, **10.** 'त से तेनाली राम ब से

बीरबल', 2007, **11.** 'देशभक्त डाकू', 2011, **12.** 'लू लू की सनक', 2014, **13.** 'अपने भीतर झाँको', 2014, **14.** 'बचपन की शरारत', (सम्पूर्ण बाल-गद्या रचनाएँ), 2016, **15.** 'मेरे मन की बाल-कहानियाँ', 2016, **16.** 'स्टोरीज फॉर चिल्ड्रन', 1996।

- **लोक कथाएँ:**

दिविक रमेश ने कुल चार लोक-कथाएँ रचित की है-

1. 'और पेड़ गूंगे हो गए' (विश्व की लोक-कथाएँ), 1992, **2.** 'सच्चा दोस्त', अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली, 1996, **3.** 'जादुई बांसुरी और अन्य कोरियाई कथाएँ, 2009, **4.** 'कोरियाई लोक-कथाएँ', पीताम्बर प्रकाशन, दिल्ली, 2000, 2012।

- आत्मीय संस्मरण:

दिविक रमेश द्वारा रचित आत्मीय संस्मरणों की गिनती चार है-

'फूल भी और फल भी' (लेखकों से सम्बन्ध), 1994 2. 'लू लू की सनक'(कहानी-संग्रह), 2014 3. 'बचपन की शरारत'(सम्पूर्ण बाल-गद्या रचनाएँ),2016 4. 'मेरे मन की बाल-कहानियाँ', 2016।

- **बाल-नाटक:**

दिविक रमेश ने बच्चों के लिए एक बाल-नाटक भी लिखा है।

1. 'बल्लू हाथी का बाल घर', 2012।

- **अन्य:**

'खण्ड-खण्ड अग्नि' के मराठी, गुजराती, कन्नड और अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित। अनेक भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में रचनाएँ अनुदित हो चुकी हैं।

- **यात्राएं:**

कोरिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाइलैंड, पोर्ट ऑफ स्पेन, जर्मनी, इंग्लैंड, रूस आदि।

- **शोधपरक/आलोचनात्मक कार्य:**

➢ 'समकालीन हिन्दी काव्य प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में दिविक रमेश की रचनाओं का अध्ययन', डॉ. प्रभु वी. उपासे, बंगलोर यूनिवर्सिटी, बंगलोर। पीएच.डी की उपाधि के लिए, 2016.

'डॉ. दिविक रमेश के बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान', डॉ. सिद्दगंगम्मा, एल. उच्च शिक्षा और संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई। पीएच.डी की उपाधि के लिए, 2013.

➢ 'आधुनिक भाव-बोध और डॉ.दिविक रमेश का बाल-काव्य', कु॰ चाँदनी, आत्मा ज्योति फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली। (लघु शोध प्रबंध), 2012.

➢ 'स्वतंत्र्योत्तर सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में दिविक रमेश के बाल साहित्य का अध्ययन', अश्विनी के., मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर। पीएच. डी की उपाधि हेतु काम चल रहा है।

➢ 'डॉ. दिविक रमेश और उनका बाल-साहित्य', संपादक: डॉ. शकुंतला कालरा, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2012.

➢ 'कल्पांत' पत्रिका (नई दिल्ली) का मई, 2011 विशेषांक, संपादक: मुरारीलाल त्यागी।

➢ 'आलोचना की दहलीज पर दिविक रमेश' (2015), संपादक: प्रेम जनमेजय।

➢ 'दिविक रमेश कृत 'खण्ड-खण्ड अग्नि' काव्य-नाटक में निहित नारी चेतना के स्वर', मोहिनी कश्यप, 2015, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीटचूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा- 28, 2005, लघु शोध-प्रबंध।

दिविक रमेश की अनेक कविताओं पर कलाकारों ने चित्र,कोलाज़ और ग्राफिक्स आदि बनाए हैं। उनकी प्रदर्शनियां भी हुई है। इनकी बाल-कविताओं को संगीतबद्ध किया गया है। यहाँ इनका काव्य-नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' बंगलौर विश्वविद्यालय की एम.ए. कक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित है, वहाँ इनकी बाल-रचनाएँ पंजाब, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र बोर्ड तथा दिल्ली सहित विभिन्न स्कूलों की कक्षाओं में पढ़ाई जा रही है। इनकी कविताओं पर पीएच.डी. के उपाधि के लिए शोध भी हो चुके हैं। इनकी कविताओं को देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित संग्रहों में स्थान मिला है। इनमें से कुछ अत्यंत उल्लेखनीय इस प्रकार है: **1.** इंडिया पोयट्री टुडे (आई.सी.सी.आर.), 1985, **2.** न्यू लैटर (यू.एस.ए.) स्प्रिंग/समर, 1982, **3.** लोटस (एफ़्रो-एशियन राइटिंग्ज, ट्युनिस,), वाल्यूम: 5, 6, 1985, **4.** इंडियन लिटरेचर; special number of indian poetry today, साहित्य अकादमी, जनवरी/अप्रैल, 1980, **5.** National modernism (peace through poetry world congress of poets, 1997, कोरिया, **6.** हिन्दी के श्रेष्ठ बाल-गीत (संपादक: श्री

जयप्रकाश भारती), 1987, **7.** आठवें दशक की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएं (संपादक: हरिवंशराय बच्चन), **8.** भारतीय कविता संचालन (संपादक: विश्वनाथ प्रसाद तिवारी), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (2012)।

संदर्भ-सूची

1 सुरैय्या शेख, नाटककार भीष्म साहनी, पृ. 184-185.

2 बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 45.

3 बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 37.

4 बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 38.

5 बैजनाथ सिंहल, शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, पृ. 30.

6 रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक काव्य, पृ. 16-17.

7 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, मिथक साहित्य: विविध संदर्भ, पृ. 1.

8 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के संदर्भ नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ. 14.

9 मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना समकालीन संदर्भ, पृ. 81.

10 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के संदर्भ में नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ.14.

11 शंभुनाथ, मिथक और भाषा, पृ. 199.

12 मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना समकालीन संदर्भ, पृ. 81.

13 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथकों में प्रतीकात्मकता, पृ. 1.

14 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के संदर्भ में नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ. 14-15.

15 राम अवध द्विवेदी, साहित्य सिद्धांत, पृ. 12.

16 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, मिथकीय कल्पना और आधुनिककाव्य, पृ. 6.

17 William little, H.W flower, coulsan,The oxford English dictionary, pg.no.962.

18 Websters new world dictionary of American language pg.no. 590.

19 श्रीमती ममता द्विवेदी, आधुनिक हिन्दी कविता में मिथकीय संयोजना, पृ. 10.

20 रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक काव्य, पृ. 10.

21 रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक काव्य, पृ. 11.

22 विजयेन्द्र स्नातक, भूमिका भारतीय मिथक कोश, पृ. 1-iv.

23 लक्ष्मी नारायण, पुराख्यान और कविता, पृ. 9.

24 अश्विनी पराशर, हिन्दी नई कविता: मिथक काव्य, पृ. 27.

25 मोड बोडकिन, आरकटाइपल पैटर्स इन पोइट्री, पृ. 2.

26 नगेन्द्र, मिथक और साहित्य, पृ. 7.

27 विजयेन्द्र स्नातक, विमर्श के क्षण, पृ. 17.

28 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के सन्दर्भ में नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ. 30.

29 शंभुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 4.

30 नगेन्द्र, मिथक और साहित्य, पृ. 7.

31 दिविक रमेश, साहित्यिक निबंध: मिथक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम, पृ. 1.

32 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के सन्दर्भ में नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ. 31.

33 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, मिथक साहित्य: विविध सन्दर्भ, पृ. 22-23.

34 श्रीकला वी.आर, समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ, पृ. 13-14.

35 अश्विनी पराशर, हिन्दी नई कविता: मिथक काव्य, पृ. 40.

36 नगेन्द्र, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 10.

37 श्रीकला वी.आर, समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ, पृ. 17-18.

38 रमेश गौतम, मिथकीय अवधारणा और यथार्थ, पृ. 233.

39 शंभुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 83.

40 श्रीकला वी.आर, समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ, पृ. 18-19.

41 नीलम जुल्का, मिथक और लोककथा, डॉ. राज शर्मा,शब्द और शब्द, हंसराज महिला महाविद्यालय, जनवरी 2005, पृ. 80.

42 रमेश गौतम, मिथकीय अवधारणा और यथार्थ, पृ. 75.

43 शंभुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 14.

44 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, मिथक साहित्य: विविध सन्दर्भ, पृ. 94.

45 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, मिथक साहित्य: विविध सन्दर्भ, पृ. 60.

46 उषा पुरी विद्यावाचस्पति, भारतीय मिथकों में प्रतीकात्मक, पृ. 1-2.

47 रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक काव्य, पृ. 16-17.

द्वितीय अध्याय

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक

प्रस्तावना

मिथकीय घटना वह है, जो कुदरती करिश्मा सा प्रतीत हो। जैसे श्री कृष्ण मिथक है, क्योंकि वह विशिष्ट थे। समय निरंतर चलता रहता है, यह कभी स्थिर नहीं होता, इसी प्रकार मिथक भी समय की चाल चलते रहते हैं। साहित्य मिथकों को एक नई दिशा प्रदान करता है। साहित्य के माध्यम से ही मिथक संप्रेषित हो पाते हैं। बहुत सारे साहित्यकारों ने अपनी लेखनी में मिथकों का प्रयोग किया है। साहित्यकारों ने मिथकों के धार्मिक एवं प्राकृतिक, वैज्ञानिक, प्रतीक, सामाजिक, घटना आदि मिथकों का प्रयोग अपने साहित्य में किया है। मिथक बहुत उपयोगी होते हैं। मिथक हमारी संस्कृति और सृष्टि की उत्पत्ति सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने में स्त्रोत के रूप में कार्य करते हैं। मिथकों को कल्पना पर आधारित कथा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि मिथकों के माध्यम से व्यक्ति को नई दृष्टि प्राप्त होती है अर्थात् वह अपने मन के भावों को मिथकों के माध्यम से अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर पाता है। मिथकों को प्रतीकों के रूप में उपयोग किया जाता है। मिथकों का एक महत्व यह भी है कि जब हम प्राचीन मिथकों का प्रयोग आज के संदर्भ में करते हैं तो ऐसा करने से हम अपनी संस्कृति को पुन: जीवित करते हैं अर्थात् संस्कृति में हमारे रीति-रिवाज, विश्वास, संस्कार उपस्थित होते हैं। मिथकों का प्रयोग करने से यह सब पुनर्जीवित हो उठते हैं। कुछ जीवन में ऐसी घटनाएँ घटित हो जाती है, जो सत्य प्रतीत नहीं होती, लेकिन जब समूह के रूप में उस घटना को मान्यता मिल जाए तो वही घटना सत्य प्रतीत होने लग जाती है। भले ही उस घटना का कोई विशिष्ट आधार न ही हो। इसी प्रकार मिथकीय घटनाएँ भी व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होती हैं।

इन मिथकों के माध्यम से हमारी संस्कृति को जीवित रखने के इलावा और भी मिथकों का महत्व है। मिथक एक ओर यहाँ मानव के भावों को अभिव्यक्त करते हैं, वहीं दूसरी और मानव का प्रकृति के साथ रिश्ता भी जोड़ते हैं। जब से प्रकृति का आरंभ हुआ है, तभी से मिथकों का उद्भव हुआ है, इसलिए मानव और प्रकृति का अटूट रिश्ता है। मनुष्य ने शुरू से ही अपने प्रत्येक कार्य की आधार रचना धर्म और प्रकृति को स्वीकार किया है। आज भी हम तुलसी को पवित्र मानकर उसे जल चढ़ाते हैं, ऐसा प्राचीन काल से चला आ

रहा है, यह भी एक प्रकार का मिथक ही है। तुलसी के पौधे को धार्मिक माना जाता है, इस प्रकार यह धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक हुआ। इन मिथकों ने हमारे समाज को नवीन दृष्टि प्रदान की है। इससे यही सिद्ध होता है कि चाहे किसी भी रूप में हो लोग प्रकृति की पूजा तो करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मिथक हमें अपने धर्म का ज्ञान कराते हैं। आज हम जो भी त्यौहार मनाते हैं, इन सब के पीछे मिथकीय घटना विद्यमान होती है। जैसे दिवाली का त्योहार श्री राम के अयोध्या वापिस आने की खुशी में मनाया जाता है, इस प्रकार यह भी एक मिथक है।

एक साहित्यकार की दृष्टि में मिथकों का महत्व अक्षुण्ण है, क्योंकि इनके माध्यम से साहित्यकार अपने पाठकों तक अपनी बात को बड़ी सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करता है। आज भी मिथकों की बहुत प्रासंगिकता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मिथकों का प्रयोग होता है, ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसमें मिथकों का प्रयोग न होता हो। व्यक्ति अपने मुताबिक मिथकों का प्रयोग करता है। साहित्य एक ऐसा क्षेत्र है यहाँ साहित्यकार अपनी रचना को प्रभावशाली बनाने के लिए प्राचीन मिथकों का प्रयोग कर अपनी रचना को प्रासंगिकता प्रदान करता है। मिथकों की प्रासंगिकता इस बात पर भी निर्भर करती है कि यह एक विशेष उद्देश्य लेकर प्रस्तुत होते हैं। जो समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। विज्ञान किसी भी चीज़ को सत्य मानने के लिए तर्क ढूंढ़ता है, मिथक उन सब चीज़ों की जानकारी प्रदान करते हैं, जिन्हें विज्ञान भ्रम कह कर नकारता है।

ऐसे बहुत सारे साहित्यकार हैं, जो मिथकों का प्रयोग करते हैं, जैसे- मोहन राकेश, जगदीश माथुर, सुरेन्द्र वर्मा, मणि-मधुकर, नरेंद्र कोहली, लक्ष्मीनारायण लाल, दयाप्रकाश सिन्हा, रेवती शरण शर्मा, दूधनाथ सिंह, भीष्म साहनी, डॉ. विनय, गिरिराज किशोर आदि।

प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक:

मिथकों का जो सबसे पहले रूप प्रचलित हुआ था वह धार्मिक ही था। मनुष्य जब भी कोई नया कार्य करता था, तो सबसे पहला परमात्मा की पूजा करता था। मनुष्य ने जब से अपने आस-पास की प्राकृतिक आपदाओं को देखना शुरू किया है, इन प्राकृतिक आपदाओं ने मिथकों का रूप ले लिया। जिस भी किसी प्रकृति की वस्तु से मनुष्य का हित होता था, उस प्रकृति वस्तु की मनुष्य धर्म के रूप में कामना करने लग जाता था। जैसे आज भी अग्नि को देवता समान पूजनीय माना जाता है। आज भी जब वर्षा होती है, तो लोग कहते हैं, इन्द्र देवता खुश हुआ। इसलिए मनुष्य ने इन प्राकृतिक वस्तुओं को धार्मिक रूप में पूजना शुरू कर दिया। जैसे- अग्नि को अग्निदेव, सूर्य को सूर्य देवता आदि कहना शुरू कर दिया। जिस भी किसी चीज़ से मनुष्य की इच्छा पूर्ति होती है, मनुष्य उस चीज़ का दिल से सत्कार करने लग जाता है। प्राकृतिक और धार्मिक मिथक को अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि

मनुष्य प्राकृतिक सत्ताओं को भी ईश्वर के रूप में देखता है। अगर प्राकृतिक वस्तुएँ न होती तो इस संसार की रचना कभी न होती। बिना किसी डर के कोई कार्य नहीं होता। उदाहरण के लिए जब एक बच्चा अपना स्कूल का कार्य नहीं करके जाता तो अध्यापक उसे डांटता है, अध्यापक की डांट से बचने के लिए ही वह अपना कार्य करके जाता है। प्रकृति चीज़ों में हम प्रकृति की सुंदरता का भी वर्णन करते हैं। प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथकों का उल्लेख बहुत सारे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में किया है, जैसे-गोस्वामी तुलसीदास, स्वदेश भारती, विजय कुमार, नरेश मेहता आदि। प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथकों का प्रयोग दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में निम्नलिखित किया है। 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में जो प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक प्रयोग हुए हैं, वे इस प्रकार हैं-

- **अग्नि का क्रोधी रूप**
- **अग्नि का शांत रूप**
- **पृथ्वी का स्त्री रूप**

प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक का उदाहरण गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' के 'सुंदरकांड' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक को प्रस्तुत करने के लिए समुद्र को लिया है:

" विनय न मानत जलधि

तब गये तीन दिन बीत।

बोले राम सकोप तब,

भय बिनु होय न प्रीति।।"[1]

गोस्वामी तुलसीदास ने यहाँ पर जल को धार्मिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है, जल तो प्राकृतिक है, लेकिन इस पंक्ति में जल को देवता समान माना गया है। इस पंक्ति से यह ही स्पष्ट होता है कि हम प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा अपने भले के लिए करते हैं। जैसे कि श्रीराम को भी लंका जाने के लिए समुन्द्र को प्रार्थना करनी पड़ी थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनुष्य जो भी करता है, अपने स्वार्थ के लिए करता है। अपने भले के लिए मनुष्य को प्राकृतिक वस्तुओं को भी ईश्वर समान सम्मान देना पड़ता है। इस प्रकार जल को अमृत भी कहा जाता है, जब हम किसी धार्मिक स्थान पर जाते हैं, तो वहाँ पर जो जल होता है, उससे स्नान करके हम अपने शरीर को पवित्र करते हैं। इस प्रकार जल को ईश्वर समान पूजनीय माना जाता है। इस प्रकार यह एक प्रकार का मिथक ही हुआ। जल में अगर स्नान करने से कोई भी पवित्र हो

जाए तो ऐसे तो दुनिया को ईश्वर का डर ही नहीं रहेगा हर कोई अपराध करने के पश्चात अपने-आप को पवित्र कर लेगा। जल को अमृत मानना एक मिथक है, जो सदियों से चला आ रहा है, जल को अमृत मानने की बात आज भी इसलिए मानी जाती है, क्योंकि इसके पीछे मनुष्य की आस्था विद्यमान है।

दिविक रमेश ने भी अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक में अग्नि को धार्मिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है। इस पंक्ति में अग्नि का जो प्रकृति सम्बन्धी जो धार्मिक रूप है, वह उदासी का रूप है। 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक का उदाहरण दृष्टव्य है-

अग्नि: "मुझे लगा है अपना रूप

कभी कभी शाप भी।

यह कैसी परीक्षा है मेरी?

रह गया हूँ एक पात्र भर।"[2]

दिविक जी ने धार्मिक मिथक के रूप में अग्नि को प्रयोग किया है। इन पंक्तियों में अग्नि प्राकृतिक है, लेकिन यहाँ पर अग्नि को निराशा के धार्मिक मिथक के रूप में प्रयोग किया गया है। जब सीता राम को अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि को पुकारती है, तब अग्नि का समावेश होता है। अग्नि को शुद्धता की कसौटी माना जाता है। अग्नि को यज्ञ के लिए भी प्रयोग किया जाता है। अग्नि भी एक प्रकार की शाप ही है कि वह किसी की पवित्रता सिद्ध करने के लिए किसी को अपने में जलाती है। अग्नि को लोग देवता समान पूजते हैं, इसलिए उसे अग्निदेव भी कहा जाता है। जब लोहड़ी का त्योहार होता है, तो हम उस रात को अग्नि जलाते हैं, उसमें तिल फेंकते हैं, ताकि हमारे दुखों को अग्नि अपने में जलाकर भस्म कर डाले और हम खुशी-खुशी से अपना जीवन व्यतीत कर सके। इस प्रकार यह भी एक प्रकार का मिथक ही है। अगर अग्नि में तिल फेंकने से हमारे दुखों का अंत हो जाए तो ऐसा हर कोई करके अपने जीवन को सुखमयी बना ले। जो हम घर यज्ञ कराते हैं, वह भी घर की सुख-शांति के लिए कराते हैं। इस प्रकार अग्नि देवता समान हमारे दुखों का नाश करने में भूमिका निभाती है। इस प्रकार हम अपने सुख के लिए तो अग्नि को देवता समान महत्व देते हैं, लेकिन क्या हमनें कभी अग्नि के बारे में कभी सोचा है कि वह खुश है? इस प्रकार दिविक जी ने अग्नि के उदासी भरे रूप को धार्मिक मिथक के रूप में प्रयोग करके अग्नि की भूमिका से हमें बहुत अच्छे ढंग से साक्षात्कार कराया है।

स्वदेश भारती की कविता 'भूकंप' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक में पृथ्वी के विनाशकारी रूप का प्रयोग किया है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए-

"हे पृथ्वी, तुम ममतामयी माँ होते हुए
क्यों समाहित करती हो अपने अंक में
भरती हो हज़ारों जीवित लोगों को और

विनाश लीला का तांडव करती हो हे पृथ्वी।"[3]

यहाँ पर धार्मिक मिथक के रूप में पृथ्वी को लिया गया है। इन पंक्तियों में पृथ्वी को एक माँ का दर्जा दिया गया है और जो माँ होती है, उसे भगवान के समान पूजनीय माना जाता है। जब भूकंप, तूफान आते हैं, तो लोगों को बहुत नुकसान होता है। हज़ारों लोग मारे जाते हैं और बहुत सारे बेघर हो जाते हैं और हम सभी पृथ्वी को ही दोष देने लग जाते हैं कि पृथ्वी हमारा नुकसान करती है, लेकिन इस नुकसान की पृथ्वी को दोषी नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह भूकंप, तूफ़ान हमारी गलती के कारण आते हैं। जब हम अपने स्वार्थ के लिए धरती को नुकसान पहुंचाते हैं, तभी यह भूकंप आते हैं। धरती हमारा नुकसान कैसे कर सकती है, क्योंकि धरती तो हमें जीवन दान देती है। जिस प्रकार एक माँ बच्चे को जन्म देती है, ठीक उसी प्रकार धरती हमें जीवित रहने के लिए हवा, पानी, घर देती है। एक माँ अपने बच्चे का हमेशा भला ही सोचेगी कभी बुरा नहीं, फिर धरती को तो ईश्वर के समान जन्म देने वाली माना जाता है, फिर धरती हमारा नुकसान क्यों करना चाहेगी। इस प्रकार धरती को माँ की संज्ञा से अभिहित करना एक प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक है, धरती कोई स्त्री नहीं जिसके गर्भ से हम जन्म लें सके। धरती को स्त्री के समान मानना एक मिथक है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक में अग्नि के क्रोधी रूप का प्रयोग किया गया है-

सीता: "ओ देव! ओ अग्नि! दाह मत करो मेरा
मात्र भीतर से, मुझे भस्म कर दो पूरा
का पूरा जला डालो, रावण स्पर्शित

इस विवश देह को।"[4]

यहाँ दिविक रमेश ने अग्नि को अग्नि देवता कहकर सम्बोधित किया है। यह अक्सर कहा जाता है कि स्त्री-पुरुष समान हैं, लेकिन आज भी स्त्री को चाहे कानून के द्वारा पुरुष के समान सभी अधिकार मिल गए हों, लेकिन कहीं न कहीं आज भी स्त्री को पुरुष के अधीन रहना पड़ता है। इसका कारण यह है कि आज भी पुरुष की सोच में उतना बदलाव नहीं आया जितना आना चाहिए था। आज भी पत्नी को कहीं जाने के लिए अपने पति से अनुमति लेनी ही पड़ती है। एक स्त्री को अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए मर्द को अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। जिस प्रकार सीता को राम को विश्वास दलाने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ी थी। अगर एक पतिव्रता पत्नी अपने पति द्वारा अपने ऊपर लगाए दोष को नकार नहीं पाती तो वह अपने

आप को नष्ट कर देना चाहती है। वह स्त्री अपने पति की नजरों में अपराधी बनकर जीवित नहीं रह सकती। इससे यही सिद्ध होता है कि एक स्त्री का अस्तित्व पुरुष के सामने तुच्छ होता है। जब किसी प्राणी की मृत्यु हो जाती है, तो हम उसको अग्नि द्वारा जलाकर भस्म कर डालते हैं। कोई व्यक्ति किसी समस्या के कारण अपने-आप को अग्नि द्वारा जलाकर मार लेना चाहता है, यह अग्नि का भयानक रूप होता है, जिससे सभी को डर लगता है। इतना कुछ होने के बाद भी अग्नि को देवता ही कहा जाता है।

विजय कुमार द्वारा लिखित कविता 'कुंभ' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक में जल को लिया गया है, जो निम्नलिखित है-

"जल अमृत है कर्मों के फल से
छुटकारा मिलता है जल में

जल कीच है, कर्मों के फल

पोटली से निकल गिरते हैं कीच में।"[5]

इन पंक्तियों में धार्मिक मिथक का प्रयोग करते हुए जल को अमृत समान माना गया है। जल को मुक्ति दिलाने वाला माना गया है। हम अपनी जिंदगी में अच्छे-बुरे कार्य करते हैं, उन सभी कार्यों का फल हमें भुगतना पड़ता है। उदाहरण के लिए हम जब भी किसी धार्मिक स्थान पर जाते हैं, तो वहाँ सरोवर का जल पीते हैं, ऐसा माना जाता है कि जल पीने से हम सभी दुखों से मुक्त हो जाएगें। इस प्रकार जल को ईश्वर समान पवित्र माना जाता है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी अस्थियाँ जल प्रवाह की जाती है। अस्थियाँ जल प्रवाह इसलिए की जाती हैं, तांकि व्यक्ति को मुक्ति मिल सके। अस्थियों को जल में प्रवाह करने से मुक्ति मिलती है, यह प्राचीन काल से चला आ रहा एक मिथक है। हमें मुक्ति ईश्वर के पास जाकर अपने अच्छे कर्मों से मिलती है न कि मरने के बाद अस्थियों को जल प्रवाह करने से। अस्थियाँ तो हर किसी की जल प्रवाह की जाती है, लेकिन ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि हर कोई मुक्त हो गया। मुक्ति तो हर किसी को उसके द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर ही मिलती है न कि जल से।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक के रूप में धरती को माँ के रूप में प्रयोग किया गया है, उदाहरण:

सीता: "ओ माँ! ओ धरती!
देख रही हो न अपनी इस बेटी को?
रोक लो एक और हरण संभावित।
अब और नहीं है धैर्य किसी भी

कैद में रहने का सीता में।"[6]

इस पंक्ति में धरती को माँ के समान माना गया है। कहा जाता है कि ईश्वर के बाद दूसरा स्थान माँ का होता है। धार्मिक मिथक के रूप में धरती को प्रयोग किया गया है। जब एक स्त्री के पति का उस से भरोसा उठ जाता है तो उस स्त्री के जीने की तमन्ना ही समाप्त हो जाती है। इस प्रकार सीता भी धरती में समा जाना चाहती है। सीता का धरती में प्रवेश कर जाना एक मिथक है। एक औरत की भी सहने की शक्ति होती है, आखिर एक औरत कब तक अन्याय सहन करेगी। मिथकीय पात्र सीता के माध्यम से दिविक जी ने आज की सीता की चेतना की बात की है। आज की सीता-राम जैसे पुरुष के अधीन नहीं रहना चाहती बल्कि संघर्ष करती है। एक स्त्री का सम्बन्ध धरती से होता है, वह इस प्रकार कि हम सब एक स्त्री से जन्म लेते हैं और हम सब का पालन-पोषण पृथ्वी करती है। इस प्रकार धरती और स्त्री का आपस में अटूट रिश्ता है अर्थात् एक माँ-बेटी का रिश्ता है।

नरेश मेहता कृत 'महाप्रस्थान' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक के रूप में पर्वत का उदाहरण निम्नलिखित है-

"हिम केवल हिम
अपने शिव रूप में

हिम ही हिम अब।"[7]

इस पंक्ति में धार्मिक मिथक के रूप में हिम को प्रयोग किया गया है। इस पंक्ति में नरेश मेहता ने प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन किया है। हिम का अर्थ-हिमालय। हिमालय की चोटियाँ बर्फ से चारों ओर शिव के समान स्वच्छ, निर्मल व तेजवान नजर आती है। नरेश मेहता ने हिम के माध्यम से शिव के अंग-अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है। इस प्रकार हिम को शिव रूप में प्रयोग किया गया है। हिमालय की चोटियाँ बहुत विशाल होती है, बर्फ से ढ़की हुई। हिमालय का सौन्दर्य तो देखने योग्य होता है। वहाँ बहुत शांति होती है, ऐसा प्रतीत होता है कि मानो उन चोटियों पर कोई बैठकर मुनि तपस्या कर रहा हो। इस प्रकार से हिम एक प्रकार से धार्मिक मिथक ही हुआ, क्योंकि हम सब जानते हैं कि हिम एक मनुष्य का रूप तो नहीं हो सकता।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक के रूप में अग्नि को शुद्धता और साक्षी का रूप माना गया है, इसका उदाहरण निम्नलिखित दृष्टव्य है-

अग्नि: "आओ सीता! लोगों की दृष्टि में

आ जाओ मेरी गोद में।

पर हूँ आज मैं यंत्र ही

तुम्हारी पवित्रता की जांच भर।"[8]

दिविक रमेश ने अपने इस काव्य नाटक में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक का प्रयोग करने के लिए अग्नि को साक्षी एवं शुद्धता का प्रतीक माना है। जब एक स्त्री के पति को अपनी पत्नी की पवित्रता पर संशय होता है, तब वह औरत अपने पति के संशय को दूर करने के लिए अग्नि परीक्षा देती है, ताकि वह अपनी पवित्रता को अपने पति के समक्ष सिद्ध कर सके। अग्नि परीक्षा का मतलब यह नहीं कि यह परीक्षा सिर्फ आग में ही दी जाती है, यह अग्नि परीक्षा किसी भी प्रकार की हो सकती है। एक मर्द को अपनी पत्नी पर विश्वास होता है, मगर लोग उसे गलत न समझे इसलिए वो अपनी पत्नी को अग्नि परीक्षा देने को कहता है। दिविक जी ने अपने इस काव्य-नाटक में प्रकृति सम्बन्धी धार्मिक मिथक में अग्नि को धार्मिक स्थान इसलिए दिया क्योंकि अग्नि परीक्षा की कसौटी का आधार होती है, इस प्रकार अग्नि-परीक्षा एक प्रकार का मिथक है अगर कोई अग्नि में परीक्षा देने के लिए प्रवेश करेगा तो वह भस्म हो जाएगा।

प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक:

प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक का अर्थ है, जिसमें प्राकृतिक वस्तुओं का उल्लेख हो। सबसे पहले प्रकृति की ही सृष्टि हुई थी। अगर प्रकृति न होती तो इस संसार की रचना कैसे होती। प्रकृति हमें खाने के लिए भोजन ,जल आदि देती है, जिससे हम सब जीवित रहते हैं। प्रकृति ईश्वर की अद्भुत देन है। सूर्य, चाँद, सितारें यह सब प्राकृतिक चीजें हैं। जो प्रकृति की हरियाली होती है, वह हमारे वातवरण की शोभा बढ़ाती है। प्राकृतिक मिथकों का उल्लेख अलग-अलग विद्वानों ने किया है, जैसे- नरेश मेहता, मनीषा जैन, स्वदेश भारती, गुरु नानक देव जी आदि। दिविक रमेश ने अपने काव्य-नाटक में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक प्रयोग किए हैं, वे निम्नलिखित हैं-

- **समुद्र**
- **अग्नि**
- **चंद्रमा**
- **महामेघ**
- **पृथ्वी**

नरेश मेहता कृत 'महाप्रस्थान' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक में हिमालय का उदाहरण निम्नलिखित उल्लेखित है-

"यही कहीं कहते हैं हंस-वाणियाँ सुन पड़ती है,
यही कहते तो धूप यान में सूर्य क्रियाएँ मानस
जल पीने आती है, कानों में बजती इन शीत हवाओं
में, क्यों लगता जैसे कोई किसी कन्दरा में बैठा, हिमालय

धर्मग्रंथ का पाठ कर रहा हो।"[9]

नरेश मेहता ने प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन किया है। पर्वतीय प्रदेशों की सुंदरता देखने योग्य होती है। पर्वत चारों ओर से वृक्षों और बर्फ से ढ़के हुए होते हैं। पर्वतीय प्रदेश में जाकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो हम स्वर्ग में आ गए हों। पर्वतीय प्रदेशों का वातावरण प्रदूषण से मुक्त होता है। जो वायु होती है, साफ होती है। वहाँ पर चारों ओर शांति होती है, ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे वहाँ पर कोई न हो। पर्वतीय प्रदेशों का मौसम इतना लुभावना होता है कि मन को ही मोह लेता है। इस प्रकार पर्वतीय प्रदेश की स्वर्ग से तुलना करनी एक मिथक है, हम जब भी किसी सुन्दर स्थान को देखते हैं जो हमारे मन को लुभा जाए हम उस स्थान की स्वर्ग से तुलना करते हैं, लेकिन यह बात सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि हम ने किसी ने भी स्वर्ग नहीं देखा।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक के रूप में समुद्र को दिविक जी ने बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। उदाहरण-

उद्घोषणा: "हाँ! वीरान पड़ी है लंका, महामौन।

और मैं? मुझे तो बोलना है निरंतर।

गर्जना है हर क्षण समुन्द्र सा।

मैं नही हो सकती मूक तट के रेत सी।"[10]

दिविक जी ने समुद्र, रेत प्राकृतिक मिथकों का प्रयोग किया है। उद्घघोषणा को हम स्त्री के मन की अवस्था की प्रतीक कह सकते हैं। जिस प्रकार उद्घघोषणा का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता, ठीक उद्घघोषणा के समान ही स्त्री होती है। जिस प्रकार उद्घघोषणा को लोगों तक सूचना पहुंचानी ही होती है, यह उसका कार्य है, जिसे वह करने से मना नहीं कर सकती। आज स्त्री में चेतना आई है, आज वह अपने पति का विरोध करती है, अगर उसका पति गलत है। आज स्त्री समुद्र के समान गर्जती है, अगर उसके साथ कुछ गलत होता है। स्त्री का समुद्र के समान गर्जना मिथक है। आज की स्त्री चुप नहीं रहती। इस प्रकार यहाँ पर प्राकृतिक मिथक का प्रयोग हुआ है। जो उद्घोषणा होती है, उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। उसे अपने स्वामी का कहना मानना ही पड़ता है। चाहे अच्छी ख़बर हो या बुरी उसे उद्घोषित करनी ही पड़ती

है। दिविक जी ने अपने काव्य-नाटक में उद्घघोषणा को स्त्री के रूप में प्रयोग किया है, यह मिथक है ख़बर कभी भी स्त्री नहीं होती ख़बर कोई प्राणी नहीं जिसमें सोचने-समझने की शक्ति हो, स्त्री के मन की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए दिविक जी ने इसे स्त्री का रूप दिया है।

नरेश मेहता कृत 'उत्सवा' कविता में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक में धरती के ममतामयी रूप का उदाहरण निम्नलिखित है-

"मैं अपने चारों ओर एक भाषा का अनुभव करता हूँ
जो ग्रन्थों की नहीं पर जिसमें फूलों की सी गन्ध धरती

को कहीं से भी छुओं, एक ऋचा सी प्रतीत होती है।

मैंने जब भी इस भूमि को देखा है, गायत्री ही देखा है।"[11]

नरेश मेहता अपनी इस कविता में फूल, भूमि को प्राकृतिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है। हम सभी लोगों से मिलकर समाज बनता है। समाज में रहते हुए एक-दूसरे से मिलने के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं। एक भाषा ही है, जिसके माध्यम से हम अपनी बात को दूसरे लोगों तक पहुंचा सकते हैं। भारत में अलग-अलग तरह के लोग रहते हैं, उन सबकी बोलियाँ भी अलग-अलग होती है। जिस धरती पर हम रहते हैं, वो धरती पूजने योग्य है। धरती ही हमारी देख-भाल करती है। जो हम भाषा बोलते हैं, उस भाषा में उस प्रकार की महक आती है, जैसे फूल महक रहे हों अर्थात् हमारी बोली में मिठास ऐसी होती है। इस प्रकार भाषा से महक आना एक प्राकृतिक मिथक है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक में अग्नि का उदाहरण इस प्रकार दृष्टिगोचर होता है-

अग्नि: "अग्नि हूँ मैं नहीं हूँ सूत्रधार
रह गया हूँ एक पात्र भर।
समझा जाता हूँ देवता नहीं
जानता भय से या मोह से?"[12]

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में प्राकृतिक मिथक के रूप में अग्नि को प्रयोग किया है। अग्नि को पवित्रता का प्रमाण माना गया है। इसलिए लोग अग्नि को अग्निदेव कहकर पुकारते हैं। अग्नि को पवित्र माना जाता है, इसीलिए लोग अग्नि द्वारा अपने घरों को हवन करा के शुद्ध करते हैं। ऐसा करने से लोगों के घरों में सुख-समृद्धि आती है। अग्नि के द्वारा ही दो नव-विवाहित जोड़े पति-पत्नी जैसे पवित्र रिश्ते में बंधते

हैं। जब किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है, तो अग्नि से ही उसकी देह का संस्कार किया जाता है। हमें जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, वह भोजन भी हम अग्नि के माध्यम से बनाते हैं। इस प्रकार कहा जाता है कि अग्नि भी अपने रूप से खुश नहीं क्योंकि वह स्वाहा का ही रूप है। इस प्रकार हम अपने जीवन में अग्नि का इतना प्रयोग करते हैं, तो अग्नि तो ईश्वर समान हुई न।

मनीषा जैन की कविता 'मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक के रूप में सूरज, चाँद और सितारें का उदाहरण निम्नलिखित है:

"मैं रोज़ सूरज की तरह अस्त होती हूँ
मैं रोज़ सितारों की तरह जगमग करती हूँ
मेरे भीतर रोज़ न जाने कितने चाँद जन्म लेते हैं
मेरे भीतर रोज़ ज्वालामुखी विस्फोट होता है
मैं सूरज के पार जाना चाहती हूँ, मैं रोज़ सूरज का
लाल रंग अपनी मांग में भरती हूँ, तुम मुझे उदित
होने से कैसे रोकोगे।"[13]

मनीषा जैन ने इन पंक्तियों के माध्यम से स्त्री की स्थिति को ब्यान किया है। एक औरत पुरुष के समान है। सदियों से स्त्री पुरुष की कैदी रही है, जैसा पुरुष कहता था उसे वो करना पड़ता था, लेकिन जो आधुनिक स्त्री है, वह अपना सम्मान पाने के लिए जागृत हुई है। आज स्त्री पुरुष के अधीन दब कर नहीं रहना चाहती, बल्कि पुरुष के समान अधिकार चाहती है। एक परिवार का निर्माण पति-पत्नी के आपसी रिश्ते और सहयोग से होता है। एक शिशु स्त्री की कोख से ही जन्म लेता है और माता के आश्रय में रहकर ही शिशु रूपी पौधा फलता-फूलता है एवं माता के माध्यम से ही संस्कार ग्रहण करता है। स्त्री ही परिवार को जोड़कर रखती है। जिस प्रकार सूर्य की रोशनी उजाला फैलाती है, ठीक उसी प्रकार स्त्री भी हर सुबह नई चेतना लेकर उजाला फैलाती है। इस प्रकार सूर्य की रोशनी से औरत की तुलना करनी प्रकृति सम्बन्धी एक मिथक है, क्योंकि कोई भी प्राणी सूर्य के समान नहीं हो सकता। स्त्री के सहने की भी क्षमता होती है, जब उस पर अत्याचार बढ़ जाते हैं, तो स्त्री की सहन करने की शक्ति टूट जाती है और वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का विरोध करने के लिए दुर्गा का रूप धारण करती है। स्त्री को दुर्गा की शक्ति का प्रतीक माना गया है। एक स्त्री कभी दुर्गा नहीं बन सकती यह एक मिथक है। औरत की शक्ति को बताने के लिए दुर्गा के मिथक का प्रयोग किया गया है। स्त्री-पुरुष से आगे बढ़ रही है, पुरुष स्त्री को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता। अपनी स्वतन्त्रता के लिए उसे बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आकाश में उड़ने के लिए पंखों का होना जरूरी है जो मनुष्यों के नहीं होते, इस प्रकार औरत का आसमान में उड़ने की इच्छा रखना मिथक है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक में समुद्र का उदाहरण इस प्रकार दृष्टव्य है-

हर्ष: "सुना है न पूरी की है
प्रतिज्ञा राम ने।
किया है मुक्त सीता को
बांधकर समुन्द्र।"[14]

दिविक जी ने संसार के प्रतीक के रूप में प्राकृतिक मिथक के रूप में समुद्र को प्रयोग किया है। हर्ष खुशी का प्रतीक है, वह कहता है कि राम ने सीता को रावण की कैद से छुड़ाकर अपने कर्तव्य को निभाया है। दिविक जी ने अपने इस काव्य-नाटक में हर्ष को मनुष्य की भावनाओं का रूप दिया है, जो एक मिथक है, क्योंकि खुशी कभी बोल नहीं सकती। एक पति का कर्तव्य होता है कि वह अपनी पत्नी का ध्यान रखें, उसकी प्रत्येक जरूरत को पूरा करे। अगर देखा जाए तो एक पति अपनी पत्नी की रक्षा अपने वंश की खातिर करता है। एक औरत अपने पति का प्रत्येक कठिन क्षण में साथ देती है। अगर स्त्री के साथ कोई ऐसी घटना घट जाए, तो उसका पति कभी भी उसे अपने घर नहीं रखना चाहेगा। पुरुष यह सब अपनी मान-मर्यादा के लिए करता है, ठीक ऐसा ही राम ने सीता के साथ किया था, लेकिन राम ने यह नहीं सोचा कि सीता कहाँ जाएगी। इससे यही सिद्ध होता है कि पुरुष में अहं भावना आज भी विद्यमान है। पुरुष को अपनी इस अहं सोच को बदलना होगा। दिविक जी ने अपने काव्य-नाटक में प्राकृतिक मिथक को समझाने के लिए समुद्र को लिया है, समुद्र को बांधना मिथक है, क्योंकि समुद्र को हम कैसे बांध सकते हैं।

स्वदेश भारती द्वारा रचित कविता 'भूकंप' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक का उदाहरण धरती के विनाशदायिक रूप में इस प्रकार देखा जा सकता है-

"तुम तो धारण करती हो विनाशदायिक जीवन, प्रकृति
देती हो हरियाली, जल, पोषण फिर क्यों
करती हो हठात् समुन्द्र-मिलन के आत्मानंद
में धरती जनों का शोषण।"[15]

स्वदेश भारती ने धरती के विनाशकारी रूप का वर्णन किया है। धरती प्राकृतिक मिथक है। जब से मनुष्य का जन्म हुआ है, तभी से प्रकृति का आरंभ हुआ है। प्रकृति की हमारे जीवन में बहुत महत्ता है। प्रकृति में जल, हवा, सूर्य, पेड़-पौधे आदि सब आते हैं। इन सभी प्राकृतिक वस्तुओं की हमारे जीवन में बहुत आवश्यकता है। अगर यह प्राकृतिक वस्तुएं न हो तो हमारा जीवन तो खत्म है। मनुष्य स्वार्थी होता है। प्रत्येक व्यक्ति में जरूरत से अधिक पाने की आकांक्षा होती है। जब व्यक्ति की वह आकांक्षा पूरी नहीं होती,

तो वह व्यक्ति अपनी उस जरूरत को पूरा करने के लिए दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य अपनी फसल से जो उसने खेत में बोई होती है, उससे अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए वह अपने खेत में हानिकारक दवाईयों का इस्तमेल करता है, ताकि अधिक लाभ प्राप्त कर सके। इससे धरती को जो नुकसान होता है, उसकी कल्पना व्यक्ति कभी नहीं करता। मनुष्य अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए पेड़-पौधे काटता है। जंगलो के कम होने से धरती में विस्फोट हो रहा है, जिससे हमारा ही नुकसान होता है। हम इन सब का दोषी धरती को मानते हैं, लेकिन इस सबके जिम्मेदार हम लोग हैं, धरती नहीं। इतना विनाश कभी न हो अगर हम धरती के साथ कोई खिलवाड़ न करें। इस प्रकार प्राकृतिक मिथक को अच्छे ढंग से समझाने के लिए धरती का आश्रय लिया गया है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक को अच्छे ढंग से समझाने के लिए दिविक जी ने चंद्रमा का उदाहरण लिया है-

सीता: "मैं धन्य हूँ
चंद्रमा आ

आ मुझ पर छा जा।"[16]

दिविक रमेश ने चंद्रमा का प्राकृतिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है। जैसे की हम सब जानते हैं कि स्त्री और पुरुष एक सिक्के के समान हैं। स्त्री-पुरुष परिवार के लिए नींव का कार्य करते हैं। जिस प्रकार मकान बनाने के लिए नींव का मजबूत होना जरूरी है, ठीक उसी प्रकार अगर परिवार को जोड़कर रखना है, तो स्त्री-पुरुष का आपसी सम्बन्ध अच्छा होना चाहिए, तभी जाकर एक परिवार का निर्माण होता है। स्त्री-पुरुष को चाहिए कि वह दोनों आपसी स्नेह से रहें। जब एक मुसीबत में हो तो दूसरा उसकी सहायता करें। एक औरत को उस समय बहुत खुशी मिलती है, जब उसका पति किसी कार्य में सफल होकर आता है। उस समय वह औरत राहत की सांस महसूस करती है। जब हनुमान सीता को यह समाचार देते हैं कि राम ने लंका पर विजय पा ली है, तो सीता राहत की सांस लेती है और कहती है कि वह बहुत खुश है। सीता चंद्रमा को कहती है, उस पर छा जाए। यह बात हम सब जानते हैं कि चंद्रमा कैसे किसी मनुष्य पर छा सकता है, इस प्रकार चंद्रमा को राहत का प्रतीक बनाने के लिए चंद्रमा को प्राकृतिक मिथक के रूप में लिया गया है। यहाँ पर चंद्रमा के छा जाने का मतलब है कि चंद्रमा सीता को शीतलता प्रदान करता है। एक औरत को तब ठण्डक मिलती जब उसका पति विजयी होता है।

गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वाणी 'सोहिला' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक को विस्तार पूर्वक समझाने के लिए आरती, रवि, चंद और वायु का इस्तमेल इस प्रकार किया गया है-

"गगन में थाल रवि चंद दीपक बने

तारिका मंडल जनक मोती।।

धूप मलियानलों पवनु चवरो करे।

सकल बनराइ फुलन्त जोति।।

कैसी आरती होई भवखंडना तेरी आरती।।"[17]

ये पंक्तियाँ ईश्वर की आरती की ओर संकेत करती हैं। शुरू से ही मनुष्य की भगवान में गहरी आस्था रही है। हमारे समाज में अलग-अलग तरह के लोग रहते हैं और सब लोग अलग-अलग धर्मों की पूजा करते हैं। जैसे सिक्ख धर्म को मानने वाले श्री गुरु ग्रंथ साहिब की, ईसाई धर्म वाले अपने प्रभु की और हिन्दू लोग माता की पूजा करते हैं। सभी धर्मों को मानने वाले लोग अपने ईश्वर की आरती उतारते हैं। आरती उतारने के लिए ईश्वर को फूल समर्पित किए जाते हैं, इससे परमात्मा की शोभा बढ़ती है। व्यक्ति परमात्मा को सत्कार देने के लिए ईश्वर की पूजा करता है। हम सब का यह मानना है कि अगर हम परमात्मा की आरती उतारे तो ऐसा करने से परमात्मा भी खुश होते हैं और हमारी मनोकामना भी पूरी होती है, लेकिन यह एक प्रकार का हमारे पूर्वजों के समय से चला आ रहा प्राकृतिक मिथक है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक का संक्षेप रूप में वर्णन करने के लिए दिविक जी ने महामेघ को लिया है-

"यह कैसे घिर रहे हैं
महामेघ साँवले

आपके चेहरे पर।"[18]

इन पंक्तियों में जो महामेघ प्रयोग हुआ है, वह प्राकृतिक मिथक है, लेकिन यह प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है। प्राकृतिक मिथक के रूप में महामेघ को उदासी के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। जब कोई व्यक्ति चिंता में होता है, तो उसके चिहरे पर परेशानी झलकती है, जैसे आसमान पर काले बादल छाए हुए हो। बादल खुशी के भी प्रतीक हो सकते हैं। जब खेतों के लिए पानी की जरूरत होती है, तो उस समय बारिश हो जाए तो सभी लोग बहुत खुश होते हैं। राम को इस प्रकार संशय में देखकर सीता राम को कहती है कि आपके चेहरे पर यह उदासी के बादल क्यों मंडरा रहे हैं। प्राकृतिक मिथक को समझाने के लिए बादलों को हमारे मन के भावों को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किया गया है। इस प्रकार एक पुरुष हमेशा पुरुष होकर जीना चाहता है, उसे सिर्फ़ समाज की चिंता है, अपनी पत्नी की नहीं।

काशीनाथ सिंह द्वारा रचित 'उत्तर महाभारत की कृष्णकथा: समकालीन संदर्भ' में प्रकृति सम्बन्धी प्रकृतिक मिथक का उदाहरण धरती के नष्ट होने के रूप में इस प्रकार है-

"महायुद्ध के समय जो धरती जलकर राख हुई थी,
जो नदियाँ सूख गई थीं, जो जंगल बंजर हुए थे
वे जस के तस छोड़ दिए गए थे, उनकी किसी को
चिंता नहीं।"[19]

धरती की कथा को ब्यान करने के लिए प्राकृतिक मिथक का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए नए-नए रास्ते खोजता है। हमारे देश में अमीर और गरीब लोग बहुत है। जो अमीर लोग हैं, वे दिन-प्रति-दिन और अमीर हुए जा रहे हैं और जो गरीब लोग हैं, वे और गरीब होते जा रहे हैं। इस सबके दोषी हमारे देश के भ्रष्ट राजनेता है। पूंजीवादी लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रकृति को नष्ट कर रहे हैं। वह लोगों को कहते हैं कि वह विकास कर रहे हैं पर वह प्रकृति का विकास नहीं बल्कि विनाश कर रहे हैं। ऐसा करने से नुकसान तो प्रकृति का ही हो रहा है। प्रकृति का जो नुकसान हो रहा है, इससे हमारा वातावरण संकट में है, क्योंकि प्रकृति का नुकसान होने से प्रदूषण बढ़ रहा है, जिससे बहुत सी बीमारियाँ फैल रही है, जिससे लोगों की जान को खतरा पैदा हो रहा है। जो युद्ध होते हैं, इससे प्रकृति का जितना नुकसान होता है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब भी कोई युद्ध होता है, उसमें युद्ध करने वाले सिर्फ अपना फ़ायदा देखते हैं, उनको दूसरों की कोई परवाह नहीं होती।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक को दिविक जी ने हमारे समक्ष प्रस्तुत करने के लिए धरती को स्त्री के रूप में प्रयोग किया है-

"सीता नहीं खो सकती
उत्तरदायित्व सीता का संबंध
पृथ्वी से है अर्थ मिलता
है जिससे और रूप भी।"[20]

इसमें धरती प्राकृतिक मिथक है। धरती को एक औरत के रूप में प्रयोग करना ही प्राकृतिक मिथक है। धरती कभी मनुष्य रूप नहीं ले सकती, इसलिए प्राकृतिक मिथक को समझाने के लिए दिविक जी ने धरती का प्रयोग किया। धरती और स्त्री में समानता है, क्योंकि स्त्री जन्म देती है और धरती हमें जीवित रखने के लिए भोजन देती है, लेकिन स्त्री और धरती दोनों पर अत्याचार होते हैं। एक स्त्री अपने परिवार के लिए इतना कुछ करती है, लेकिन पुरुष फिर भी उसे कुछ नहीं समझता। इसी प्रकार धरती हमें रहने के लिए घर प्रदान करती है और हम फिर भी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए धरती का विनाश करते हैं। एक स्त्री और धरती दोनों अपनी ज़िम्मेदारी से कभी विमुख नहीं हो सकते।

निष्कर्ष:

इस प्रकार कहा जा सकता है कि दिविक जी ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथकों का बहुत अच्छे ढंग से प्रयोग किया है। दिविक जी ने अपने काव्य नाटक में अग्नि और पृथ्वी धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है। समुद्र, महामेघ, चंद्रमा सम्बन्धी मिथकों को प्राकृतिक के रूप में प्रयोग किया है। अग्नि, पृथ्वी को प्रकृति के धार्मिक मिथक के रूप में प्रयोग किया गया है। अन्य साहित्यकारों ने भी धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथकों को प्रस्तुत किया है। दिविक जी ने अपने काव्य नाटक में धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथकों का प्रयोग करके मनुष्य के मन के भावों को एक रूप प्रदान किया है। अपने इस काव्य नाटक में रामायण की कथा के माध्यम से दिविक जी का मुख्य उद्देश्य तो धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक को दर्शाना था।

संदर्भ-सूची

1 गोस्वामी तुलसीदास, रामचरित मानस, दोहा सं: 57, पृ. 85.

2 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 85.

3 स्वदेश भारती, भूकंप, कविता, बसंतकुमार परिहार, आकार पत्रिका, पृ. 25.

4 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 82.

5 विजय कुमार, कुंभ, कविता, से.रा.यात्री, विभूति नारायण राय, वर्तमान साहित्य पत्रिका, पृ. 15

6 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 82.

7 नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ. 166.

8 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 85.

9 नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ. 32-33.

10 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 16.

11 नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ. 49-50.

12 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 20.

13 मनीषा जैन, मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ, कविता, जितेन्द्र श्रीवास्तव, उम्मीद पत्रिका, पृ. 65.

14 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 27.

15 स्वदेश भारती, भूकंप, कविता, बसंतकुमार परिहार, आकार पत्रिका, पृ. 25.

16 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 34.

17 गुरु नानक देव, सोहिला, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महल्ला १, पृ. 13.

18 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 53.

19 काशीनाथ सिंह, उत्तर महाभारत की कृष्णकथा: समकालीन संदर्भ, पल्लव, बनास जन साहित्य-संस्कृति का संचयन, पृ. 61.

20 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 61.

तृतीय अध्याय

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रतीकात्मक मिथक

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज के विकास के पीछे एक लंबा इतिहास होता है। मानव के विकास में केवल वर्तमान ही नहीं बल्कि अतीत भी जीवत होता है। मिथक आदिकाल से चले आ रहे हैं। मिथक अतीत से लेकर भविष्य तक अपना प्रभाव बनाए रखते हैं। हमारे जो संस्कार होते हैं, उनके निर्माण में मिथकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मिथक और प्रतीकों का प्रयोग प्रत्येक युग में होता रहा है। मिथक में प्रतीकों

का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतीकों के माध्यम से ही मिथक स्पष्ट हो पाते हैं। हम बिना प्रतीकों के मिथकों का उपयोग नहीं कर सकते। जो मिथकीय पात्र होते हैं, वह प्रतीकों के रूप में आकर ही जीवन ग्रहण करते हैं। एक साहित्यकार अपनी कल्पना को साकार करने के लिए मिथकों को प्रतीकों के रूप में प्रयोग करता है। मिथक नया संदर्भ लेकर हमारे सामने प्रकट होते हैं। इसलिए मिथकों के प्रतीकों को भी नवीनता ग्रहण करनी पड़ती है।

पारुल ठा. चौधरी के अनुसार, "मिथक के प्रतीक को प्रत्येक संदर्भ में नवीनता ग्रहण करनी पड़ती है, नहीं तो वे रुढ़ हो जाते हैं और नवीनता ग्रहण करने के कारण अर्थवान हो उठते हैं।"[1] मिथक और प्रतीक का आपस में अटूट सम्बन्ध है। किसी भी साहित्य को ले लो, उसमें प्रतीकों का प्रयोग अवश्य होता है। मिथक व्यख्यात्मक प्रधान होते हैं, व्यख्यात्मकता के बिना मिथकों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रतीकों का कोई रूप नहीं होता। हम जब अपने मन के भावों को उद्धेलित करना चाहते हैं, तो प्रतीकों का आश्रय लेते हैं। प्रतीक मिथक की जीवन-शक्ति होते हैं। आत्मा के बिना शरीर किसी काम का नहीं, ठीक इसी प्रकार अगर प्रतीक न हों, तो हम मिथकों को किस प्रकार प्रयोग कर सकेंगे।

पी.अम्पिली के अनुसार, "प्रतीक वस्तुत: सामूहिक संरचनाएँ हैं। हर पीढ़ी के अनुभवों से इसकी सृष्टि होती है। ऐसा विश्वास है कि मिथक अज्ञात रचयिताओं की परंपरा से चले आ रहे आख्यान हैं। इनमें अलौकिक और अतिमानवीय घटनाएँ एवं चरित्रों का संयोग हुआ है। यह प्रतीकों के लिए सदैव प्रेरणास्त्रोत बने रहे हैं। मिथक और प्रतीक अपनी रचनात्मकता में बहुत निकट है।"[2] जिस भी साहित्य में मिथकों का प्रयोग किया जाता है, उस साहित्य में प्रतीक मिथकों को शक्ति प्रदान करते हैं। इस प्रकार मिथक और प्रतीक का आपस में अन्योयाश्रित सम्बन्ध होता है। मिथक काल्पनिक कथाएँ होती हैं, लेकिन अपनी कथा को वास्तविकता प्रदान करने के लिए प्रतीकों का आश्रय लेते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ.अश्विनी पराशर का मत है, "मिथक का प्रतीक के साथ एक अन्यवर्ती और घनिष्ठ सम्बन्ध है। काव्य में प्रयुक्त प्रतीक मिथक की शक्ति होते हैं। मिथक कथा को यथार्थ के स्तर पर अभिव्यक्त करने वाले उपादान के रूप में प्रतीक का प्रयोग होता है।"[3] प्रतीकों के माध्यम से हमारी बात श्रेष्ठ हो जाती है। प्रतीक भाषा को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। प्रतीकों के माध्यम से मिथकों को आकार मिलता है। इस सम्बन्ध में डॉ. उषापुरी विद्यावाचस्पति का कहना है, "अधिकांश मिथक कथाएँ भावात्मक प्रतीकों की सुंदर योजना जान पड़ती है। वास्तव में मिथक साहित्य बहुविध प्रतीकों की अनुपम निधि है।"[4]

इस प्रकार मिथकों को प्रतीकों से अलग करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। शंभुनाथ के अनुसार, "प्रतीक मिथक को एक मूल्यबोध से संयुक्त करता है और मिथक प्रतीक को सौंदर्य बोध से।

इसलिए प्रतीकों से अलग करके मिथक की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जिस प्रकार वस्तुगत सौंदर्य से मूल्यबोध को अलगाया नहीं जा सकता।"[5] मिथक आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक साहित्य में निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। मिथकों के द्वारा जो भाव अभिव्यक्त होते हैं, वह स्थायी होते हैं। शंभुनाथ के अनुसार, "एक ही पेड़ में जिस प्रकार पत्तियाँ की नई पीढ़ियाँ आती-जाती हैं, मिथक के भीतर प्रतीक भी इसी प्रकार बदलते रहते हैं और सामूहिक अनुभव परंपरा का विकास करते हैं, नयी पत्तियों के मध्य पेड़ भी नया जीवन प्राप्त करता है।"[6]

प्रतीक वह होते हैं, जो हमें किसी वस्तु का बोध कराते हैं। प्रतीक मिथक की शक्ति को बढ़ाते हैं। प्रतीक मिथक को एक नया जीवन प्रदान करते हैं। प्रतीकों की शक्ति के उदाहरण साहित्य में मिलते हैं। जैसे राम को सत्य का और रावण को असत्य का प्रतीक माना जाता है। भारत में सरस्वती को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। प्रतीक के बिना मिथक का महत्व निर्थक है। बहुत सारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रतीकों का प्रयोग किया है। इन्हीं साहित्यकारों में एक साहित्यकार दिविक रमेश है, जिन्होंने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व सम्बन्धी , प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग बहुत अच्छे ढंग से किया है।

अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक:

अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक वे होते हैं, जो अस्तित्व का ज्ञान कराने हेतु प्रयोग किए जाते हैं। अस्तित्व का अर्थ है- अपने आप के बारे में सोचना अर्थात कोई उसकी कितनी परवाह करता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसको इज्जत मिले। यही अस्तित्व होता है। अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथकों का जिन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में वर्णन किया है, वह इस प्रकार हैं- गुरदयाल सिंह, मैत्रेयी पुष्पा, शिवानी कोहली, प्रीता भार्गव आदि साहित्यकार हैं। इन्हीं साहित्यकारों में दिविक रमेश भी एक है। दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीक जो प्रयोग किए हैं, वह इस प्रकार हैं-

- **सन्नाटा**
- **सूचना**

अस्तित्व सम्बन्धी गुरदयाल सिंह द्वारा लिखी कहानी 'मोल की औरत' में प्रतीकात्मक मिथक के रूप में मिट्टी को स्त्री का अस्तित्व बताने के लिए प्रयोग किया गया है।

"मैं तो मिट्टी हूँ बहन.... ।"[7]

इस पंक्ति में मिट्टी प्राकृतिक मिथक है और इस प्राकृतिक मिथक को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। मिट्टी प्रतीक है- एक औरत के अस्तित्व की। मिट्टी के प्रतीकात्मक मिथक के माध्यम से औरत की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन समय से ही औरत को पुरुष ने अपने पैर की जुती बनाकर रखा है। पैर की जुती बनाकर रखना प्रतीकात्मक मिथक है और पैर की जुती होना प्रतीक है। जिस औरत की अपने पति के समक्ष कोई इज्जत न हो। औरत का अपना कोई अस्तित्व नहीं। पहले वह अपने जब पिता के घर होती है, तो उसे अपने पिता, भाई के अधीन रहकर अपनी ज़िंदगी व्यतीत करनी पड़ती है, जब उसकी शादी हो जाती है, तो अपने ससुराल वालों के अधीन रहना पड़ता है। स्त्री की देह का कोई एक मालिक नहीं होता, अपितु वह सार्वजनिक संपति की तरह प्रयोग होती है, जैसे कि उदाहरण वेश्या को लिया जा सकता है। वेश्या औरत की कोई ज़िंदगी नहीं होती, कोई भी पुरुष उस औरत का दाम देकर उसका सेवन कर सकता है। वेश्या का कार्य करना उस औरत की मजबूरी होती है। एक परिवार की इज्जत औरत के साथ जुड़ी होती है। इस प्रकार दिविक रमेश ने अपने काव्य-नाटक में प्रतीकों का अच्छे ढंग से ब्खान करने के लिए सन्नाटा को स्त्री के मन के भाव के रूप में प्रयोग किया है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में सन्नाटा को एक निराश स्त्री के अस्तित्व को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किया है। दिविक जी ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीक का प्रयोग इस प्रकार किया है:

सन्नाटा: "समाहित कर मुझे अपने घोष में,

कर दे मुझे बहरा ध्यानस्थ मुनि सा।"[8]

इन पंक्तियों में प्रतीकात्मक मिथक के रूप में सन्नाटा सीता के मन की अवस्था को ब्यान करता हुआ परेशानी का प्रतीक है। इन पंक्तियों में सन्नाटा के माध्यम से सीता के अस्तित्व की बात की गई है। पति-पत्नी का रिश्ता अभिन्न होता है। जब उनकी शादी होती है, तो पति-पत्नी एक दूसरे को वादा करते हैं कि वह

दोनों हमेशा साथ रहेंगे, एक-दूसरे के सुख-दु:ख में साथ देंगे। यह बात सत्य है कि अगर एक स्त्री को दूसरी स्त्री उसके पति के बारे में कुछ गलत बताए तो वह जल्दी विश्वास नहीं करती, लेकिन अगर एक मर्द को कहीं से भी यह बात पता चले कि उसकी पत्नी अच्छी नहीं तो मर्द अपनी पत्नी की कोई बात सुने बिना उसे अपने घर से निकाल देता है। क्या पति-पत्नी का रिश्ता इतना नाजुक हो जाता है कि उन्हें एक-दूसरे पर विश्वास ही नहीं रहता। एक स्त्री को जब उसका पति अस्वीकार करता है तो उस समय औरत की स्थिति एक लाश के समान होती है, ऐसा प्रतीत होता है कि उसमें प्राण न हो। औरत का अपने पति पर बहुत विश्वास होता है, अगर वही पति उसके साथ विश्वासघात करे तो वह औरत क्या करेगी, यह बात हम अच्छी तरह से जानते हैं। इस प्रकार दिविक रमेश ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को विश्लेषित करने के लिए पति-पत्नी के आपसी रिश्ते को आधार बनाया है।

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित 'औरत का वजूद' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का उदाहरण द्रौपदी जो कि मिथकीय पात्र है और आज की मूक स्त्री के अस्तित्व की प्रतीक है।

द्रौपदी: "नहीं कहा कि माँ, मैं स्त्री हूँ,

मनुष्य का रूप, कोई चीज तो नहीं हूँ,

जिसे बेटों में बराबर-बराबर बाँट दोगी।"[9]

इन पंक्तियों में द्रौपदी एक प्रतीकात्मक मिथक है और आज की एक ऐसी स्त्री की प्रतीक है, जो कुछ भी नहीं बोलती। वह अपना अपमान सहने को तैयार है। वह अपने अस्तित्व के बारे में कुछ भी नहीं सोचती कि वह क्या है। हमारे समाज में शुरू से ही लड़के-लड़की में भेद-भाव किया जाता रहा है। जब परिवार में लड़की जन्म लेती है, तो सभी उदास हो जाते हैं। प्राचीन समय में लड़की को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। लड़की को शिक्षा ग्रहण करने का भी कोई अधिकार नहीं था। लड़की को बचपन से ही पराई अमानत समझा जाता था। जब लड़की की शादी की जाती थी, तो उसे कुछ नहीं पूछा जाता था कि वह इस रिश्ते से खुश है या नहीं। उस समय की स्त्री ऐसी प्रतीत होती थी मानो उसके मुंह में जुबान ही न हो। स्त्री को खूँटे से बांधकर रखा जाता था। मुंह में जुबान न होना और खूँटे से बांधकर रखना प्रतीकात्मक मिथक है, जो प्रतीक है एक औरत की लाचार अवस्था के। कोई भी स्त्री के बारे में नहीं सोचता था कि वह भी इंसान है, कोई जानवर नहीं। जिस प्रकार समाज में सभी व्यक्ति समान हैं, ठीक उसी प्रकार वह भी

समाज का एक अंग है। स्त्री कोई खाने की वस्तु नहीं, जिसे जब चाहा मर्दों में बाँट दिया। उसका भी कोई अस्तित्व है। द्रौपदी ने कुंती के आदेश का पालन किया और पाँच भाईयों की पत्नी बन गई। द्रौपदी जो कि मिथकीय पात्र है और द्रौपदी को अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में प्रयोग करते हुए आज की औरत की मजबूरी को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया है। कहा जाता है कि महाभारत का युद्ध द्रौपदी के कारण हुआ, लेकिन जो स्त्री अपने अस्तित्व के लिए नहीं लड़ सकी, वह इतने बड़े युद्ध का कारण कैसे बन सकती है। एक औरत को हमेशा यह कहा जाता है कि वह लड़की है, उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं। एक औरत अपने पति को प्रश्न भी नहीं कर सकती। स्त्री भी पुरुष की तरह स्वतंत्र उड़ना चाहती है। औरत का स्वतंत्र उड़ना प्रतीक है उसकी आज़ादी का।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को सूचना के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जिसका उदाहरण निम्नलिखित है-

सूचना: "हाँ मैं विवश हूँ

विवश हूँ मैं दास सी।"[10]

इस पंक्ति में दिविक रमेश ने प्रतीकात्मक मिथक का प्रयोग करने के लिए सूचना को विवश व्यक्ति की प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। जो सूचना होती है, उसका अस्तित्व कुछ नहीं होता। सूचना के अस्तित्व की बात करना एक मिथक है। दिविक रमेश ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को सूचना के आश्रय से हमारे समक्ष उल्लेखित किया है। सूचना का कार्य लोगों को खबर पहुंचाना है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी। सूचना कभी भी अपने कार्य से इन्कार नहीं कर सकती। जिस प्रकार एक नौकर को अपने मालिक के आदेशों की पालना करनी पड़ती है, ठीक उसी प्रकार सूचना की स्थिति भी एक नौकर के समान होती है। एक स्त्री की स्थिति भी सूचना के समान होती है, उसे अपने पिता, भाई, पति की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। एक औरत को अपने आप को इतना भी लाचार नहीं समझना चाहिए कि समाज के पुरुष उसका गलत फ़ायदा उठाए। इस प्रकार दिविक जी ने अपने इस काव्य नाटक में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को दर्शाने के लिए सूचना को औरत के रूप में लिया है।

शिवानी कोहली द्वारा लिखित कविता 'भक्षक' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में भक्षक का का उदाहरण लिया गया है-

"आज वो 'स्त्री सशक्तिकरण' का

प्रतिनिधित्व कर रहा है वो भक्षक।"[11]

इस पंक्ति में प्रतीकात्मक मिथक को समझाने के लिए भक्षक को एक व्यक्ति के प्रतीक के रूप में लिया गया है। एक व्यक्ति का भक्षक होना मिथक है, लेकिन एक पुरुष जो स्त्री की इज्जत नहीं करता उस पुरुष को भक्षक का प्रतीक माना गया है। एक व्यक्ति जो औरत को कुछ भी नहीं समझता, वह यह भी नहीं सोचता कि उस औरत का भी अस्तित्व है। वह स्त्री को मात्र अपनी हवस के लिए प्रयोग करता है। वह स्त्री को एक वस्तु समझता है, जब चाहा प्रयोग किया और फेंक दिया। औरत को वस्तु समझना मिथक है। हमारे देश के जो पूंजीपति लोग होते हैं, वह औरत का बहुत शोषण करते हैं। बाद में वहीं आदमी स्त्री की चेतना के नारे लगाता है अर्थात् औरतों के हक की बात करता है। क्या वह आदमी एक राक्षस के समान न होगा, जो पहले तो औरत का शोषण करता है और बाद में उसका हितैषी बनता है। इस प्रकार राक्षस एक पुरुष का प्रतीक है, क्योंकि जिस प्रकार राक्षस किसी को नहीं छोड़ता है, ठीक राक्षस की तरह ही पुरुष है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का उदाहरण सन्नाटा को विवश स्त्री के रूप में इस प्रकार देखा जा सकता है-

सन्नाटा: "कर्त्तव्य तक ही सीमित हैं

हम हमारा संस्कार है

पालन करना, हम नहीं हैं प्रश्न।"[12]

दिविक जी ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का वर्णन करने के लिए इन पंक्तियों में सन्नाटा को स्त्री का प्रतीक बताया है। एक स्त्री की अपनी इच्छा कुछ नहीं होती। उसकी ज़िंदगी पुरुष पर आश्रित होती है। स्त्री का कर्त्तव्य होता है कि वह अपने पति का साथ दे, चाहे खुश होकर या उदास होकर। एक औरत इस हद तक बेबस होती है कि वह अपने पति को प्रश्न करने का अधिकार भी नहीं रख सकती। एक पुरुष तो स्त्री को अपना सत्य सिद्ध करने के लिए परीक्षा की मांग कर सकता है पर स्त्री ऐसा कदापि नहीं कर सकती, क्योंकि ऐसा करने का अधिकार उसे नहीं दिया गया। अग्नि-परीक्षा प्राचीन काल से चला आ रहा एक मिथक है। इस काव्य-नाटक में अग्नि पवित्रता की प्रतीक मानी गई है। एक स्त्री तो अपने परिवार के प्रति सभी कर्तव्य निभाती है, क्या पुरुष ने कभी यह सोचा कि उसका अपनी पत्नी के प्रति क्या कर्तव्य

है? एक स्त्री ही होती है जो अपने परिवार की अच्छे ढंग से देखभाल कर सकती है। स्त्री के बिना परिवार कभी सम्पूर्ण नहीं कहला सकता है।

प्रीता भार्गव की कविता 'मैं' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में धरती को स्त्री के प्रतीक के रूप में लिया गया है, जिसका उदाहरण इस प्रकार है-

"जब-जब खदेड़ा गया मुझे

धरती से बाहर, मैं और-और

हो गई यहाँ घनी!/गहरी!/विस्तृत!"[13]

इस कविता में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का प्रयोग करते हुए धरती को स्त्री की चेतना के प्रतीक के रूप में लिया गया है। इन पंक्तियों में स्त्री की चेतना उसकी शक्ति की बात की गई है। अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को समझाने के लिए इन पंक्तियों में घनी, गहरी, विस्तृत एक स्त्री की चेतना की प्रतीक अर्थात् उसके अस्तित्व की प्रतीक है। पहले समय में जो स्त्री थी, वह अपने पति की आज्ञाकांक्षिणी बनकर रहती थी, लेकिन आज की नारी जागृत हुई है। वह अपने ऊपर हो रहे अन्याय को सहती नहीं बल्कि मुकाबला करती है। स्त्री का हौंसला दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि एक औरत समय आने पर काली माँ का भी रूप धारण कर सकती है। इस प्रकार काली माँ एक मिथक है, जिसको एक औरत की शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। अगर हमने औरत की शक्ति की बात करनी हो तो अपनी बात का आधार ठोस बनाने के लिए हम औरत को काली माँ के प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में सन्नाटा को जागृत स्त्री के प्रतीक के रूप में लिया है, जिसका उदाहरण इस प्रकार है:

सन्नाटा: "जाग गया यदि स्त्रीत्व सीता में तो

हिल जाएगी नींव रामत्व की भी।"[14]

इस काव्य नाटक में दिविक जी ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को विस्तृत करने के लिए सन्नाटा को नारी का प्रतीक बताया है।दिविक जी ने इस काव्य-नाटक में मिथकीय पात्र सीता को एक आधुनिक नारी के प्रतीक में प्रयोग किया है। सीता के माध्यम से स्त्री की चेतना की बात की गई है। अगर स्त्री में अपने अधिकारों को लेकर चेतना जागृत हो गई, तो पुरुष समाज की आधारशीला हिल जाएगी। जो पुरुष नारी को अपनी रखेल बनाकर रखना चाहता है, जब नारी जागृत हो गई, तो वह पुरुष के अधीन कभी नहीं रहेगी। एक नारी-पुरुष से कभी अग्नि परीक्षा की मांग नहीं कर सकती, लेकिन जब एक औरत का अस्तित्व जाग उठा तो वह कभी अग्नि परीक्षा नहीं देगी, बल्कि पुरुष से भी अग्नि परीक्षा की मांग करेगी। नारी अपनी ज़िंदगी पुरुष के अधीन रहकर नहीं बल्कि स्वतन्त्रता से व्यतीत करेगी। जो आने वाला युग है, वह स्त्री-चेतना का युग है। इस युग में नारी-पुरुष एक समान होंगे। एक पुरुष स्त्री को अपनी जागीर बनाकर कभी नहीं रख सकेगा। इस प्रकार दिविक जी ने अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का वर्णन करने के लिए स्त्री के अस्तित्व को आधार बनाया है।

प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक:

मिथकों की अवधारणा कब और कैसे हुई यह निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता। जैसे हम कहते हैं कि मिथकों का निर्माण मनुष्य ने किया है, लेकिन मिथकों का निर्माण भले ही मनुष्य ने किया हो, लेकिन हुआ तो प्रकृति के माध्यम से ही है। प्रकृति का अर्थ जो प्राकृतिक वस्तुएँ होती हैं जैसे- धरती, मेघ, सूर्य, पेड़-पौधे, जल, अग्नि, चंद्रमा, तारे आदि के प्राकृतिक मिथक लोगों के जीवन में ऐसे नए अर्थ लेकर उभरने लगे कि लोगों का इन प्राकृतिक मिथकों में अटूट विश्वास हो गया।

श्रीमती ममता द्विवेदी के अनुसार, "विश्व भर के आदिम मिथकों के प्रकृति को सर्वाधिक ताकतवर रूप में देखा गया। प्रकृति के पदार्थों ने ऊर्जा का रूप धारण कर लिया। दिन और रात्रि के मिथकों में चारों तरफ समानता मिलती है, क्योंकि सूर्य और चंद्रमा के मिथक हर समाज में है। भारतीय मिथकशास्त्र में सूर्य सात घोड़ों के रथ पर सवारी करते हैं। कुछ समाजों के कृषि-व्यवस्था में प्रवेश करने की प्रक्रिया में उर्वरता के मिथक जीवन में प्रधान हो उठे थे।"[15] अगर हम सूर्य के मिथक को लेते हैं तो कहा जा सकता है कि सूर्य हमें रोशनी देता है, इसलिए लोगों ने सूर्य को रोशनी के प्रतीक के रूप में लिया। बहुत सारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग किया है, जैसे-स्वदेश भारती, मनीषा जैन, गुरु नानक देव, ए.के रामानुजन आदि। इन्हीं साहित्यकारों में से दिविक रमेश भी एक है, जिन्होंने अपने काव्य नाटक

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति वस्तुओं को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक इस प्रकार हैं-

- **अग्नि**
- **चंद्रमा**
- **महामेघ**
- **पत्थर**

प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकों का वर्णन स्वदेश भारती की कविता 'भूकंप' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में धरती को माता के प्रतीक में प्रयोग किया गया है। इसका उदाहरण इस प्रकार दृष्टव्य हुआ है-

"हे धरित्री! तुम तो धारण करती हो जीवन, प्रकृति
देती हो हरियाली, जल, पोषण फिर क्यों करती हो
हठात् समुन्द्र-मिलन के आत्मानंद में धरती जनों
का शोषण।"[16]

इन पंक्तियों में धरती प्राकृतिक मिथक है। धरती प्रतीक है, जननी की जो हमें जीवन प्रदान करती है। धरती को जननी का दर्जा देना प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक है, धरती को एक जन्म देने वाली माँ का प्रतीक माना गया है। धरती के कारण ही हमारे वातावरण में चारों और हरियाली होती है। हमें जीवित रहने के लिए जिन तत्वों की जरूरत होती है, वह तत्व धरती ही हमें भेट करती है। जितने भी पेड़-पौधे, जीव-जन्तु हैं, सब धरती के कारण ही जीवित हैं, धरती ही उन्हें जीवित रखती है। जब धरती में विस्फोट होता है, तो समुद्र में तूफ़ान आ जाता है, जिससे पूरी धरती का ही विनाश होता है। बहुत सारे लोगों को अपनी जान से हाथ धोने पड़ते हैं। लोगों ने इतनी मेहनत करके जो अपने रहने के लिए बसेरे बनाए होते हैं, सब नष्ट हो जाते हैं। यह जो इतना नुकसान होता है, उसकी भरपाई कर पाना असम्भव है। जैसे कहा गया है कि धरती तो जन्मदात्री है, फिर जन्मदात्री तो अपने बच्चों का कभी बुरा नहीं सोचती। इसका मतलब तो

यहीं हुआ कि जितना भी विनाश होता है, सब हमारे कारण ही होता है। जब हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाते हैं, तभी ऐसी स्थिति होती है।

दिविक रमेश के काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का उदाहरण अग्नि को साक्षी के प्रतीक के रूप में इस प्रकार लिया गया है-

अग्नि: "शुद्ध कर्त्ता ही नहीं मुझे
माना गया है शुद्धता
का माप भी लोक-साक्षी हूँ मैं।"[17]

दिविक जी अपने इस काव्य नाटक में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का प्रयोग करने में सक्षम रहे हैं। दिविक जी ने अपने इस काव्य-नाटक में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का वर्णन करने के लिए अग्नि को अपने प्रतीक का आधार बनाया है। इन पंक्तियों में अग्नि प्राकृतिक मिथक है। अग्नि को शुद्धता और साक्षी का प्रतीक माना गया है। पंडित जितने भी यज्ञ करते हैं, वह आहुति अग्नि में ही डालते हैं। अग्नि को पवित्रता का प्रतीक मानने के कारण ही यज्ञ अग्नि में किए जाते हैं। जब हम परमात्मा की आरती उतारने के लिए अगरबत्ती जलाते हैं, वह भी अग्नि से ही जलाई जाती है। इस प्रकार अग्नि इतनी शुद्ध पवित्र होती है। जब किसी को अपने-आप को सत्य साबित करना होता है, तभी अग्नि ही जांच की कसौटी बनती है, उस समय अग्नि ही उस व्यक्ति की परीक्षा लेती है।

मनीषा जैन की कविता 'मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का उदाहरण सूर्य को स्त्री का प्रतीक मानते हुए इस प्रकार दृष्टिगत होता है-

"तुम मुझे कहाँ तक ढूंढोगे जब मेरा अस्तित्व नहीं होगा
तब तुम्हें कौन जन्म देगा इसीलिए मैं तो रोज़ अस्त होकर
रोज़ उदित होती हूँ सूरज की तरह।"[18]

इन पंक्तियों में प्राकृतिक मिथक सूरज है और प्रतीक है स्त्री की चेतना का। शुरू से ही लड़की को लड़के के मुकाबले निम्न समझा गया है। हमारे बड़े लोगों का मानना है, जब घर में लड़की जन्म ले, तो समझो

लक्ष्मी का प्रवेश हुआ है, फिर यह बात समझ नहीं आती कि एक और तो हम लड़की को लक्ष्मी का दर्जा देते हैं, लड़की को लक्ष्मी का स्थान देना प्रतीकात्मक मिथक है। फिर हम ही लड़की को लड़के से कम महत्व देते हैं, ऐसा क्यों? अगर लड़की का वजूद ही मिट गया, तो समझो इस संसार का ही वजूद मिट गया। आज आधुनिकता का युग है। आज भी जब कोई महिला गर्भवती होती है, जिसकी पहले भी बेटी है, वह अपना टेस्ट करा के अगर गर्भ में लड़की हो, उसे पहले ही खत्म कर दिया जाता है। यह बात सोचने वाली है। अगर ऐसा ही होता रहा तो एक दिन इस धरती पर लड़कियां नहीं दिखाई देंगी, फिर हम अपने वंश को कैसे आगे बढ़ा सकेगें। परिवार की सुख समृद्धि एवं राष्ट्र का नव-निर्माण नारी की सहभागिता के बिना असंभव है। आज की स्त्री एक पक्षी की तरह इस संसार में उड़ान भरना चाहती है। स्त्री की आज़ादी को पक्षी का प्रतीक माना गया है। जिस प्रकार एक पक्षी को उड़ने के लिए किसी की आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं होती। इस प्रकार एक स्त्री सूरज की तरह छिपती है और हर सुबह सूरज की तरह नई उमंगे लेकर उदित होती है। जिस प्रकार सूरज अपनी रोशनी संसार को देता है, ठीक उसी प्रकार स्त्री भी अपने परिवार को नई रोशनी प्रदान करती है। सूर्य की किरणें रोशनी की प्रतीक होती है।

दिविक रमेश के काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्राकृतिक मिथक के रूप में चंद्रमा को शीतलता के प्रतीक के रूप में लिया है, जिसका उदाहरण निम्नलिखित है-

"चंद्रमा आ,

आ मुझ पर छा जा।"[19]

इस पंक्ति में प्राकृतिक मिथक चंद्रमा है और प्रतीक है, राहत का। यह कहा जाता है कि सूर्य से हमें गर्मी मिलती है और चंद्रमा से ठंडक मिलती है। जब भी हमारे जीवन में कोई समस्या आती है, तो हम बहुत परेशान होते हैं। जब उस समस्या का खात्मा हो जाता है, फिर हम खुश होते हैं और चंद्रमा के समान राहत की सांस लेते हैं। एक औरत का पति जब युद्ध से विजयी होकर घर लौटता है, उस समय वह औरत ऐसा महसूस करती है, जैसे उसकी ज़िंदगी से दु:ख के बादल चले गए हों और चंद्रमा उस की ज़िंदगी पर छा गया हो। हमारी ज़िंदगी से दुखों के बादलों का चला जाना और चंद्रमा का छा जाना प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक हैं, बादल और चंद्रमा हमारी ज़िंदगी के प्रतीक की और संकेत करते हैं।

गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'सोहिला' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में आरती का उदाहरण दृष्टव्य है-

"सकल बनराइ फुलन्त जोति।।

कैसी आरती होई भवखंडना तेरी आरती।।"[20]

प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का वर्णन करने के लिए परमात्मा की आरती को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। हम सबके जीवन में परमात्मा का बहुत महत्व होता है। इस संसार में अलग-अलग तरह के लोग निवास करते हैं। सभी लोगों का धर्म एक नहीं, बल्कि अलग-अलग है। सब लोग अपने भगवान को सम्मान देने के लिए उसकी उस्तुति करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि परमात्मा की उस्तुति करने से वह खुश हो जाते हैं और हम जो भी कार्य करते हैं, उस कार्य को परमात्मा खुद करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक धर्म के लोगों की अपने धर्म में गहरी आस्था होती है।

दिविक रमेश के काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक को प्रस्तुत करने के लिए महामेघ को उदासी के प्रतीक के रूप में लिया गया है जिसका उदाहरण निम्नलिखित है-

"यह कैसे घिर रहे हैं महामेघ

साँवले आपके चेहरे पर।"[21]

इस काव्य नाटक में प्राकृतिक मिथक महामेघ है। महामेघ का अर्थ है- बादल यह प्रतीक है उदासी के। महामेघ को खुशी का प्रतीक भी माना जाता है और उदासी का। जब भी किसी व्यक्ति के जीवन में कोई समस्या चल रही होती है, तो वह बहुत उदास होता है, जैसे उसकी खुशियों पर काले बादल ही छा गए हों। जब भी खेत में फ़सल पूरी तरह से पक कर तैयार हो जाती है, उस फ़सल को देखकर किसान बहुत खुश होता है। जब उस फ़सल की कटाई का समय आता है, उस समय अगर बादल आ जाए, तो किसान बादलों को देखकर निराश हो जाता है। उस समय बादल उदासी के प्रतीक माने जाते हैं। जब बहुत गर्मी हो, तो आसमान पर बादल छा जाए, तो वही बादल जो उदासी के प्रतीक माने गए थे, वही खुशी के प्रतीक माने जाते हैं। इस प्रकार हम अपनी खुशी-गमी को प्रस्तुत करने के लिए अर्थात्त मन के भावों को प्रकट करने के लिए बादलों का प्रयोग करते हैं, बादल हमारी खुशी और उदासी के प्रतीक माने गए हैं।

ए.के.रामानुजन द्वारा रचित 'तीन सौ रामायण: पाँच उदाहरण और अनुवाद पर तीन विचार' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक के रूप में पत्थर को जड़वत स्थिति का प्रतीक माना गया है, इसकी उदाहरण इस प्रकार है-

"किले के गुंबज पर अनेक पताकाएँ लहरा रही थीं
वहीं एक खुले मैदान में एक काला पत्थर खड़ा था
जो कभी अहल्या थी।"[22]

इन पंक्तियों में प्राकृतिक वस्तु पत्थर है। पत्थर प्रतीक है- नारी की जड़वत स्थिति का। पत्थर के प्रतीक से एक औरत की स्थिति को ब्यान किया गया है। हम अक्सर यह कहते हैं कि वह पत्थर दिल इन्सान है, इसका मतलब यह नहीं कि उस इन्सान का दिल सचमुच पत्थर का है, किसी को पत्थर मानना प्रतीकात्मक मिथक है। पत्थर दिल का मतलब होता है, जिसमें किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति कोई भावनांए न हो, उसे पत्थर दिल कहा जाता है। जब किसी मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसा घटित हो जाए, तो उस मनुष्य की स्थिति पत्थर समान हो जाती है। वह व्यक्ति एक चलती-फिरती लाश के समान प्रतीत होता है। एक पत्नी जो अपने पति से इतना स्नेह करती है, अगर उसका पति उससे अलग हो जाए तो वह औरत पत्थर के समान जड़वत हो जाएगी अर्थात् वह औरत इतना दु:ख सहन नहीं कर पाएगी। एक औरत का पत्थर की मूर्ति हो जाने का अर्थ है कि एक औरत की अपने पति के वियोग में हालत पत्थर सी हो जाती है अर्थात् औरत की स्थिति जड़वत हो जाती है और जब उस औरत का मिलन पुन: उसके पति से हो जाता है, तो वह चैतन्यशील हो जाती है अर्थात् उसमें जान आ जाती है। ठीक ऐसी स्थिति अहिल्या की थी। अहल्या एक मिथकीय पात्र है और एक औरत की जड़वत स्थिति को प्रस्तुत करने के लिए प्रतीक के रूप में प्रयोग की गई है।

दिविक रमेश के काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकात्मक मिथक का उदाहरण पत्थर को इस प्रकार लिया गया है-

अग्नि: "काश ये पत्थर से लोग

पत्थर ही बन जाते और रोक

पाते उस राह को ले गई जो

तुम्हें परीक्षा-प्रकोष्ठ में।"[23]

इस काव्य नाटक में प्राकृतिक मिथक पत्थर, अग्नि है। अग्नि पवित्रता की प्रतीक है और पत्थर ऐसे व्यक्तियों का प्रतीक है, जिनमें दूसरों के प्रति कोई प्यार की भावना का समावेश न हो। यह समाज ऐसा है कि इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने-आप से मतलब है दूसरों से नहीं। आज का इन्सान इतना स्वार्थी हो चुका है कि उसके सामने जितनी मर्जी बड़ी घटना घटित हो जाए, उसके दिल में उस घटना को देखकर कोई दर्द नहीं होता। इसका अर्थ तो यहीं हुआ कि आज का इन्सान पत्थर दिल है, जिसको सिर्फ़ अपनी पीड़ा है, दूसरों की पीड़ा से उसका कोई लेना-देना नहीं। इस प्रकार दिविक जी ने प्रकृतिक मिथक पत्थर को लेकर पत्थर को इन्सान की भावनाओं के प्रतीक के रूप में लेकर उजागर किया है। आज तो खून का रिश्ता ही अपना रिश्ता है, दूसरे रिश्ते से कोई मतलब नहीं। उदाहरण के लिए अगर लड़की दहेज न लेकर जाए, तो उसके ससुराल वाले इतना परेशान करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वह पत्थर दिल है, अगर इन्सान हों तो अपनी बहू को इतना परेशान कभी न करें। इतना परेशान इसीलिए करते हैं, क्योंकि उनका दिल नहीं पसीजता।

निष्कर्ष:

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में अस्तित्व और प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग बहुत बढ़िया ढंग से किया है। प्रतीकों की हमारी ज़िंदगी में बहुत महत्ता है। जब भी हम ने किसी व्यक्ति को कुछ समझाना होता है तो हम प्रतीकों का आश्रय लेते हैं। प्रतीक के जरिए हम कुछ भी हो उसे बहुत अच्छे ढंग से समझ पाते हैं। इस प्रकार दिविक जी ने प्रतीकात्मक मिथकों का प्रयोग करके अपने काव्य नाटक को एक मजबूत नींव प्रदान की है।

संदर्भ-सूची

1 पारुल ठा. चौधरी, सठोत्तर हिन्दी नाटकों का मिथकीय अनुशीलन, पृ. 16.

2 पी.अम्पिली, हिन्दी के आधुनिक मिथकीय नाटक: एक अध्ययन, पृ. 14-15.

3 अश्विनी पराशर, साहित्य में मिथक का प्रयोग, पृ. 30-31.

4 उषापुरी विद्यावाचस्पति, मिथक उद्भव विकास तथा हिन्दी साहित्य, पृ. 37.

5 शंभुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 85.

6 शंभुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता, पृ. 83.

7 गुरदयाल सिंह, मोल की औरत, प्रभाकर श्रोत्रिय, वागर्थ, अंक-62, जुलाई 2000, पृ. 13.

8 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 27.

9 मैत्रेयी पुष्पा, औरत का वजूद, लाल बहादुर वर्मा, इतिहास बोध, अप्रैल-2006, पृ. 32.

10 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 28.

11 शिवानी कोहली, भक्षक, जितेन्द्र श्रीवास्तव, उम्मीद, अंक-5, जनवरी-मार्च 2015, पृ. 71.

12 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 19.

13 प्रीता भार्गव, मैं, गोविन्द माथुर, अक्सर, अंक-23, जनवरी-मार्च 2013, पृ. 85.

14 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 73.

15 श्रीमती ममता दिर्वेदी, आधुनिक हिन्दी कविता में मिथकीय संयोजना, पृ. 11.

16 स्वदेश भारती, भूकंप, बसंत कुमार परिहार, आकार, अप्रैल-मई-जून 2003, पृ. 25.

17 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 20.

18 मनीषा जैन, मैं रोज अस्त होकर उदित होती हूँ, जितेन्द्र श्रीवास्तव, उम्मीद, अंक-5, जनवरी-मार्च 2015, पृ. 65.

19 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 34.

20 गुरु नानक देव, सोहिला, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महल्ला १, पृ. 13.

21 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 52.

22 ए.के.रामानुजन, तीन सौ रामायण: पाँच उदाहरण और अनुवाद पर तीन विचार, सुधीश पचौरी, वाक्, अंक-7, जनवरी-मार्च 2010, पृ. 15.

23 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 94.

चतुर्थ अध्याय

'खण्ड-खण्ड अग्नि' में सामाजिक मिथक

प्रस्तावना

समाज एक ऐसी इकाई है, जिसमें सभी व्यक्ति समूह के रूप में रहते हैं। समाज के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं जैसे आत्मा के बिना शरीर का। समाज युग के अनुसार चलता है, जैसे युग बदलता है, वैसे समाज भी बदलता है। जब भी किसी समाज का निर्माण होता है, तो उस समाज के निर्माण के सम्बन्ध में हमारे प्राचीन साहित्य में बहुत सारी घटनाओं का समावेश होता है, जिससे हमें यह ज्ञान होता है कि हमारे समाज का निर्माण किस प्रकार हुआ। मनुष्य समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य के बिना समाज के बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती। मनुष्य समाज की धुरी है। मिथकों के निर्माण में समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। मिथक उस समय से चले आ रहे हैं, जब से समाज का उद्भव हुआ है। हमारे आस-पास जितनी भी घटनाएँ होती हैं, सब समाज में ही घटित होती हैं। इस प्रकार मिथकों को समाज से अलग नहीं किया जा सकता। समाज ही मिथकों की पृष्ठभूमि है। सामाजिक क्षेत्र में मिथक बहुत प्रासंगिक होते हैं, मिथक समाज में इस लिए प्रासंगिक होते हैं, क्योंकि मिथक समाज से ही जन्म लेते हैं। मिथकों को समाज में मान्यता कोई एक व्यक्ति प्रदान नहीं करता, बल्कि समाज के सभी प्राणी सामूहिक रूप में स्वीकृति प्रदान करते हैं। इस प्रकार समाज में मिथकों का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। प्रत्येक लेखक इन मिथकों को समय के अनुसार अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रयोग करता है। लोगों का मिथकों में जो विश्वास होता है, वही मिथकों का मूल आधार होता है।

मिथक समाज से जन्म लेकर हमें हमारी संस्कृति, हमारे धर्म के बारे में ज्ञान कराते हैं। प्रत्येक देश की संस्कृति में मिथक नवीन संदर्भ लेकर प्रस्तुत होते हैं। मिथक हमारी आस्थाओं को भी जीवित रखते हैं और हमारे दृष्टिकोण को भी निर्धारित करने में मिथकों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस सम्बन्ध में डॉ. पुष्पपाल सिंह जी का यह कथन सार्थक प्रतीत होता है कि, "मिथक किसी न किसी प्रकार से प्रकृति के गुढ़ रहस्य या पराप्राकृतिक आस्था और विश्वास और इनके साथ जुड़ी भयमिश्रित श्रद्धा की भावना और धार्मिक दृष्टि के वाहक तत्व रूप ही नहीं हैं, वरन समाज का यथार्थपरक वैचारिक निष्कर्ष भी है, क्योंकि

यह स्पष्ट है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज का वर्तमान उसके अतीत की ही प्रतिछवि होता है।"[1] प्रत्येक समाज के लोगों ने मिथकों को नवीन संदर्भ के रूप में ग्रहण किया है। मिथक और समाज का आपस में बहुत गहरा रिश्ता है। यह माना जाता है कि मिथक अत्यंत प्राचीन है, लेकिन आज के नवीन जीवन में भी मिथकों का अस्तित्व स्थापित है। इस सम्बन्ध में शंभुनाथ जी का मत है, "सामान्य पढ़ी-सुनी जाने वाली कथा का अस्तित्व जल्दी मिट जाता है, किन्तु मिथकीय कथाएँ जातिय सांस्कृतिक भावना से जुड़ी होने के कारण सामाजिक विचारों और व्यवहारों के स्वरूपों का दीर्घकाल तक निर्धारण कर सकती हैं।"[2] मिथकों की रचना कोई एक व्यक्ति नहीं कर सकता, बल्कि समूह के एक गठबंधन द्वारा होती है। इस लिए मिथकों के निर्माण में समाज की अहम् भूमिका होती है।

सामाजिक मिथकों में हम स्त्री की स्थिति का वर्णन कर सकते हैं। मिथकों का समाज पर प्रभाव इस प्रकार भी देखा जा सकता है कि प्राचीन काल में स्त्री को देवी सामान तथा माँ का दर्जा दिया जाता था, लेकिन यहाँ एक ओर उसे देवी सामान माना गया, वहीं दूसरी ओर उसे दुर्बल प्राणी समझकर उसे गुलाम बनाकर रखा गया। उसके अधिकारों का हनन किया गया। वर्तमान में स्त्री को देवी मानना एक मिथक बन कर रह गया है। आज स्त्री को एक पुरुष अपनी लालसा तृप्त करने वाली वस्तु समझता है। आज के आधुनिक जीवन में स्त्री को अपनी सच्चाई को सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा देने को कहा जाता है। अगर किसी औरत का पति उसे छोड़कर चला जाए तो इसका मतलब यह तो नहीं कि उस औरत की ज़िंदगी समाप्त हो गई। आज की स्त्री ने इस मिथक को तोड़ दिया है और आज वह अपने अस्तित्व के लिए लड़ती है। आज भी कई ऐसे क्षेत्र हैं, यहाँ लड़की-लड़के का बाल विवाह किया जाता है, यह मिथक प्राचीन काल से चला आ रहा है और आज भी विद्यमान है। नारी के बिना पुरुष अधूरा है। कहा जाता है कि एक मर्द की सफलता के पीछे औरत का हाथ होता है। इस सम्बन्ध में कु॰ दीपमाला के अनुसार, "वाल्मीकि कृत रामायण में दर्शाया गया है कि जब सीता जी आश्रम में नहीं रहती थी, तो श्री राम का यज्ञ उनकी अनुपस्थिति में पूर्ण नहीं हो पाता तो उन्हें माता सीता की मूर्ति की प्रतिष्ठा कर अपना यज्ञ पूरा करना पड़ता थ।"[3] बहुत सारे लेखकों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक मिथकों का प्रयोग किया है। इन्हीं लेखकों में दिविक रमेश भी अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में सामाजिक मिथकों का प्रयोग करने में सर्वश्रेष्ठ रहे हैं। दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक और प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग उचित ढंग से किया है।

स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक:

एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच जो सम्बन्ध होता है, वहीं सम्बन्ध उन दोनों के अस्तित्व का आधार बनता है। स्त्री-पुरुष दोनों एक साथ मिलकर परिवार के लिए एक नींव का कार्य करते हैं। स्त्री-पुरुष के बीच सम्बन्धों की दृढ़ता उनके अस्तित्व को बनाए रखती है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक वह होते हैं, जिनके माध्यम से आज के स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को प्रस्तुत करने के लिए प्राचीन साहित्य से प्राचीन मिथकीय पात्रों का प्रयोग आज के स्त्री-पुरुष के बीच के सम्बन्ध को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। जैसे राम और सीता, द्रौपदी और पांडव सम्बन्धी सामाजिक मिथक। पहले समय और आज के समय में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में बहुत बदलाव आया है। पहले जो स्त्री थी, वह अपना पूरा जीवन पति, पुत्र, पिता के अधीन रहकर व्यतीत कर देती थी, लेकिन आज की स्त्री को पुरुष के समान सभी अधिकार मिले हैं। आज वह पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ती जा रही है। आज भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में काम वासना को अधिक महत्व दिया जाता है। इस संदर्भ में मृदुला गर्ग का कहना है, "धीरे-धीरे जंग खाता सामाजिक व्यक्ति उस मुकाम पर पहुँच जाता है, जहां उसके सबसे निजी क्षण स्त्री-पुरुष के बीच के दैहिक सम्बन्ध पर भी सामाजिक व्यवहार की बलि चढ़ जाती है। हमारे हाथ-पैर एक मशीनी रोबोट की तरह हरकत करते चले जाते हैं और हम अलग पड़े अपना तमाशा खुद देखते रहते हैं।"[4] बहुत सारे साहित्यकारों ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मिथकों का उल्लेख अपने साहित्य में किया है, जैसे कमल कुमार, निशि, मनीषा जैन, शिवानी कोहली, सरिता द्विवेदी, लाल सिंह दिल आदि। इन्हीं साहित्यकारों में दिविक रमेश जी भी एक है, जिन्होंने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मिथकों को बहुत अच्छे ढंग से चित्रित किया है। 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में जो स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मिथक हैं, वह इस प्रकार है-

- **स्त्री के अस्तित्व सम्बन्धी**
- **स्त्री की महत्ता सम्बन्धी**
- **स्त्री-पुरुष के भेद सम्बन्धी**

स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथकों का वर्णन कमल कुमार ने 'हंस के विमर्श' पत्रिका में बहुत अच्छे ढंग से किया है, जिसमें अस्तित्व सम्बन्धी मिथक को बताने के लिए स्त्री के अस्तित्व सम्बन्धी बात की गई है। इस लेख में यह बताया गया है कि समाज के लोगों की नज़र में स्त्री क्या है। निम्नलिखित पंक्तियों में

जड़े, तना सामाजिक मिथक है, इनके माध्यम से यह बताया गया है कि एक औरत का इस समाज में क्या वजूद है, इसका वर्णन किया गया है।

"धर्म औरत की जड़ें काटता है, समाज उसके तने को काटता है और परिवार उसके चेहरे को अदृश्य करता है। इस पुरुष प्रधान व्यवस्था में वह सिर्फ एक लटकन है, बिल्कुल आप्शनल है।"[5]

कमल कुमार ने अस्तित्व सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग स्त्री-पुरुष सम्बन्धी किया है। जड़ें, तना को सामाजिक मिथक के रूप में प्रयोग किया है। इस सामाजिक मिथक का प्रयोग करके औरत की स्थिति ब्यान की गई है। एक औरत को समाज में उतना सत्कार नहीं मिल पाता जितना कि उसका पाने का अधिकार है। एक औरत ही होती है, जिसके माध्यम से इस समस्त समाज का निर्माण होता है। एक औरत के बिना इस समाज की व्यवस्था कभी नहीं हो सकेगी। एक औरत का हमारे परिवार, समाज के निर्माण में इतना बड़ा हाथ है, तो फिर औरत को पुरुष के मुकाबले दूसरा दर्जा क्यों दिया जाता है, हमारा समाज औरत को क्यों दुत्कारता है? इस सबके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है लिंग-असमानता। इसी असमानता के कारण से स्त्री के अस्तित्व को पुरुष तुच्छ समझता है। एक पुरुष को स्त्री फालतू समान की तरह प्रतीत होती है, जिस का कोई महत्व नहीं। स्त्री को फालतू समान समझना सामाजिक मिथक ही है। जिस प्रकार हम किसी वस्तु का प्रयोग करने के बाद जब वह किसी काम की नहीं रहती तो हम फेक देते हैं, उसी प्रकार एक मर्द भी स्त्री को प्रयोग की जाने वाली वस्तु समझता है, जिसका कोई महत्व नहीं। पुरुष-स्त्री को दूसरे दर्जे का मानकर समाज में अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहता है। दिविक रमेश ने अपने काव्य-नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक को प्रस्तुत करने के लिए स्त्री के अस्तित्व को लिया है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में एक पुरुष के लिए स्त्री क्या है, इसका वर्णन दिविक रमेश ने अपने काव्य-नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक सीता के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व को बहुत बढ़िया ढंग से प्रस्तुत किया है-

"कहना हनुमान प्रभु से,

सीता वस्तु नहीं, नारी है

कुछ प्राण भी हैं उसमें।"[6]

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग करने के लिए मिथकीय पात्र सीता का आश्रय लिया है। यह बात अक्सर कही जाती है कि एक औरत अपने परिवार में ही सुरक्षित रह सकती है, लेकिन अगर देखा जाए तो परिवार ही सबसे पहले औरत के अस्तित्व को चोट पहुंचाता है, फिर औरत अपने परिवार में कैसे सुरक्षित हुई। एक औरत के अस्तित्व की मृत्यु के लिए उसका परिवार ही जिम्मेदार होता है। औरत के अस्तित्व की मृत्यु होना सामाजिक मिथक है। परिवार में औरत के लिए उसका पति अहम होता है, लेकिन वही पति अपनी पत्नी को एक साधन मात्र समझता है। एक पुरुष यह बात स्त्री के बारे में कभी नहीं सोचता कि जो स्त्री उसका इतना मान-सत्कार करती है, उस स्त्री के प्रति वह इतनी घटिया सोच रखता है। एक पुरुष शुरू से यह सोचता आ रहा है कि वह पुरुष है और औरत उसकी जागीर। एक पुरुष यह चाहता है कि उसकी पत्नी वहीं रहे, वह कार्य ही करे जैसा वह चाहता है, लेकिन आज की नारी-पुरुष की जागीर बनकर नहीं रहना चाहती। आज की औरत बेजान वस्तु की तरह नहीं रह सकती। वह अपने अस्तित्व को मारना नहीं बल्कि जीवित करके इस संसार में पूरी आज़ादी से विचरना चाहती है। एक औरत भी तो जीवित प्राणी है, उसकी भी भावनाएँ हैं, यह बात पुरुष को समझनी चाहिए।

सरिता द्विवेदी ने अपनी कविता 'भूमिका' में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक के लिए नारी की महत्ता को एक कूड़ेदान के जरिए हमारे समक्ष प्रस्तुत करने की कोशिश की है-

"कभी-कभी घर को सजाने और रिश्तों को

साफ-सुथरा रखने के लिए कूड़ेदान जैसा भी

बनना पड़ता है एक स्त्री को।"[7]

इस कविता में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक के माध्यम से नारी की महत्ता को सरिता दिर्वेदी ने प्रस्तुत किया है। यह बात सभी जानते हैं कि एक मजबूत परिवार की आधारशीला एक औरत पर निर्भर करती है। परिवार के सभी सदस्यों को एक औरत ही जोड़कर रख सकती है। परिवार पर जब भी कोई मुसीबत आती है, तो औरत पुरुष के समान खड़ी होकर उस मुसीबत का सामना करती है। एक औरत अपने परिवार के लिए जीती है, यहाँ तक कि वह अपनी इच्छायों का गला भी घोट देती है कि उसके परिवार वाले खुश रहें। अपने संस्कारों को दूसरी अपनी आने वाली पीढ़ी को समर्पित करने के लिए औरत

एक पुल का कार्य करती है। पुल सामाजिक मिथक है जो स्त्री के लिए प्रयोग किया गया है, पुल प्रतीक है जोड़ने का। एक औरत को अपने परिवार को सहेज-संवार के रखने के लिए बहुत सारी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। औरत अपने पति का हर मुश्किल घड़ी में साथ देती है। इस प्रकार एक औरत की अपने पति और परिवार दोनों के जीवन में बहुत महत्ता है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक को दिविक जी ने प्रस्तुत करने के लिए मिथकीय पात्र सीता को नारी की महत्ता बताने के लिए निम्नलिखित पंक्तियों में दृष्टव्य किया है-

"क्या वंश से बाहर हैं भाभी? क्या वंश से बाहर होती है माँ?

क्या गढ़ा जाता है वंश अकेले पिता से ही? क्या केवल श्रमिक

है नारी, निर्माण होते ही भवन का तिरस्कार कर दिया जाए जिसका?"[8]

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग हमारे समाज में स्त्री की अहम भूमिका को दिखाने के लिए किया है। एक पुरुष-स्त्री को अपने घर में रखता है अर्थात उसकी सुरक्षा करता है, लेकिन बदले में वह स्त्री की देह का प्रयोग करता है, अगर उस स्त्री की जमीन-जायदाद हो तो उसका भी प्रयोग करता है। जब पुरुष की उस स्त्री के प्रति जो भी आकांक्षाएँ होती हैं, जब वह तृप्त हो जाती हैं, तो वह पुरुष उस स्त्री को अपने घर से निकाल देता है। क्या एक स्त्री की पुरुष के जीवन में इतनी ही महत्ता है कि जब जरूरत पड़ी तो स्त्री का प्रयोग किया और बाद में अपनी ज़िंदगी से निकाल दिया। जो स्त्री अपने पति और परिवार के लिए समर्पण की मूर्ति होती है, उसकी महत्ता को पुरुष अनदेखा कर देता है और अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए स्त्री का सेवन करता है। सीता ने भी अपने परिवार के लिए इतना कुछ किया, लेकिन बदले में उसे तिरस्कार ही मिला।

तसलीमा नसरीन द्वारा 'हंस के विमर्श' पत्रिका में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक के माध्यम से स्त्री-पुरुष के भेद को बहुत अच्छे ढंग से निम्नाकित किया गया है-

"स्त्री को डरना एवं लज्जालु होना पुरुष प्रधान समाज ने सिखाया है, क्योंकि भयभीत एवं लज्जालु रहने पर पुरुषों को उस पर अधिकार जताने में सुविधा होती है। इसलिए डर और लज्जा को स्त्री का आभूषण कहा जाता है।"[9]

प्राकृतिक रूप से जब एक लड़का-लड़की जन्म लेते हैं, तो वह समान होते हैं, लेकिन बाद में हमारा समाज ही उनमें भेद-भाव करता है। लड़की को बचपन से ही यह बात समझाई जाती है कि वह पराया धन है अर्थात पराये धन का तमगा बचपन से ही उसके माथे पर लगा दिया जाता है। शुरू से ही उसके मन में यह बात बिठा दी जाती है कि वह लड़की है। लड़की को शुरू से ही संस्कारों का पाठ पढ़ाया जाता है, अगर लड़की खुलकर ज़िंदगी व्यतीत करती है या किसी के सामने उच्चा बोलती है, तो समाज के लोग उसे अभद्र कहते हैं। समाज में उसे स्वतन्त्रता के साथ घूमने भी नहीं दिया जाता, अगर वह ऐसा करती है तो लोग उसके चरित्र पर उंगली उठाने लग जाते हैं। स्त्री को यह बात हमेशा कही जाती है कि उसका पति ही उसका सब कुछ है, उसे अपने पति की आज्ञा का पालन करना ही होगा। स्त्री को इस प्रकार पुरुष के मुकाबले दबा कर रखने के पीछे सबसे ज्यादा दोष हमारे समाज का है। यह बात हम अच्छी तरह से जानते हैं कि आज स्त्री-पुरुष से आगे है, फिर भी स्त्री के साथ हमारा समाज ऐसा भेद-भाव करता है। यह बात हमेशा कही जाती है लज्जा और डर स्त्री का गहना है, इसका अर्थ है स्त्री को अपने इस गहने को ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार लज्जा और डर सामाजिक मिथक है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक में दिविक जी ने स्त्री-पुरुष के भेद को राम-सीता मिथकीय पात्रों के माध्यम से इस प्रकार दृष्टव्य किया है-

"तुम पुरुष नहीं, नारी हो सीता?

समझना ही होगा तुम्हें युग-सत्य को?

रही हो तुम छत्रछाया में रावण की।"[10]

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग स्त्री-पुरुष के आपसी असमानता को दर्शाने के लिए किया है। स्त्री हमारे वंश का विस्तार करती है। हम ने स्त्री को अपने उपनिवेश का साधन बना लिया है। उपनिवेश सामाजिक मिथक की और संकेत करता है, क्योंकि उपनिवेश का अर्थ व्यापार से है जो कि स्त्री का हो रहा है। एक पुरुष अपनी पत्नी को अपने घर में इस प्रकार रखता है, जैसे किसी पालतू जानवर को रखा जाता है, जब दिल किया प्यार किया और जब दिल किया मार लिया। हमारे समाज ने स्त्री और पुरुष दोनों के बीच में जो रेखा खींच दी है, उसके कारण आज स्त्री की जाति और नाम तक भी नहीं बचा। जब भी किसी लड़की की शादी हो जाती है, तो उस लड़की को

उसके पति और उसके पति की जाति से जाना जाता है। एक स्त्री को पुरुष से हमेशा कमजोर माना जाता है। यह कहा जाता है कि एक स्त्री में पुरुष के मुकाबले किसी भी कार्य को करने की क्षमता कम होती है। आदमी और औरत के इस भेद के कारण आज समाज में औरत दबी हुई है। आज औरत होना उस के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक:

मनुष्य ने जब इस संसार में प्रवेश किया तो सबसे पहले मनुष्य का साक्षात्कार प्राकृतिक वस्तुओं से हुआ। मनुष्य ने इन प्राकृतिक वस्तुओं का आनंद उठाया और बाद में इन प्राकृतिक वस्तुओं को मनुष्य ने मिथकों के रूप में देखना शुरू कर दिया। प्रकृति का अर्थ है- हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें हरियाली, सूर्य, चंद्र, धरती, जल आदि सभी वस्तुएँ शामिल होती हैं। विश्व भर के मिथकों में प्राकृतिक मिथक सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक वह होते हैं, जिसमें प्राकृतिक सत्ताओं को सामाजिक सम्बन्धों के रूप में देखा जाता है, जैसे धरती को जननी के रूप में, सूर्य को देवता के रूप में, चंद्रमा को पति के रूप में आदि यह प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक हैं। सूर्य और चंद्रमा सम्बन्धी मिथक विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। जिस दिन कर्वा चौथ का वर्त होता है, उस दिन चंद्रमा को पति मानकर औरतें चंद्रमा की पूजा करती हैं, ऐसा इस लिए किया जाता है, क्योंकि ऐसा करने से उनके पति की आयु लम्बी होती है। इस प्रकार यह एक सामाजिक मिथक हुआ। प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथकों के संदर्भ में श्रीकला वी.आर. का विचार उल्लेखनीय है, "प्रागैतिहासिक युग में मानव के विवेक ने इस सत्य से साक्षात्कार किया था कि प्रकृति ही उनके अस्तित्व का एक मात्र आधार है। विश्व भर के आदिम मिथकों में प्रकृति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सूर्य, चंद्र जैसे प्रकृति की विभूतियाँ लोक-जीवन में नये-नये अर्थों को लेकर उभरने लगी। प्रकृति के कल्याणकारी एवं आतंक रूप को आराधन भरी दृष्टि से देखने लगा और उसमें देवत्व आरोपित किया। प्रकृति के इस चमत्कारिक प्रवृतियों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया ही मिथक है।"[11] प्रकृति सम्बन्धी जिन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में उल्लेख किया है, वह इस प्रकार हैं- गुरदयाल सिंह, प्रीता भार्गव, मनीषा जैन, शिवानी कोहली आदि। दिविक रमेश ने भी अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथकों का बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। अपने काव्य नाटक में दिविक जी ने जो प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक प्रयोग किए हैं, वह निम्नलिखित हैं-

- **समुद्र**

- **पृथ्वी**
- **अग्नि**

प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथकों का वर्णन गुरदयाल सिंह ने अपनी एक कहानी 'मोल की औरत' में मिट्टी के प्राकृतिक मिथक के माध्यम से एक औरत का क्या अस्तित्व है, अपनी इस कहानी में बताने की कोशिश की है। मिट्टी औरत के अस्तित्व की ओर इशारा करती है।

"मैं तो मिट्टी हूँ बहन, इन मर्दों ने तो मेरी चमड़ी भी चूस ली।"[12]

मिट्टी प्राकृतिक मिथक होने के साथ-साथ सामाजिक मिथक भी है। एक औरत की स्थिति मिट्टी की तरह होती है। औरत की तुलना मिट्टी से करना सामाजिक मिथक है। जिस प्रकार मिट्टी से बनी कोई भी वस्तु अधिक मजबूत नहीं होती वह जल्दी टूट जाती है, ठीक उसी प्रकार एक औरत की स्थिति भी वैसी ही है, औरत के चरित्र पर कब दोष लग जाए कुछ पता नहीं। मिट्टी की तरह औरत का अस्तित्व भी जल्दी समाप्त हो सकता है। यह हमारा पुरुष समाज है ही ऐसा। एक पुरुष के लिए औरत खिलौने के समान है, जब चाहा खेला, जब चाहा फेंक दिया। एक पुरुष औरत के व्यक्तित्व के बारे में कभी नहीं सोचता। औरत और मर्द में जो अस्तित्व सम्बन्धी भेद किया जाता है, वह देह के कारण ही होता है। एक औरत को समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपना प्रत्येक कदम सोच समझकर रखना पड़ता है। औरत को हमेशा इसी बात की चिंता रहती है कि वह कोई ऐसा कार्य न कर दे जिससे लोग उसे गलत समझने लग जाए। दिविक जी ने प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक के माध्यम से औरत के अस्तित्व को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है, निम्नलिखित देखिए-

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक के लिए समुद्र को लिया है और समुद्र के माध्यम से औरत के अस्तित्व को उजागर किया है। जैसे-

"आ समुद्र आ, ले समाहित कर मुझे अपने घोष में।"[13]

दिविक जी ने प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक के रूप में समुद्र को लिया है और पति-पत्नी के रिश्ते की और समुद्र के माध्यम से संकेत किया है। पति-पत्नी का रिश्ता बहुत नाजुक डोर से बंधा हुआ होता है। दोनों में अगर कोई ऐसी बात हो जाए तो उनके रिश्ते में द्रार आ जाती है। पति-पत्नी के सम्बन्ध में

विश्वास एक धुरी के रूप में कार्य करता है। विश्वास के टूटने पर उनका रिश्ता भी स्थिर नहीं रह पाता। एक औरत अपने पति का वियोग कभी नहीं सह पाती। जब किसी औरत का पति उससे दूर चला जाता है, तो उस औरत की स्थिति जड़वत हो जाती है। मर्द को अगर कोई भी उसकी पत्नी के बारे में कुछ भी गलत बता दे तो उसके मन में अपनी पत्नी के प्रति संशय हो जाता है, चाहे कितना भी उन दोनों में प्यार हो। एक बार सम्बन्धों में संशय पैदा हो जाए तो सम्बन्ध पहले जैसे कभी नहीं रहते, यह एक अटल सच्चाई है। हमारे समाज में अगर पुरुष-औरत के प्रति अपनी संकीर्ण सोच को बदल ले तो औरत का भी अस्तित्व पुरुष के अस्तित्व के समान हो जाएगा। औरत के अस्तित्व पर जो लोग उंगली उठाते हैं, इसका कारण हमारे समाज की रूढ़िवादी सोच। हमारे समाज की यह सोच है कि औरत को अगर पूर्ण रूप से स्वतंत्र कर दिया जाए तो औरत बिगड़ जाएगी। किसी औरत के चरित्र को अगर उसका पति नीच कहता है, तो उस समय औरत अपने आप को खत्म करने के बारे में ही सोचती है, उसे और कोई रास्ता नजर नहीं आता। औरत को यहीं लगने लग जाता है कि उसके जीने की आशा अब नहीं बची। इस प्रकार औरत मृत्यु के विकल्प को चुनती है।

प्रीता भार्गव की कविता 'मैं' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक में धरती को लेकर धरती से स्त्री के सम्बन्ध को जोड़ा गया है। निम्नलिखित पंक्तियों से धरती और स्त्री का सम्बन्ध बहुत अच्छे ढंग से उजागर होता है-

"फिर-फिर, बार-बार आती रही मैं,

मेरी अपनी धरती पर, धरती बनकर।"[14]

धरती और स्त्री को आपस में जोड़ना प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक है। एक स्त्री और धरती का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। धरती को स्त्री का प्रतीक माना जाता है। औरत के गर्भ से सभी जन्म लेते हैं। औरत तो सिर्फ जन्म देती है, लेकिन हमारा पालन-पोषण तो धरती ही करती है। हमें जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, जो हमें धरती से मिलता है। इस प्रकार धरती और स्त्री दोनों को ही जननी कहा जाता है। जब-जब औरत के अस्तित्व की बात हुई, औरत ने अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए अन्याय के विरुद्ध डटकर संघर्ष किया। जिस प्रकार हम जब भी किसी पौधे को काटते हैं, तो वह दुबारा उगरने लग जाता है, उसी प्रकार औरत भी धरती के समान है, जब भी उसके व्यक्तित्व को खत्म करने की कोशिश की गई, औरत ने हार नहीं मानी बल्कि धरती के समान और घनी और विस्तृत होकर मुकाबला

किया। औरत का घनी होना प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक है। एक औरत को धरती अपनी माँ के समान प्रतीत होती है।

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक में पृथ्वी को लेकर औरत का पृथ्वी से सम्बन्ध जोड़ा गया है। निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टव्य है-

"सीता नहीं खो सकती उत्तरदायित्व,

सीता का सम्बन्ध पृथ्वी से है,

अर्थ मिलता है जिससे और रूप भी।"[15]

दिविक जी ने अपने काव्य नाटक में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक का प्रयोग पृथ्वी और धरती के बीच के सम्बन्ध को दर्शाने के लिए किया है। औरत और धरती का जो आपस में रिश्ता है, वह अनमोल है। एक औरत ही होती है, जो अपने परिवार के सभी सदस्यों को एकता के धागे के सूत्र में पिरोती है। औरत अपने परिवार के प्रति सभी कर्तव्यों को दिल से निभाती है। औरत की तरह धरती भी अपनी सभी जिम्मेदारियों को निभाती है। हम लोग अपने स्वार्थ के लिए धरती के साथ गलत व्यवहार करते हैं, लेकिन धरती फिर भी हमें हमारी जरूरत की सभी वस्तुएँ प्रदान करती है। परिवार के लोग स्त्री को बहुत कुछ सुनाते हैं, लेकिन औरत फिर सब कुछ भूल कर अपने परिवार का ध्यान रखती है, उनकी प्रत्येक जरूरत को पूरा करती है।

प्रीता भार्गव की कविता 'मैं' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक में लौ को लिया है। लौ स्त्री के सम्मान की और इशारा करती है। लौ का अर्थ 'आग की लपटें'। जब आग जलती है, तो उसकी लपटें ऊपर की और उड़ती हैं-

"जब-जब बुझाया गया मुझे, मेरे होने की लौ

और उच्ची होती गई।"[16]

एक स्त्री को जितनी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, वह स्त्री ही जानती है, जिसको कठिन दौर से गुजरना पड़ता है। इस प्रकार के हालात स्त्री के लिए एक प्रकार की परीक्षा ही होते हैं। एक औरत जो निडर है, वह इस परीक्षा को पास करने के लिए पूरा प्रयास करती है। जो औरत इन कठिन परिस्थितियों में हिम्मत नहीं हारती, वह समाज में सम्मान की अधिकारी बनती है। एक औरत को समाज में रहते हुए बहुत कुछ सुनना पड़ता है। कभी-कभी ऐसा समय भी औरत के समक्ष आता है, उस समय औरत को लगने लग जाता है कि अब तो उसका अस्तित्व शून्य समान हो जाएगा, उस समय औरत अपने अस्तित्व को उच्चा उठाने के लिए हर सम्भव यत्न करती है। औरत यह सब इसलिए करती है कि उसके अस्तित्व पर कोई आंच न आए। रावण को बुराई का प्रतीक माना गया है, यह जरूरी नहीं होता कि रावण मनुष्य रूप में ही होता है, कभी-कभी बुरे हालात भी रावण रूपी होते हैं, जिनको हमें समाप्त करना चाहिए। एक औरत इन रावण रूपी हालातों को खत्म करके उच्चता का दर्जा प्राप्त करती है। हालातों को रावण रूपी दर्जा देना सामाजिक मिथक है।

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में स्त्री के सम्मान को प्रदर्शित करने के लिए अग्नि के प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक को लिया है। अग्नि औरत के सम्मान की प्रतीक है-

"तुम उच्चा करो सिर,

सीता तुम उच्चा करो लोक साक्षी हूँ मैं,

न्यायधीश शुद्धता का माप हूँ।"[17]

जैसा कि ऊपर बताया है कि जब आग लगती है तो उसकी लपटें आसमान की और जाती हैं। इस प्रकार जब किसी औरत की ज़िंदगी में समस्या का तूफ़ान आता है, तो औरत उस तूफ़ान का सामना करने के लिए आग रूपी बन जाती है, उस समय औरत के हृदय की जो ज्वाला होती है, वह आग की लपटों के समान होती है। औरत का आग का रूप लेना प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक है। जब औरत के व्यक्तित्व की बात आती है, तो औरत अपने व्यक्तित्व के सम्मान के लिए किसी से डरती नहीं, चाहे उसका पति हो या कोई और। पुरुष चाहता है कि समाज में उसे इज्जत मिले, कोई भी उसके व्यक्तित्व के बारे में गलत न बोले। अपने इसी व्यक्तित्व को समाज में बनाए रखने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। पुरुष चाहता है कि उसकी पत्नी अपने-आप को उसकी नजरों में सही साबित करने के लिए सबूत दे, फिर वह उसकी बात

पर विश्वास करेगा। यह सब पुरुष की सामंतवादी सोच के कारण ही होता है कि वह समाज के बारे में पहले सोचता है, बाद में अपनी पत्नी के बारे में सोचता है। औरत संघर्ष का दूसरा नाम है। आज औरत अपनी शुद्धता को समाज के समक्ष सिद्ध करने के लिए किसी भी प्रकार की परीक्षा का विरोद्ध करती है और अपने खोये हुए सम्मान को पाने के लिए समाज के खिलाफ़ संघर्ष करती है।

मनीषा जैन द्वारा रचित कविता 'मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक में बादल को लेकर नारी की चेतनता की और इशारा किया गया है-

"आसमान में फिरती हूँ स्वच्छंद बादल सी

तुम मुझे कहाँ तक ढूंढोगे।"[18]

पहले समय की स्त्री और आज के समय की स्त्री में जमीन-आसमान का फ़र्क है। पहले समय की स्त्री अपना सारा जीवन अपने परिवार के लिए समर्पित कर देती थी, चाहे उसका परिवार कैसा भी हो। पति को तो दूसरा इष्ट मानकर उसकी पूजा करती थी। उस समय की औरत की ज़िंदगी बस घर की चारदीवारी तक ही सीमित थी, उसे बाहर की दुनिया के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। उस समय की औरत ने अपने बारे में तो कभी सोचने की चेष्टा ही नहीं की थी। जो आज की औरत है, वह चेतन हुई है। आज वह अपनी ज़िंदगी को किसी की मलकीयत नहीं समझती। आज की औरत अपना हक पाने के लिए अपने परिवार के समक्ष खड़ी हो जाती है। आज की औरत ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह पुरुषों से पीछे नहीं बल्कि दो कदम आगे है। नारी के इस रूप को देखकर आज के पुरुष के सोच में भी धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। यह सब नारी के जागृत होने के कारण ही हुआ है। औरत बादलों की तरह आकाश में उड़ारी भरना चाहती है, इस प्रकार यह सामाजिक मिथक है।

दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक के रूप में पृथ्वी के माध्यम से नारी की चेतनता को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है-

"सावधान पुत्री! सावधान!

खोजनी होगी स्वयं एक भूमिका अपने लिए

खोजने ही होंगे संवाद

इस भूमिकाहीन मंच पर।"[19]

औरत परिवार की केंद्र बिन्दु होती है। एक औरत पहले किसी की बेटी, बहन और बाद में किसी की पत्नी, माँ, देवरानी आदि इतनी भूमिकाएँ परिवार में निभाती है। औरत अपने आँचल में पूरे परिवार को समेटने की क्षमता रखती है। औरत-पुरुष के मुकाबले अधिक करुणामयी होती है। औरत के बिना कभी परिवार सम्पूर्ण नहीं हो सकता। औरत की इतनी अहम् भूमिका होने के बाद भी हमारा समाज औरत का तिरस्कार करता है। नारी-मुक्ति के नारों से आज औरत जागरूक हो चुकी है। आज की औरत को अगर कुछ मिलता नहीं तो वह चुप नहीं रहती बल्कि छीन लेती है। औरत जागरूक हुई है- शिक्षा के कारण। आज की शिक्षित औरत अपने परिवार पर आत्म-निर्भर नहीं। औरत को समाज के लोगों का सामना करने के लिए अपने अधिकारों के प्रति सचेत होना बहुत जरूरी है, औरत तभी सचेत होगी अगर वह पढ़ी-लिखी है। औरत को पृथ्वी का दर्जा देना प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक है।

निष्कर्ष:

यही कहा जा सकता है कि 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में दिविक जी ने जो स्त्री-पुरुष और प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक प्रयोग किए हैं, उनका उद्देश्य इन मिथकों के माध्यम से औरत की दशा को ब्यान करना है। हम इन मिथकों के माध्यम से आज की औरत के हालातों के बारे में अच्छे ढंग से साक्षात्कार हो सकते हैं। यह सब हम तभी जान सकेंगे अगर हमें इन सामाजिक मिथकों का ज्ञान होगा। मिथकों को सामाजिक मिथकों की श्रेणी में इस लिए बांटा गया है, क्योंकि सभी घटनाएँ समाज में ही घटित होती है, इसलिए मिथकों को सामाजिक श्रेणी में रखना जरूरी होता है।

संदर्भ-सूची

1 अश्विनी पराशर, हिन्दी नयी कविता: मिथक काव्य, पृ. 53.

2 सुरैय्या शेख, नाटककार भीष्म साहनी, पृ. 186.

3 कु॰ दीपमाला, मिथकीय चेतना के संदर्भ नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन, पृ. 67.

4 मृदुला गर्ग, अजनबियों की मानिंद, पृ. 3.

5 कमल कुमार, हंस के विमर्श, राजेंद्र यादव, हंस के विमर्श, वाणी प्रकाशन, 2012, पृ. 171.

6 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 37.

7 सरिता द्विवेदी, भूमिका, पंकज गौतम, सबके दावेदार, प्रयोग प्रेस, गुरुटोला, फरवरी 2012, पृ. 32.

8 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 65.

9 तसलीमा नसरीन, हंस के विमर्श, राजेंद्र यादव, हंस के विमर्श, वाणी प्रकाशन, 2012,पृ. 153.

10 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 51.

11 श्रीकला वी. आर, समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ, पृ. 10.

12 गुरदयाल सिंह, मोल की औरत, प्रभाकर श्रोत्रिय, वागर्थ, डॉ कुसुम खेमानी मंत्री, भारतीय भाषा परिषद 36 ए, शेक्सपीयर सरणी प्रकाशन, जुलाई 2000, पृ.13.

13 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 27.

14 प्रीता भार्गव, मैं, हेतु भारद्वाज, अक्सर, ए-243, त्रिवेणी नगर, जनवरी-मार्च 2013, पृ. 85.

15 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 61.

16 प्रीता भार्गव, मैं, हेतु भारद्वाज, अक्सर, ए-243, त्रिवेणी नगर, जनवरी-मार्च 2013, पृ. 84.

17 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 94.

18 मनीषा जैन, मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ, जितेन्द्र श्रीवास्तव, उम्मीद, यश पब्लिकेशन्स, जनवरी-मार्च 2015, पृ. 65.

19 दिविक रमेश, खण्ड-खण्ड अग्नि, पृ. 102.

उपसंहार

दिविक रमेश कृत काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' का समीक्षात्मक विवेचन करने के बाद यही कहा जा सकता है कि मिथक हमारे मन के भावों को दूसरों तक संप्रेषित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। आज के जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करने के लिए मिथक सशक्त माध्यम बनते हैं। मिथक वह होते हैं जो आम से खास हों। आज भी अगर कोई व्यक्ति अपने परिवार से धोखा करे तो यह कहा जाता है कि घर का भेदी लंका दाए, यह इसलिए कहा जाता है, क्योंकि विभीषण अपने भाई रावण का साथ छोड़कर श्रीराम के साथ मिल गए थे, यह भी एक प्रकार का मिथक है और आज भी यह मिथक प्रयोग होता है। यह बात हम अच्छी तरह से जानते हैं कि समय अपनी चाल चलता है समय को बांधा नहीं जा सकता, इसी प्रकार मिथक भी समय के अनुसार ही चलते हैं जैसी परिस्थिति हो उस परिस्थिति के अनुसार ही मिथकों का प्रयोग किया जाता है। मिथक साहित्य के माध्यम से ही हम तक संप्रेषित हो पाते हैं। बहुत सारे

साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मिथकों के बहुत रूपों का वर्णन किया है, लेकिन दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में मिथकों के तीन रूपों धार्मिक एवं प्राकृतिक, प्रतीकात्मक और सामाजिक मिथकों का ही प्रयोग किया है।

इस काव्य नाटक में जो धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक प्रयोग किए गए हैं, इसमें प्रकृति को धर्म की संज्ञा प्रदान की गई है और प्रकृति को स्त्री के सन्दर्भ के रूप में भी प्रयोग किया गया है। मनुष्य का जब इस धरती पर प्रवेश हुआ तभी से ही मिथकों का उद्भव हुआ है। मिथकों का सर्वप्रथम रूप धार्मिक एवं प्राकृतिक ही था, क्योंकि सबसे पहले इस प्रकृति की सृष्टि हुई फिर लोगों को एकता में बांधने के लिए धर्म का निर्माण हुआ तो इसका अर्थ यह ही हुआ कि मिथकों का प्रथम रूप धार्मिक एवं प्राकृतिक ही था। प्राकृतिक वस्तुओं को मनुष्य ने धर्म की उपाधि इस लिए प्रदान की क्योंकि जिस भी प्रकृति की किसी वस्तु से मनुष्य का हित्त होता था मनुष्य उस प्रकृति की वस्तु को धर्म के समान दर्जा दे देता था। इस काव्य नाटक में अग्नि को अग्नि देवता के रूप में और पृथ्वी को माता का दर्जा दिया गया है। आज भी पीपल, तुलसी आदि को पूजनीय माना जाता है। घर में तुलसी का पौधा हो तो लोग उसे पवित्रता का प्रतीक मानकर उसकी पूजा करते हैं। सूर्य को लोग जल अर्पित करते हैं, क्योंकि लोगों का मानना है कि यह जल उनके पूर्वजों तक पहुंचता है, इस लिए सूर्य को सूर्य देवता कहा जाता है। इस प्रकार यह भी एक प्रकार का मिथक ही हुआ।

मनुष्य ने जिस भी अपने किसी कार्य का श्रीगणेश किया, उस कार्य की नींव धर्म और प्रकृति के आधार पर ही रखी। मिथक हमारे धर्म का ज्ञान कराने में बहुत सहायिक सिद्ध हुए हैं। आज हम बहुत सारे धार्मिक त्योहार मनाते हैं, जैसे दिवाली, दशहरा, होली, लोहड़ी आदि इस सभी त्योहारों को मनाने के पीछे मिथक ही विद्यमान है। इस काव्य-नाटक में अग्नि को शुद्धता और साक्षी का प्रतीक मानते हुए देवता की संज्ञा प्रदान की गई है। इस दुनिया में माँ को भगवान का दूसरा रूप माना जाता है, इस काव्य-नाटक में पृथ्वी को माँ के समान माना गया है। इस काव्य नाटक में प्राकृतिक वस्तुओं को स्त्री के सन्दर्भ के रूप में भी प्रयोग किया गया है। इस काव्य-नाटक में जो स्त्री के सन्दर्भ में प्राकृतिक मिथक प्रयोग हुए हैं, वे हैं- समुद्र, अग्नि, चंद्रमा, महामेघ, पृथ्वी। इन प्राकृतिक मिथकों के माध्यम से एक स्त्री की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है।

प्रतीकात्मक मिथकों का प्रयोग दिविक रमेश कृत काव्य नाटक में हुआ है। मिथक नवीन नहीं बल्कि अति प्राचीन हैं। मिथक और प्रतीक का आपसी रिश्ता बहुत गहरा है। मिथकों में प्रतीक बहुत गिनती में मिलते हैं। प्रतीकों के माध्यम से ही मिथक उद्धेलित हो पाते हैं। हम जब भी आज के सन्दर्भ में प्राचीन मिथकों का प्रयोग करते हैं, हम उन मिथकों को प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। प्राचीन मिथकीय पात्रों को

आज के पात्रों के प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हुए कथा को सम्पूर्ण किया जाता है। ऐसा करने से प्राचीन मिथकीय पात्र नवीन जीवन ग्रहण करते हैं। कोई भी लेखक हो, वह अपनी रचना को मज़बूत आधारशीला देने के लिए प्राचीन मिथकों को प्रतीकों के रूप में अवश्य प्रयोग करता है। प्रतीकों के माध्यम से मिथकों को नया अर्थ मिलता है, अगर मिथक के प्रतीक नया अर्थ ग्रहण न करें तो उनका महत्व गौण हो जाता है।

मिथक और प्रतीक का आपस में चोली-दामन जैसा साथ होता है। कोई भी रचना को ले लो, उसमें मिथक प्रतीक के रूप में ही प्रस्तुत हुए होते हैं। मिथक कथा प्रधान होते हैं और कथा प्रतीकों के माध्यम से ही अभिव्यक्ति पाती है। प्रतीक किसी एक रूप में ही प्रयोग नहीं होते। हम जब भी मिथक का प्रयोग प्रतीक के रूप में करते हैं तो वह रूप स्थिति के अनुसार प्रयोग होता है, जैसी स्थिति होती है, उस स्थिति के अनुसार ही प्रतीक कथा में प्रकट होते हैं। प्रतीक मिथकों की ताकत को बढ़ाते हैं। मिथक और प्रतीक का रिश्ता आत्मा और शरीर जैसा होता है, जैसे आत्मा के बिना शरीर मिट्टी का पुतला है, ठीक वैसे ही प्रतीक मिथक के बिना अधूरे हैं।

मिथक और प्रतीक एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। मिथक को कपोल कथा कहा जाता है, लेकिन जब कथा को यथार्थता प्रदान करनी होती है तो प्रतीक प्रयोग में आते हैं। मिथकों को प्रतीकों के रूप में प्रयोग करके हम अपनी बात को बल प्रदान करते हैं। जब हम प्रतीकों का प्रयोग करते हैं तो ऐसा करने से भाषा समृद्ध बनती है। प्रतीकों के माध्यम से मिथकों को आकार मिलता है। बहुत सारी मिथकीय कथाएँ ही प्रतीकों के माध्यम से ही सौंदर्य का रूप ग्रहण करती हैं। इस प्रकार मिथक और प्रतीक को एक-दूसरे से अलग करने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। प्रतीकों के माध्यम से ही मिथकों का मूल्य बढ़ जाता है, अगर मिथक न हो तो फिर प्रतीकों का प्रयोग क्यों होगा। जिस प्रकार एक वस्तु का मूल्य उसकी सुंदरता से होता है, ठीक उसी प्रकार मिथकों का मूल्य प्रतीकों से होता है।

प्रतीक का मतलब संकेत अर्थात जो हमें किसी चीज़ से ज्ञात कराने के लिए संकेत के रूप में कार्य करते हैं। प्रतीकों के अनेक उदाहरण रामायण, महाभारत, वेदों आदि में मिलते हैं। राम को अच्छाई, सरस्वती को ज्ञान के प्रतीक के रूप में संज्ञा प्रदान की गई है। इस काव्य नाटक में दिविक जी ने अस्तित्व सम्बन्धी और प्रकृति सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग किया है। अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीक का अर्थ है, जो हमें हमारे व्यक्तित्व के बारे में ज्ञात कराए, उसे अस्तित्व सम्बन्धी प्रतीक कहा जाता है। इस काव्य-नाटक में सन्नाटा, सूचना प्रतीकात्मक मिथक हैं। यह मिथक एक स्त्री के अस्तित्व को उजागर करते हैं। सन्नाटा, सूचना को स्त्री के प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हुए यह बताया गया है कि एक पुरुष के समक्ष और समाज में स्त्री का क्या अस्तित्व है। प्रकृति सम्बन्धी जो प्रतीकात्मक मिथक हैं, वह हैं- अग्नि, चंद्रमा, महामेघ, पत्थर

प्राकृतिक मिथक प्रतीक के रूप में प्रयोग किए गए हैं। जैसे अग्नि को साक्षी का, चंद्रमा को शीतलता का, महामेघ को उदासी का और पत्थर को भावनाओं से रहत व्यक्ति का प्रतीक माना गया है। दिविक रमेश ने अपने इस काव्य नाटक में प्रतीकों के माध्यम से आज की औरत की स्थिति को प्रस्तुत किया है। प्रतीकों की हमारी ज़िंदगी में अहम् भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। जब भी हम ने किसी व्यक्ति को कुछ समझाना होता है तो हम प्रतीकों का सहारा लेते हैं।

दिविक रमेश के काव्य नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में धार्मिक एवं प्राकृतिक, प्रतीकात्मक और सामाजिक मिथकों के माध्यम से आज की स्त्री की स्थिति को ब्यान किया गया है। स्त्री समाज का ही अंग है। इसलिए स्त्री की स्थिति को हमारे समक्ष प्रस्तुत करने के लिए ही सामाजिक मिथकों का प्रयोग किया गया है। समाज एक इकाई जैसा होता है, जिसमें सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर रहते हैं। समाज के केंद्र में मनुष्य आता है, अगर मनुष्य न हो तो समाज का विस्तार नहीं हो सकता, इसलिए समाज के निर्माण के लिए व्यक्तियों का होना बहुत जरूरी है। समाज और वक्त हमेशा एक साथ चलते हैं, जैसा वक्त हो, वैसा ही समाज होता है। हम जिस भी क्षेत्र में रहते हैं, वहाँ का जैसा वातावरण हो, उस वातावरण का प्रभाव हम पर अवश्य ही पड़ता है। समाज का निर्माण कब और कैसे हुआ, इससे सम्बन्धित बहुत सारे मिथक हमारे साहित्य में मिलते हैं। धार्मिक एवं प्राकृतिक मिथक और प्रतीकात्मक मिथक में से सामाजिक मिथक अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मिथकीय घटनाएँ समाज में घटित होती हैं, अगर समाज न हों तो मिथकों का भी अस्तित्व नहीं होगा, इसलिए कहा जाता है कि मिथकों की जन्म भूमि समाज है।

मिथकों का जितना अधिक महत्व सामाजिक क्षेत्र में होता है अन्य किसी क्षेत्र में नहीं होता। इस प्रकार मिथकों को समाज से अलग करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह बात हम भली-भांति जानते हैं कि मिथक सामूहिक हैं अर्थात् मिथकों की सरंचना में किसी एक व्यक्ति का योगदान नहीं होता बल्कि बहुत सारे व्यक्ति शामिल होते हैं। एक साहित्यकार भी समाज में ही आता है, प्रत्येक साहित्यकार जिस क्षेत्र में रहता है, वहाँ का जैसा महौल हो, उस महौल का प्रभाव उस साहित्यकार की लेखनी पर अवश्य ही पड़ता है। समाज के लोगों की मिथकों के प्रति जो गहरी आस्था होती है, वही आस्था मिथकों का आधार स्तभ होती है। मिथक समाज से उपजते हैं। समाज में तरह-तरह के लोग रहते हैं, सभी का रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाज अलग होते हैं। मिथकों के माध्यम से हमें अपने देश की संस्कृति को जानने में सहायता मिलती है। किसी भी देश का इतिहास हो, प्रत्येक देश के इतिहास में मिथकों का प्रयोग अवश्य हुआ है।

मिथक लोगों की भावनाओं को भी जीवित रखते हैं। ऐसा नहीं होता कि मिथकों का सम्बन्ध सिर्फ प्राकृतिक घटनाओं से होता है और हमारे जीवन में यह नहीं सहायक होते, लेकिन यह बात सत्य है कि आज भी हम अपनी किसी भी समस्या के समाधान हेतु मिथकों का आश्रय लेते हैं। मिथकों का सेवन हमेशा नवीन सन्दर्भ में किया जाता है। मिथक और समाज का आपसी जो रिश्ता है, वह एक सिक्के जैसा है, जो कभी अलग नहीं हो सकता। मिथक अत्याधिक प्राचीन होने के बावजूद भी आज के आधुनिक जीवन में भी इनका नवोन्मेष हो रहा है, जो बड़े-बड़े महानगर हैं, उनमें भी मिथकों वर्चस्व स्थापित हैं। जैसा कि हमनें ऊपर पढ़ा है कि मिथक संस्कृति के वाहक हैं, ऐसा होने से मिथकों का अस्तित्व कभी शून्य नहीं हो सकता। मिथक अचानक उत्पन्न नहीं होते बल्कि इनके निर्माण में बहुत समय लग जाता है।

इस काव्य नाटक में सामाजिक मिथक इसलिए प्रयोग हुए हैं, क्योंकि सामाजिक मिथकों के माध्यम से एक औरत की स्थिति को हमारे समक्ष उद्घाटित किया गया है। आज औरत की क्या दशा है, इसका वर्णन इस काव्य-नाटक की मिथकीय पात्र सीता के माध्यम से किया गया है। यह बात हम अच्छी तरह से जानते हैं कि प्रत्येक युग में स्त्री की स्थिति एक समान नहीं रही बल्कि अलग-अलग रही है। हम कई बार तो स्त्री को इतना सम्मान देने लग जाते हैं कि उसको भगवान का दूसरा दर्जा दे देते हैं और फिर हम ही स्त्री के सम्मान को ठेस पहुंचाते हैं। समाज के लोग शुरू से ही लड़के-लड़की में जो विभाजक रेखा खींच देते हैं, उसी रेखा के कारण स्त्री को आज भी उतना सम्मान नहीं मिल रहा, जितना कि वह पाने का अधिकार रखती है। कहने को तो आज कहते हैं कि लड़का-लड़की समान हैं, लेकिन यह सब कहने की बातें हैं, सच्चाई तो कुछ और है। आज भी समाज के लोग एक स्त्री जो अपने अनुसार जीवन व्यतीत करती है, समाज के लोग उसे उपेक्षाकृत दृष्टि से देखते हैं। आज चाहे स्त्री की सुरक्षा के लिए बहुत सारे कानून बने हैं, फिर भी आज इतने कानून होने के बावजूद भी औरत के साथ जुल्म की कथाएँ बढ़ती जा रही हैं।

आज भी स्त्री-पुरुष की कार्य क्षमता में अंतर किया जाता है। आज भी बहुत सारे कार्य स्थल ऐसे हैं, यहाँ पर स्त्री को पुरुष के बराबर कार्य नहीं दिया जाता, वह इसलिए क्योंकि यह कहा जाता है कि स्त्री-पुरुष के मुकाबले कमजोर है, इसलिए उसे वैसा ही कार्य दिया जाता है, जिसमें कम क्षमता की आवश्यकता हो। आज हम देखते हैं कि स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष से आगे हैं, लेकिन हमारी सोच आज भी वहीं खड़ी है, यहाँ पहले थी। आज थोड़ा शिक्षा के कारण सोच बदली है, लेकिन उतनी नहीं जितना उसे बदलना चाहिए था। आज अगर कहें कि स्त्री देवी का रूप है तो यह भी एक प्रकार का मिथक ही हुआ। पुरुष-स्त्री को खिलौना समझकर उसके साथ खेलता है। पुरुष की सोच में बदलाव आया है, लेकिन उतना नहीं, आज भी

पुरुष में पुरुष होने की अहं भावना विद्यमान है। पहले औरत को अपने पति की देह के साथ ही जला दिया जाता था, लेकिन आज औरत इस प्रथा का विरोध करती है।

एक औरत के बिना वंश आगे नहीं बढ़ सकता। दिविक रमेश ने अपने काव्य नाटक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी और प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथकों का प्रयोग किया है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथकों में दिविक जी ने यह बताया है कि स्त्री-पुरुष का आपसी रिश्ता ही एक परिवार के लिए नींव का कार्य करता है। पहले और आज के समय के स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में बदलाव आया है, पहले स्त्री अपने पति के चरणों की दासी बनकर रहती थी, लेकिन आज ऐसा नहीं है, आज स्त्री-पुरुष के समान रहना चाहती है दासी बनकर नहीं। आज भी हम सुनते हैं कि पुरुष-स्त्री को अपनी हवस का शिकार बनाता है, आज भी बहुत सारे बलात्कार के केस होते हैं। इस काव्य-नाटक में जों स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सामाजिक मिथक प्रयोग हुए हैं, वह स्त्री के अस्तित्व सम्बन्धी, स्त्री की महत्ता सम्बन्धी, स्त्री-पुरुष के भेद सम्बन्धी प्रयोग हुए हैं। आज की स्त्री के अस्तित्व को सीता के सामाजिक मिथक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। आज हमारे जीवन में स्त्री की क्या महत्ता है, इसको इस काव्य-नाटक में लक्ष्मण के सामाजिक मिथक के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

आज हमारे समाज में जो लिंग-असमानता है, उसे इस काव्य-नाटक के मिथकीय पात्र सीता और राम के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य-नाटक में जो प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक प्रयोग हुए हैं, वह हैं- समुद्र, पृथ्वी और अग्नि। यह प्राकृतिक मिथक औरत के लिए प्रयोग हुए हैं। समुद्र के मिथक के माध्यम से औरत के अस्तित्व को उजागर किया गया है, पृथ्वी के मिथक के माध्यम से पृथ्वी और औरत के आपसी सम्बन्ध को उजागर किया गया है और अग्नि के मिथक के माध्यम से औरत के सम्मान को प्रदर्शित किया गया है। चंद्रमा और सूर्य जैसे सामाजिक मिथक आज भी प्रयोग किए जाते हैं। प्रकृति सम्बन्धी सामाजिक मिथक आज भी श्रेष्ठ हैं, क्योंकि आज भी इन मिथकों का प्रयोग मनुष्य अपने भले के लिए करता है।

अंत: यही कहा जा सकता है कि धार्मिक एवं प्राकृतिक, प्रतीकात्मक और सामाजिक मिथक हमारे जीवन में अति आवश्यक हैं। इन मिथकों का आज भी हमारी ज़िंदगी के साथ अटूट रिश्ता है। यह मिथक कभी भी समाप्त नहीं हो सकते, क्योंकि इन मिथकों के साथ हमारे विश्वास जुड़े हैं। भले ही मिथकों का कोई समय निर्धारित नहीं होता फिर भी मिथकों का महत्व गौण नहीं, इनका उतना ही महत्व है जितना कि किसी विज्ञानी द्वारा खोजे गए किसी तर्क का होता है।

साक्षात्कार

'खण्ड-खण्ड अग्नि' काव्य नाटक पर काम करके मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने जैसे-जैसे इस काव्य नाटक को पढ़ा मेरे मन में कई शंकाएँ उत्पन्न हुई। मैंने अपनी इन शंकाओं के निराकरण के लिए अनेक पुस्तकों का आश्रय लिया, लेकिन फिर भी मेरा मन सतुष्ट नहीं हो पाया। फिर एक दिन मैंने अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए 'खण्ड-खण्ड अग्नि' के लेखक दिविक रमेश को मिलने का निर्णय किया, लेकिन परिस्थिति वश मैं उनसे नहीं मिल पाई। आज आधुनिकता का समय है तो इसी का लाभ उठाते हुए मैंने अपने लेखक को ई-मेल के माध्यम से मिलने का प्रयास किया और मेरा यह प्रयास सफल हुआ। मैंने एक प्रश्न तालिका बनाई जिसमें मैंने अपनी शंकाओं सम्बन्धी प्रश्नों का निर्माण किया। उसके पश्चात मैंने अपने लेखक को उन प्रश्नों की ई-मेल भेज दी। कुछ ही दिनों के बाद मुझे अपने उत्तर मिल गए। मैं अपने लेखक का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने मेरे लिए अपना बहुमूल्य समय निकाला। इन प्रश्नों के उत्तरों के द्वारा ही मैं अपना शोध-कार्य सम्पन्न कर पाई हूँ।

1. **बलजिंदर: सर, आप की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में बात करने से पहले आप अपने जन्म, माता-पिता और पढ़ाई के बारे में बताएं?**

दिविक रमेश: हरियाणा की सीमा पर दिल्ली के एक गाँव किराड़ी में मेरा जन्म हुआ। 28 अगस्त, 1946 को जो प्रमाण-पत्रों में 6 फरवरी, 1946 है। जहाँ तक मैं याद कर सकता हूँ, तब दिल्ली का अर्थ मेरा गाँव न होकर करौल बाग (देवनगर) होता था, जहाँ मेरा ननिहाल था। मेरे होश में, दिल्ली ने बहुत दिनों तक अपनी काया नहीं फैलायी थी। 5वीं कक्षा तक गाँव के स्कूल में पढ़ने के बाद मुझे आगे की पढ़ाई के लिए मेरे ननिहाल भेज दिया गया। गाँव के प्राइमरी स्कूल के कुछ अच्छे-बुरे अनुभव मेरे पास थे। शारीरिक दृष्टि से मैं कमजोर था। शायद इसी का फ़ायदा उठाकर लड़के मुझे चिढ़ाते रहते। मेरा वास्तविक नाम रमेश चंद शर्मा है।

2. **बलजिंदर: आप का वास्तविक नाम तो रमेश चंद शर्मा है, फिर आप रमेश चंद शर्मा से दिविक रमेश कैसे बने?**

दिविक रमेश: दिविक का मेरे संदर्भ में आशय है- दिल्ली विश्वविद्यालयी कवि। पहले मैं रमेश शर्मा के नाम से लिखता था। दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े उस समय के युवा कवियों का एक कविता संकलन प्रकाशित हुआ था- दिविक अर्थात दिल्ली विश्वविद्यालयी कविता। इसमें मैं रमेश शर्मा के नाम से था। उन्हीं दिनों लगा कि रमेश शर्मा बहुत ही आम नाम है। इस नाम से एक अन्य कवि भी शायद लिख रहा था जो मुझसे वरिष्ठ था। कुछ मित्रों की सलाह मानते हुए उपनाम के रूप में दिविक अपना लिया। शुरू में कभी रमेश दिविक तो कभी दिविक रमेश चला लेकिन बाद में दिविक रमेश ही स्थायी हो गया। दूसरा दिविक निकला

तो उसमें मेरी कविताएं दिविक रमेश के नाम से छपीं। इसका मैं एक संपादक भी था। धर्मयुग ने मेरे नाम को बहौ प्रसिद्ध किया था। संक्षेप में बस इतना ही।

3. बलजिंदर: आप साहित्य की तरफ क्यों और कैसे आकर्षित हुए?

दिविक रमेश: मेरे नाना साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। उनका अपना एक छोटा सा पुस्तकालय था जिसमें गद्य-पद्य दोनों प्रकार की पुस्तकें थीं। पुस्तकालय आदि में जाने का भी उन्हें शौक था। कई साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं के वे सक्रिय कार्यकर्ता/पदाधिकारी भी थे। उनके संसर्ग ने मुझे भी साहित्य और पुस्तकों की ओर मोड़ा। पिता जी का कला-प्रेम भी कहीं न कहीं संस्कारों में पड़ा ही था। असल में वे हरियाणवी लोक गायक थे और स्वांग आदि में लोक नर्तक भी। हर इतवार को अपने और पड़ोसियों के घर आने वाले अखबारों में छपी बाल-रचनाएँ जरूर पढ़ता। आकाशवाणी से प्रसारित बाल कार्यक्रम भी जरूर सुनता। प्रारम्भ में शायद यही माहौल उत्तरदायी रहा उस रचना के लिए जो न जाने मैं कब और कैसे लिख बैठा था। अब मुझे मात्र इतना याद है कि वह रचना एक कहानी थी। तब मैं 13-14 वर्ष का रहा हूंगा। प्रारम्भ में, जहाँ तक कविता का सवाल है, मुझे मेरे मित्र, घर-परिवार के सदस्य, गाँव में स्थित गाय आदि लिखने को प्रेरित करते थे। वे ही मेरे विषय थे। वे रचनाएँ उन्हें सुनाकर मुझे बहुत अच्छा लगता था। जब मैं बड़ा हुआ तब भी लिखता रहा। बड़ों के लिए लिखी गई मेरी पहली ठीक-ठाक कविता 'एक सूत्र' कोलकत्ता की एक पत्रिका 'मणिमय' में 1970 में प्रकाशित हुई थी। मेरी साहित्यिक सक्रियता प्राम्भ में, दिविक, मुटिठयों में बंद आकार और दूसरा दिविक आदि संकलनों के माध्यम से काफ़ी बनी हुई थी। दिविक को छोड़ शेष दो का तो मैं सम्पादक भी था। 'मुठिठयों में बंद आकार' तक मैं अपने मूल नाम 'रमेश शर्मा' के नाम से लिखता-छपता था। इसी कारण मेरा नया नामकरण हुआ दिविक रमेश जो कुछ दिनों तक रमेश दिविक-दिविक रमेश के दवन्द में फँसा रहा। शुरू-शुरू में मुझे अपना नाम अटपटा लगता था। 'दिविक' शब्द का निर्माण दिल्ली विश्वविद्यालयी कवि से हुआ था।

4. बलजिंदर: आपको किस रचना से प्रसिद्धि मिली?

दिविक रमेश: प्रसिद्धि तो मुझे अपने पहले कविता संग्रह 'रास्ते के बीच' से ही मिल गई थी जिसके लिए कविताओं का चयन कवि शमशेर बहादुर सिंह ने किया था। इसी पर (मेरे दूसरे कविता संग्रह 'खुली आँखों में आकाश' सहित) उस समय का बहुत बड़ा पुरस्कार 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' मिला था। कवि केदारनाथ अग्रवाल ने इस पर लगभग 21 पृष्ठों का समीक्षात्मक लेख भी लिखा था जो उनकी पुस्तक

'विवेक विवेचन' में संकलित है। 'खण्ड-खण्ड अग्नि (काव्य नाटक) से भी मुझे काफी प्रसिद्धि मिली। यह कृति विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित है और इस पर प्रतिष्ठित गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार भी मिला। मुझे खुशी है कि मेरी कितनी ही कविताएं कितने ही पाठकों की जुबान पर हैं जिनमें से कुछ हैं- माँ, चिड़िया का ब्याह, पंख, गेहूं घर आया है, माँ गाँव में है, दूसरे पते पर लिखने का दर्द, भूत आदि। कविताएं भी पाठ्यक्रमों में हैं। विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि मेरे बालसाहित्य ने भी मुझे बहुत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठा दिलाई है।

5. बलजिंदर: काव्य-नाटक लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

दिविक रमेश: वाल्मीकि रामायण से। युद्ध हो चुका है। लंका से मुक्त सीता को राम स्वीकार करने को तत्पर नहीं हैं। ऐसे में सीता जानना चाहती है कि युद्ध के बाद सीता को स्वीकार ही नहीं करना था तो उसके लिए वह कष्टदायी युद्ध ही क्यों किया गया? बातचीत (या तर्क-वितर्क) में राम का एक ऐसा कथन भी था जिसने उस समय की सीता को भी अवश्य हिला दिया होगा, आज का व्यक्ति तो हिलेगा ही हिलेगा।

कथन इस प्रकार था-

विदितश्वास्तु भंद्र ते तोअयं रणपरिश्रम: ।

सुतीर्ण: सुह्रदां वीर्यान्न त्वदर्थ मया कृत: ।।

(युद्ध काण्ड /115/15)

रक्षता तु मया वृतमपवान्द च सर्वत: ।

प्रख्यातस्यात्मवंशस्य नयङ्ग च परिमार्जना।।

(युद्ध काण्ड/115/16)

अर्थात्

'तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैंने जो युद्ध का परिश्रम उठाया है तथा इन मित्रों के पराक्रम से जो इसमें विजय पायी है, यह सब तुम्हें पाने के लिए नहीं किया गया है।

सदाचार की रक्षा, सब ओर फैले हुए अपवाद का निवारण तथा अपने सुविख्यात वंश पर लगे हुए कलंक का परिमार्जन करने के लिए ही यह सब मैंने किया है। वाल्मीकि रामायण के युद्ध काण्ड में वर्णित उक्त कथन से जब पहले पहल मेरा सामना हुआ तो पत्नी सीता के संदर्भ में राम के वंशवाद या कुलवाद से मैं भी हिल गया। मैंने रामचरित मानस सहित राम सम्बन्धी अनेकानेक ग्रन्थों एवं कृतियों में इस प्रसंग-विशेष को खोजा, पर इस प्रसंग की भयावहता के दर्शन कहीं नहीं हुए। कम से कम मुझे कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला। मिथ या पुरा-कथा या इस प्रकार के प्रसंगों को केन्द्र में रखकर लिखने के प्रति मैं विशेष उत्साहित भी कभी नहीं रहा हालांकि कई बार ललकताजरूर रहा हूँ। यूं भी, आज के संदर्भ में, मेरी मान्यता है कि मिथ या पुरा-कथा कथ्य या उद्देश्य की अपेक्षा शिल्प अर्थात् क्राफ्ट या अभिव्यक्ति-उपादान ही अधिक हो सकता है- बल्कि वही होता है। कम से कम श्रेष्ठ कृतियों में। खैर, यह प्रसंग मुझसे निरंतर टकराता रहा और अपार बेचैनी पैदा करता रहा। कुछ मित्रों से भी चर्चा हुई। चुनौती यह भी थी कि इस घिसे-पिटे प्रसंग में नया क्या लाऊँ। लगभग दो वर्षों तक जूझता रहा। और एक दिन अचानक इस काव्य नाटक का सूजन प्रारम्भ हो गया।

6. बलजिंदर: आपका जो काव्य-नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' है, आप खण्ड-खण्ड अग्नि का अर्थ स्पष्ट करें?

दिविक रमेश: उक्त प्रसंग में अग्नि की अहम भूमिका है। अग्नि सीता की परीक्षा लेता है। वह सीता का उज्ज्वल पक्ष बखूबी जानता है लेकिन राजा के सामने परीक्षा लेने को विवश है। अपनी विवशता पर, निर्णय देने बाद, वह अपने को खण्ड-खण्ड अर्थात खण्डित हुआ पाता है। जो सही है उसे भी प्रमाण देने की विवशता क्यों? उसे भी प्रमाणित करने की विवशता क्यों?

7. बलजिंदर: मिथक को काव्य-नाटक 'खण्ड-खण्ड अग्नि' में लेने के पीछे आपका क्या उद्देश्य है?

दिविक रमेश: मैं मानता हूँ कि मिथ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होता है। वह स्वयं में कथ्य नहीं होता। खण्ड-खण्ड अग्नि की वस्तु मिथक प्रेरित है लेकिन वह प्रसंग विशेष का वर्णन मात्र नहीं है। वस्तुत: इस कृति की मूल वस्तु आज के स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के सरोकारों से और अन्तत: स्त्री के अपने होने के प्रति सजगता से अधिक जुड़ी है।

8. बलजिंदर: आपने अपने इस काव्य-नाटक में अदृश्य पात्रों का प्रयोग किया है इस पर प्रकाश डालें?

दिविक रमेश: मेरी निगाह में (अब तो इस कृति के प्रशंसकों और समीक्षों की निगाह में भी) ये पात्र इस कृति की विशेष उपलब्धि है। मैंने ऊपर संकेत दिया कि यह प्रसंग बहुत ही घिसापिटा होने के कारण मुझे कुछ नया करने की चुनौती दे रहा था। दूसरे मैं मिथ की अपनी स्वायत्ता और सौन्द्रर्य को भी भंग करने का पक्षधर नहीं रहा हूँ। उस समय की मर्यादा को देखते हुए मैं मिथकीय पात्रों के साथ मनमानी भी नहीं करना चाहता था। लेकिन मुझे जो कहना था उसे कैसे कहा जाए कि मर्यादा की भी रक्षा हो जाए और मिथ के सौन्द्रर्य की भी। सोचता रहा। एक दिन मुझे खास ट्रीटमेंट हाथ लग गया। न सही व्यक्ति, न सही लोग, सृष्टि में कुछ और भी तो ho सकता है जो उन चीजों को भी अभिव्यक्त कर सकता है जिनका एक समय-स्थान में अभिव्यक्त होना अविश्वासनीय लग सकता है। मुझे पात्र मिले सन्नाटा, विश्वास, सूचना, उद्घोषणा, संदेह आदि। यह मेरे लिए उपलब्धि थी और मार्ग प्रशस्ति भी। बस अब एक ही समस्या थी कि ये पात्र छायावादी मानवीकरण से बच सकें और मुझे विश्वास है कि उनमें से हरेक ने उससे बचने की कोशिश की है और बच भी सके हैं।

9. बलजिंदर: आपके काव्य-नाटक का मुख्य उद्देश्य क्या है, इससे समाज को क्या प्रेरणा मिलेगी?

दिविक रमेश: मेरे सामने प्रश्न थे कि पत्नी के रूप में स्त्री क्या निरी वस्तु है? क्या उसकी रक्षा केवल कुल या समाज की मर्यादा की रक्षा के भय मात्र के लिए की जाए? पत्नी के प्रति प्रेम का कोई मूल्य नहीं है? क्या पुरुष दूसरों के संदर्भ में कुछ कहे और अपने प्रसंग में कुछ? ऐसे ही कुछ प्रश्नों ने इस कृति का सृजन कराया है। आज के पितृसत्तामक्ता के मारे समाज में भी हम इन प्रश्नों से जूझ रहे हैं। आशा तो यही है कि यह कृति अपने ढंग से कुछ न कुछ प्रेरणा तो देने में समर्थ होगी ही।

10. बलजिंदर: आपने इस काव्य-नाटक में स्त्री को ही केन्द्र बिन्दु में क्यों रखा?

दिविक रमेश: जी। यह प्रसंग और इस कृति के रचे जाने की प्रेरणा के मूल में ही सीता के रूप में स्त्री थी जिसे पग-पग पर पितृसत्तात्मक सोच के चलते, अपने होने की राह में, अपमान के घूंट भरने पड़े।

11. बलजिंदर: आप अपने इस काव्य-नाटक के द्वारा समाज का नारी के प्रति जो दृष्टिकोण है उसको कैसे बदलेगें?

दिविक रमेश: मैंने रचनात्मक कोशिश की है। अब इस कृति को पसंद करने और सार्थक मानने वाले पाठकों पर निर्भर करता है कि वे इस में आए दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार करें। शायद अपेक्षित सफलता मिले। बता दूँ कि इस कृति के अनेक भाषाओं जैसे मराठी, कन्नड, गुजराती, अँग्रेजी में अनुवाद हो चुके हैं जिससे इसकी स्वीकृति का पता चलता है। संस्कृत में अनुवाद हो रहा है। आशा है कि अन्य भाषाओं में भी होगा।

12. बलजिंदर: आपको साहित्य के क्षेत्र में जो पुरस्कार मिलें हैं, आप कैसा अनुभव कर रहें हैं?

दिविक रमेश: पुरस्कार का मिलना निश्चित रूप से अच्छा अनुभव कराता है। आगे के सृजन के लिए प्रेरित भी करता है। यह अलग बात है कि आज पुरस्कारों के क्षेत्र में भी कभी-कभी गंदी राजनीति घुसी नजर आती है। इससे पुरस्कारों के प्रति आम लोगों में अविश्वसनीयता का भाव भी आया है। यूं कोई भी ठीकठाक रचनाकार पुरस्कारों को ध्यान में रख कर नहीं लिखता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

➢ आधार-ग्रंथ

1 रमेश, दिविक, “खण्ड-खण्ड अग्नि”, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1994.

➢ सहायक-ग्रंथ

1. कुमार, राज, “नयी कविता के मिथक”, दिल्ली, अंकुर प्रकाशन, 1989.
2. कुमार, रश्मि, “नयी कविता के मिथक-काव्य”, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 2000.
3. गौतम, रमेश, “मिथकीय अवधारणा और यथार्थ”, दिल्ली, राधारानी प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1977.
4. जनमेजय, प्रेम (सं), “दिविक रमेश आलोचना की दहलीज पर”, दिल्ली, संजना प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2015.
5. जैन, अरविंद, “औरत अस्तित्व और अस्मिता”, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2001.
6. नगेन्द्र, “मिथक और साहित्य”, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1984.
7. पाण्डेय, माधुरी, “अज्ञेय के काव्य में मिथकीय संचेतना”, वाराणसी, संजय बुक सेंटर, प्रथम संस्करण- 1999.
8. पोद्दार, हनुमानप्रसाद, “श्रीरामचरितमानस”, गोरखपुर, गीता प्रेस, संवत, 2062.

9. प्रसाद, दिनेश्वर, "मिथक, प्रतीक और कविता", इलाहाबाद, जयभारति प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1999.

10. मिश्र, मनोरमा, "मिथकीय चेतना: समकालीन संदर्भ", नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, संस्करण- 2007.

11. मेघ, रमेश कुंतल, "मिथक और स्वप्न", कानपुर, ग्रथ्म रामबाग प्रकाशन, 1967

12. मेघ, रमेश कुंतल, "मिथक से आधुनिकता तक", नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 2008.

13. मेहता, नरेश, "संशय की एक रात", इलाहाबाद, पुस्तकालय प्रकाशन, 1971.

14. यादव, राजेन्द्र, "आदमी की निगाह में औरत", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 2006.

15. लोढ़ा, प्रो. कल्याणमल, "मिथक और भाषा", कलकत्ता, दिलीप कुमार मुखर्जी आशुतोष बिल्डिंग प्रकाशन, 1981.

16. वर्मा, सुरेन्द्र, "द्रौपदी", नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1972.

17. विद्यावाचस्पति, उषा पुरी, "भारतीय मिथकों में प्रतीकात्मकता", नई दिल्ली, सार्थक प्रकाशन, 1997.

18. विद्यावाचस्पति, उषा पुरी, "मिथक उद्भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य", नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1986.

19. विद्यावाचस्पति, उषा पुरी (सं), "मिथक साहित्य: विविध संदर्भ", दिल्ली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स प्रकाशन, 1984.

20. शंभुनाथ (सं), "मिथक और भाषा", कलकत्ता, दिलीप कुमार मुखर्जी आशुतोष बिल्डिंग प्रकाशन, 1981.

21. शंभुनाथ, "मिथक और आधुनिक कविता", नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1985.

22. शर्मा, शेखर, "समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक", दिल्ली, भावना प्रकाशन, 1988.

23. शर्मा, गजानन, "प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी", इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, 1971.

24. शर्मा, लक्ष्मीनारायण, "पुराख्यान और कविता", दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, 1980.

25. शर्मा, विष्णुप्रभा, "नरेश मेहता कामहाप्रस्थान", दिल्ली, आशा प्रकाशन, 1985.

26. शेख, सुरैय्या, "नाटककार भीष्म साहनी", कानपुर, विनय प्रकाशन, 2006.

27. श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, "मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य", वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1985.

28. श्रोत्रिय, प्रभाकर, "इला", दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 1989.

29. सिंह, पुष्पपाल, "काव्य मिथक", गाजियाबाद, अम्रित प्रकाशन, 1971.

30. स्वामी, मीनाक्षी, "अस्मिता की अग्नि परीक्षा", इंडिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2009.

➢ पत्रिकाएं

1 कृष्ण, ब्रजेश, "सब जानती है पृथ्वी", 'देश हरियाणा', अंक 2, वर्ष 1, नवम्बर-दिसम्बर, कुरुक्षेत्र, 2015.

2 जुल्का, नीलम, "मिथक और लोककथा", 'शब्द और शब्द', जनवरी, जालन्धर, 2005.

3 जैन, मनीषा, "मैं रोज़ अस्त होकर उदित होती हूँ", 'उम्मीद', अंक 5, जनवरी-मार्च, दिल्ली, 2015.

4 तिवारी, अरुण, "अस्तित्व में आने की कहानी", 'देश हरियाणा', अंक 3, वर्ष 2, जनवरी-फरवरी, कुरुक्षेत्र, 2016.

5 दिल, लाल सिंह, "अजूबा", 'देश हरियाणा', अंक 4, वर्ष 2, मार्च-अप्रैल, कुरुक्षेत्र, 2016.

6 द्विवेदी, सरिता, "भूमिका", 'सबके दावेदार', अंक 70, फरवरी, आजमगढ़, 2012.

7 पुष्पा, मैत्रेयी, "औरत का वजूद", 'इतिहासबोध', अप्रैल,इलाहाबाद, 2006.

8 बहबलपुर, सुशीला, "माँ रही है दर्शा तेरी ये दशा", 'देश हरियाणा', अंक 6, वर्ष 2, जुलाई-अगस्त, कुरुक्षेत्र, 2016.

9 भारती, स्वदेश, "भूकंप", 'आकार', अंक 12, अप्रैल-मई-जून, अहमदाबाद, 2003.

10 भार्गव, प्रीता, "मैं", 'अक्सर', अंक 23, जनवरी-मार्च, जयपुर, 2013.

11 रामानुजन, ए.के., "तीन सौ रामायण: पाँच उदाहरण और अनुवाद पर तीन विचार", 'वाक्', अंक 7, जनवरी-मार्च, नई दिल्ली, 2010.

12 सिंह, गुरदयाल, "मोल की औरत", 'वागर्थ', अंक 62, जुलाई, कलकत्ता, 2000.

13 सिन्हा, मीना, "इलाचन्द्र के उपन्यासों में नारी-चरित्र", 'शब्द सरोकार', अंक 14, वर्ष 4, जनवरी-मार्च, पटियाला, 2007.

14 होता, अरुण, "उत्तर महाभारत की कृष्णकथा: समकालीन संदर्भ", 'बनास जन', अंक 13, वर्ष 4, अक्तूबर, दिल्ली, 2015.

➢ शोध-प्रबंध

1. चौधरी, पारुल ठा., "सठोत्तर हिन्दी नाटकों का मिथकीय अनुशीलन", पीएच.डी. की उपाधि हेतु, गुजरात, विद्यापीठ की, 2012.
2. दीपमाला, कु॰, "मिथकीय चेतना के संदर्भ नरेश मेहता के साहित्य का अनुशीलन", डी. फिल की उपाधि हेतु, ऋषिकेश देहारादून, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, 2007.
3. द्विवेदी, श्रीमती ममता, "आधुनिक हिन्दी कविता में मिथकीय संयोजना", पी-एच.डी की उपाधि हेतु, उरई (जालौन), गांधी महाविद्यालय, 2006-07.
4. पी.अम्पिली, "हिन्दी के आधुनिक मिथकीय नाटक: एक अध्ययन", पीएच.डी. की उपाधि हेतु,कोट्टयम, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, 2003.
5. वी.आर, श्रीकला, "समकालीन हिन्दी नाटकों में मिथक और यथार्थ", पीएच.डी की उपाधि हेतु, कोची, कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइन्स एंड टेक्नालजी, 2009.
6. शर्मा, प्रो. कविता घनानंद, "हिन्दी के स्वातन्त्र्योत्तर मिथकीय खण्डकाव्य", पीएच.डी. की उपाधि हेतु, गुजरात, यूनिवर्सिटी, 1994.
7. सिंह, प्रदीप कुमार, "कुँवरनारायण की कविता: मिथक और यथार्थ", पीएच.डी. की उपाधि हेतु, नई दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2008.

➢ कोश (हिन्दी)

1 तिवारी, डॉ. भोलानाथ (सं), "बृहत पर्यायवाची कोश", इलाहाबाद, संशो: सं, 1962.
2 प्रसाद, कालिका (सं), "बृहत हिन्दी कोश", वाराणसी, तृ. सं; संवत 2020.
3 बुल्के, कामिल, "अँग्रेजी हिन्दी कोश", रांची.
4 रावत, हरिकृष्ण (सं), "समाजशास्त्र कोश", जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स, 1986.
5 वर्मा, धीरेन्द्र (सं), "हिन्दी साहित्य कोश", वाराणसी, ज्ञानमंडल प्रकाशन, 2015.
6 विद्यावाचस्पति, डॉ. उषापुरी, "भारतीय मिथक कोश", दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1991.
7 श्यामसुंदरदास (सं), "हिन्दी शब्दसागर", बी. ए. वाराणसी, चौथा भाग, 1928.

➢ कोश (अंग्रेजी)

1. Baldick, Chris, "Oxford concise dictionary of literary terms", New York, Oxford press, 1996.
2. Chicago, "The American college encyclopaedia dictionary", Ed, clearance Barnnart, 1958.
3. Macdonell, "Sanskrit English dictionary", Ed. Arthur A., 1893.